बरिस-3 अंक-11

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जनवरी-मार्च 2021

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह-सम्पादक	:	1. भावेश
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2.मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले । रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही । कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई ।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. संपादकीय
   - संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात - तारकेश्वर राय / 5
2. कनखी
   - रोटी नइखे त भात खाए के चाहीं - डॉ अनिल चौबे / 7
3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
   - नेह में छोह काहें - विवेक सिंह / 30
   - गांव प्रबंधन समिति - कनक किशोर / 42
   - बदनामी - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 43
   - कन्हेला के जिम्मेदारी - विद्या शंकर विद्यार्थी / 50
   - दादी के ममता - रामप्रसाद साह / 51
   - सोमरिया - बंदना श्रीवास्तव / 74
   - समय के फेर - संतोष कुमार बिश्कर्मा "सूर्य" / 77
4. कविता
   - द्रोपदी खण्डकाव्य से - पं. चंद्रशेखर मिश्र / 16
   - मनवा - बाबूराम सिंह कवि / 27
   - बेवफाई - राम प्रकाश तिवारी / 35
   - इहे भोजपुरी ह - सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय / 35
   - उर की अभिब्यञ्जना - पंडित संजीव शुक्ल 'सचिन' / 38
   - ठिठुरत गरीब - संतोष कुमार बिश्वकर्मा 'सूर्य' / 38
   - आश्चर्य - दिवाकर उपाध्याय / 39
   - मन करेला - नूरैन अंसारी / 39
   - कलम आ शासन - देवेन्द्र कुमार राय / 40
   - रसिक जी के मुक्तक - कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' / 40
   - बीर जोधा के लक्छन - अखिलेश्वर मिश्र / 54
   - कहिया जइब ऽ ? - अरविन्द श्रीवास्तव / 55
   - जरे दिल अरमान - हरेश्वर राय / 56
   - पिरितिया करेले गजबे कमाल - हरेश्वर राय / 56
   - हो बिवेकानन - सुशांत शर्मा / 56
   - शीतलहरी - अवधेश रजत / 69
   - बबुआ त्याग देहले घरवा - गणेश नाथ तिवारी / 69
   - धके कवनो गली आ जईत - राजू साहनी / 73
   - देश के भविष्य बाल मजदूरी में डूबल - नेहा त्रिपाठी / 73
5. गीत/ गजल
   - डॉ जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 8
   - चाँद गगन से झाँके जब - सुनील कुमार तंग / 17
   - केहू मन परल - सुनील कुमार तंग / 17
   - मनवाँ बहुत उदास बाटे - संजय मिश्र "संजय" / 18
   - छोड़ल जाला - संजय मिश्र "संजय" / 18
   - इहे औकात बा - संगीत सुभाष / 25
   - नजरिया क मारल - संगीत सुभाष / 25
   - रब के मंजूर बा - डॉ मधुबाला सिन्हा / 26
   - आखिर - दीपक सिंह / 26
   - पाँव पसार के बइठल कोरोना - कृष्णा बकसरी / 71
   - कोरोना काल - दीपक तिवारी / 71
   - रोटी - सुनील कुमार दुबे / 72
   - रउआ ना आईनी - अभियंता सौरभ भोजपुरिया/72
   - भूलि गइलन - कृष्ण मुरारी राय / 36
   - रउआ बड़ा मशहूर - कृष्ण मुरारी राय / 36
   - सजना के अँगना - कनक किशोर / 37
   - कइसे मनाई - दयाशंकर तिवारी / 37
   - अमरेन्द्र के चौपाई - अमरेन्द्र कुमार सिंह / 41
   - भोजपुरिया माटी - माया शर्मा / 41
   - आदमी अब कबर गइल बा - बिद्या शंकर बिद्यार्थी / 57
   - नाम के आदमी - बिद्या शंकर बिद्यार्थी / 57
   - महंगी के जमाना - डॉ मनोज कुमार सिंह / 57
6. पुरुखन के कोठार से
   - राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता / 9
   - स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 10
7. नाटक / एकांकी
   - परवरिस - विद्या शंकर विद्यार्थी / 46
8. आलेख/निबंध
   - भोजपुरिया संस्कृति के रोच तत्व-गारी - उदयनारायण सिंह / 19
   - भोजपुरी का प्रगतिशील.....-जयकान्त सिंह' / 21
   - बचपन बचावे बदे - भगवती प्रसाद द्विवेदी / 28
   - हँसी के बिखेर दS - आशा सिंह / 34
   - तिस क डड़ारी लांघत..... - तारकेश्वर राय /52
   - योग अउर योगी - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी /61
9. सबद कौतुक
   - चनन -जिन के असवार - दिनेश पाण्डेय / 11
10. पुस्तक समीक्षा
    - छुईमुई जिनगी के अजगुत.... - डॉ सुमन सिंह /64
    - जिनगी के हर रंग में ... - केशव मोहन पाण्डेय / 66
11. हंसी / ठिठोली - 63
12. सतमेझरा - 58,59-60,70,78,79,80,81

किसान अउर सरकार

किसान ओ के कहल जाला जे खेती के काम करेला। भोजपुरी भाषा में खेतिहर के नाम से भी सम्बोधित कइल जाला। शीत, घाम, बरखा बरदास क के बाकी दुनियाँ के लोगन खातिर खाद्यसामग्री उपजा के इहे लोग भूख के स्थाई समाधान करेला।

कुछ विकसित देशन में किसान शब्द के प्रयोग कवनो व्यवसायी भा पेशेवर खातिर कइल जाला, जेकरी लगे फसल उगावे खातिर जमीन होखे, कुछ लोग के ओ में काम करे खातिर भी राखे भा केहू के द्वारा खेत पर खेती के काम करवावत होखे।

आपन देश कृषि परधान देश ह । इहवाँ छोट चाहें बड़ खेतिहर होखसु, सबके किसान ही कहल जाला, जे खेती के काम करत होखे। सरकार नया कृषि कानून ले आइल बिया। ए नवका कृषि कानून के खिलाफ आंदोलन जारी बा। आंदोलन कर रहल किसान अउर सरकार के बीच जारी बातचीत में आइल रुकावट जल्दिए हट जाव, अइसन कवनो सूरत बनत नइखे लउकत। बिना कवनो पूर्व योजना के केंद्रीय गृहमंत्री के निमंत्रण पर उनका से भइल किसान नेतन के बातचीत के बाद सरकार द्वारा भेजल लिखित प्रस्ताव के भी किसान लोग ठुकरा दिहल आ साथे साथ अपना आंदोलन के अउर तेज करे के घोषणा क दिहल लोग।

हालाँकि असफल भारत बंद के बाद जब गृहमंत्री किसान नेता लोग के बोलहटा भेजलन त एक्के एह तरे के संकेत मानल गइल कि सरकार आंदोलनकर्ता किसानन की मांग के ले के गंभीर बिया अउर अब कवनो रास्ता जरूर निकल जाई। सरकार द्वारा भेजल प्रस्ताव में एमएसपी गारंटी करे के कानून बनावेवाली बात भले ना होखे, बाकी ए में एमएसपी जारी रखला के लिखित आश्वासन दिहल मंजूर कइल बा।

एकरी अलावा फसल के खरीदी करेवाला निजी व्यवसायी लोग के राज्य सरकार द्वारा रजिस्ट्रेशन कइल आ अनाजमंडी से बाहर होखेवाली खरीद-बिक्री पर भी टैक्स लगावे के अधिकार देवे के बात एह प्रस्ताव में कहल बा। किसान भाई लोगन के कइगो अउर चिन्ता फिकिर के दूर करे के कोशिश भी ए में लउकत बा। एकरा बावजूद, किसान आंदोलन से जुड़ल संगठन के नेतृत्व एक सुर से एक्के खारिज कर दिहल। ओ लोगन के कहनाम बा कि हरबार की बातचीत में सरकार की तरफ से एक्के बात कहल जाला कि ऊ किसान के सब आशंका अउर चिंता फिकिर के दूर कइल चाहत बिया, लेकिन सरकार के कवनो बात पर भरोसा नइखे कइल जा सकत। मामला साफ बा कि सरकार आ किसान लोग के बीच के दूरी कुछ जियादा बढ़ गइल बा । शायद इहे सबसे बड़ी वजह बा, जेकरा चलते लगातार बातचीत के बावजूद दुनू पक्ष के बीच कवनो सार्थक संवाद के सेतु ठीक ठाक बनत नइखे लउकत। सरकार आ किसान के बीच भरोसा के अइसन कमी भारतीय लोकतंत्र खातिर चिंता के बात बाटे, बाकी ई स्थिति कवनो एक-दू दिन में त आइल नइखे ?

किसान सरकार पर भरोसा राखे आ सरकार किसान पर। आपसी मुँह फुलवुवल से फायदा नइखे।

दुनो पक्ष के इयाद दिआवल जरूरी बा कि अन्त में फसिला बातचीत से होई, जोर आजमाइश से ना। बातचीत के माहौल बनावे के जिम्मेदारी निश्चित रूप से किसान लोग से जियादा सरकार के ऊपर बा।

भोजपुरी सिनेमा आ गायक कलाकार लोग के कइगो नया ओधी राजनीति की क्षेत्र में उतर चुकल बा आ राजनीति में यह लोग के मांग भी बढ़ि रहल बा। कुछ लोग सीधे चुनाव लड़ि के जीत भी गइल बा, देखादेखी अउर पंच भी तैयारी में लागल बा। एही सब के द्विअर्थक गीत गवनई से भोजपुरी भाषा की अचरा में अश्लीलता के दाग लागल आ इहे सब आगे आवेवाला समय में लोक संस्कृति के पहरुआ बनी, त हो चुकल भोजपुरी भाषा आ लोक संस्कृति के रक्षा। अबो त विचार कइल जा.....

रउरे

✍ (डॉ अनिल चौबे)

सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

आम आदमी के जिनिगी कबो एके नियन ना चले, चली त ऊ जिनिगी का। हर इन्सान के जिनिगी में सफलता-विफलता, मिलल-बिसरल, सुख-दुख के झोंका आवत-जात रहेला। कुछ लोग कटाह समय के डँट के मुकाबला करेला आ कुछ लोग बदहवासी में हथियार डाल देला। जिनिगी जीए के हुनर जेकरा आ गइल ऊ जीवन के सफर में कइसनो बिकट समय आवे ओ से घबराला ना। ओकर दिलेरी से सामना करे के कोशिश करेला। अइसन काल खण्ड में हमनी के जीए के मजबूर बानी जा जहँवा कोरोना महामारी आपन ताण्डव मचा के रखले बिया। एकरा चलते सामान्य जिनिगी हमनी से छीना गइल बा। एतने ना, ई महामारी करोड़ों लोगन के तंगहाली के गटर में बलजोरी धकेल देले बिया। केहू के जिनगी के दीया असमय बुता गइल त केहू के रोजी पर ताला लाग गइल। लोग दाना-दाना के मोहताज हो गइलन । स्वरोजगार करेवाला पर त कोरोना कहर बन के टूटल बा। समाज के कवनो अंग अछूता नइखे बाँचल । पढ़े - पढावे वालन के त भगवाने मालिक बाड़न। ऑनलाइन क्लास चल रहल बा बाकी ओकरा से कवनों खास फायदा नजर नइखे आवत। संसाधन के अभावो एकरा में कम रोड़ा नइखे अटकावत।

सरकारी फरमान में लॉकडाउन भले खतम हो गइल बा बाकी कोरोना ना, ई अबहियो बा आ केतना दिन रही केहूके पास एकर सटीक जवाब त नइखे । कोरोना के डर हमनी के चारु ओरि अदृश्य घेरा बना लेले बा, दिल बाड़ तूर के बहरी निकले बदे उकसावता त दिमाग के वर्जना हावी हो जाता। एस एम एस, मास्क, सेनेटाइजर, सोशल डिस्टेंसिग जइसन चीज रोजमर्रा के जिनिगी के हिस्सा बन गइल बा। इन्सानी जिनिगी के चहलपहल धीरे-धीरे लौटे के शुरू हो गइल बा बाकी असली आजादी कोरोना के लगे ही बाटे, कहाँ प्रगट हो जाइ केंहू नइखे जानत । जब चाहे, जेके चाहे पकड़ लेता। ऊँच नीच गरीब अमीर आम खास में कवनो भेद- भाव नइखे । बड़-बड़ धनकुबेर, बलशाली, बुद्धिमानो के बिल्कुल अलग-थलग करे कूबत एकरे लगे बा। अंतहीन जइसन लागत सुरंग के भीतर उम्मीद के रोशनी लउके लागल वैक्सीन के रूप में। उम्मीद बा निकट भविष्य में स्थिति सुधरी ।

19-20 के फरक खूब समझ में आ गइल बा पूरा मानव जाति के। सबक वाला साल रहल 2020 खूब सबक सिखवलस । अबले बीतल कुल्हि साल से अलग रहे ई 2020 । साँचो पूरा विश्व में उथल पुथल मचा के रख दिहलस। शायद केहू सपनो में ना सोचले होखी कि अइसन कवनो महामारी आई जेकरा चलते बंदिश के अम्बार लाग जाई। आम अदमी के जिनिगी में हेतना रोक-टोक शायदे केहू कबो देखले होई। बेहद नजदीकी रिश्ता में भी दूरी राखल मजबूरी भ गइल बा।

देश के राजधानी दिल्ली के सीमा पर नावा कृषि कानून के खिलाफ किसान धरना पर महीनन से बइठल बान । किसान आंदोलन के लम्बा खींचे अउरी और पसरे के दावा के बीच ,सरकार से कई दौर के बातचीत फेल हो चुकल बा । जल्द समाधान निकलो आ किसान अपना खेत मे चहुँपो इहे उम्मीद बा सरकार से।

कोरोना काल मे मनई के जिनिगी बदरंग होके रह गइल बा,संक्रमण के रफ्तार में भले कमी आइल बा लेकिन भीतरी से उल्लासे जइसे गायब हो गइल बा, तेकर सोत सुखा गइल होखे जइसे। रौनक नजर नइखे आवत केहरो, तबहूँ समय त रुकी ना, एकर पहिया त नाचते रही । आवे वाला तिमाही अपना धोकरी में ढेरमनी परब-तिहार भरले आ रहल बा बाकी एन्हनि बदरंग जीवन मे केतना रंग भर पइहनि ई त समय बताई।

दस्तावेज आ काम धाम में अंग्रेजी कैलेंडरे ब्यवहार में बा एमा कवनो दू राय नइखे। कवनो साल होला त 365 भा 366 दिन के बाकी बीतल साल हरकेहू के जिनिगी में अलग-अलग असर छोड़ जाला। केहू एक से दू हो जाला त केहू के सन्तान के रूप में परवरदिगार के रहमत देखे के मिलेला। केहू के रोजी रोजगार भेटाला त केहू के नोकरी से सदा के लिए छुटी मिल जाला। एहि तरह जिनिगी आपन किसिम किसिम के रूप देखावत रहेला । एगो जात साल हर केहू के जिनिगी में कुछ ना कुछ त प्रभाव डलबे करेला, अवरि कुछ ना त अनुभव आ उमिर त बढाइये देला।

विगत साल के अलविदा आ आवत साल के स्वागत खुशी अउरी उल्लास से करे के रिवाज ह हमनीके समाज मे एह उम्मीद से कि आवे वाला समय में दुख तकलीफ से निजात जरूर मिल जाई। नवका साल अपना साथे नया उम्मीद नावा लक्ष्य नाया सपना लेके आवेला । बधाई आ शुभकामना के साथे नवका ऊर्जा आ उत्साह से 2021 में साँच मन आ लग्न से अपना कर्म में जुट जाए के काम बा। मुकाम जरूर भेटाई।

एकरा बाद आवेला मकर संक्रान्ति के परब । एह परब के खासियत ह कि हर साल अधिकांशतः 14 जनवरी के जब सुरुज भगवान मकर

रेखा पर आवेलन तबे परेला । ई तिहार पूरे भारत में पोंगल, लोंहड़ी, लोहंडा, खिचड़ी आदि नाव से मनावल जाला। भोजपुरी इलाका में एह दिन नदी स्नान,

दान-पुन्न आ चूड़ा-दही, लाई, तिलान्न के भोग के लोकरिवाज ह। साँझी के नावा चाउर मटर के छेमी डाल के घीव के साथे खिचड़ी बनेला घरे घरे । ई कुल चीज शरीर के गर्मी देला जवन एह समय के जरूरतो बा । एक महीना से चलत खरवाँसो एहि दिन खत्म होला। नावा शादी बियाह मंगल काम के भी श्री गणेश होला। इहे कुल समान पाहुर के रूप में बहिन बेटी फुवा के घरे भी भेजाला जवन रिश्ता के मजबूती के साथ प्रेम पियार आ दु परिवार के बीच निकटता के भी बढावेला।

एकरा बाद आवेला 26 जनवरी हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई भा अउरी कवनो धर्म के मानेवाला के साझा तेवहार, जेकरा के एक साथे खुशी-खुशी राष्ट्रीय परब के रूप में मनावेला समूचा देश आ देश के सीमा के बहरी विश्व मे अन्यत्र रहे वाला प्रवासी भी। 15 अगस्त 1947 के हमनीके देश आजाद जरूर हो गइल रहे लेकिन गणराज्य के रूप में विश्व के मानचित्र पर उभरल 26 जनवरी 1950 के जब संसद से सविधान पास हो गइल । ओह दिन के गणतंत्र दिवस के रूप में मनावे के पिरिपाटी चालू भइल जवन आजो चालू बा। साँच कहीं त ई दिन मूल्यांकन के ह कवन मुकाम मिल गइल आ कवन काम कइल अभी बाकी बा । कवन कानून ठीक बा कवना में संसोधन के जरूरत बा । समय-समय पर संविधान में संसोधन होत रहेला। मुख्य कार्यक्रम दिल्ली में होला जेमा जनता अपना तीनो सेना के अपना साजो सामान के साथ सोझा देखेले साथे साथ राज्य के प्रगति के झांकी भी देखे के मिलेला, संचार माध्यम से एह कार्यक्रम के सीधा प्रसारण होला जेकरा के विश्व के कवनो कोना से देखल जा सकेला।

बसन्त ऋतू के आवे के धमक सुनते पेड़ आपन नावा नावा पत्तन के साथे झूमे लागेला आ खेत बघार पियरकी सरसो के चादर ओढ़ के अंगड़ाई लेवे लागेले, बहत बयार में भी ना ठंढापन रहेला ना गरमी । सुन्दर सुखद मनोहारी वातावरण से ओतप्रोत बसन्त ऋतु के पँचमी के दिन सनातन समाज ज्ञान, बिद्या, बुद्धि, सुर-लय-ताल के अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के पूजा बड़ी श्रद्धा आ भाव से करेला।

एहि तिमाही में महिला दिवस भी आवेला। ओह दिन पूरा विश्व महिला लोग के इयाद करेला। भोजपुरी प्रक्षेत्र में सदा से मातृशक्ति पूजनीय रहल बाली। माई, बहिन, आजी, फुआ, मौसी, नारी के हर रूप पुरूष के सम्बल प्रदान करेला। नारी शक्ति के सशक्तीकरण महिला दिवस के उद्देश्य ह।

एहि तिमाही में रंग के परब फगुआ ऋतुराज वसंत के आगमन पर फगुनी पुनमासी के दिन आनंद अउरी उल्लास का संगे मनावल जाला । फगुवा के पहिले होलिका दहन करे के रिवाज बा अपना समाज मे। हर परब के पाछे कवनो ना कवनो कारण जरूर रहेला एकरा पाछे भी बा, रबी के फसल पाके के तैयारी में रहेला आ पकला के बाद खरिहान में ले आके ओकर मड़ाई-कुटाई कइल जाला। अइसन समय पर आग लगला से कबो-कबो गाँव के गाँव अउरी खलिहान जरके राख हो जाला। होलिका पूजन से किसान अग्नि देव के प्रसन्न करेलन कि अपना अवांछित ताप से मानव के जान माल के रक्षा करस। केतना ऊँचा शिव संकल्प रहे। समाज मे दरकल सौहार्द के जोरे वाला परब फगुवा बड़ी उल्लास से रंग गुलाल लगाके मधुर गीत गवनई के साथ सम्पन होला । पूड़ी पकवान के भोजन गृहस्थ त करबे करेला साथे साथ आर्थिक रुप से कमजोर तबका के भी बाँटेला ताकि ऊहो खुशी में सामिल हो सको।

कालजयी गीतन के रचनाकार पूरबी धुन के जनक माहिर फनकार पुरबिया सम्राट महेंद्र मिसिर जिनकर धुन पर आजो निर्भर बा भोजपुरिया संगीत उनकर अवतरण दिवस एहि तिमाही में आई। पूरा सिरिजन टीम की ओर से महान बिभूति के नमन बा ।

राउर प्रेम दुलार के बल पर सिरिजन 11वां अंक तक ले चहुँप गइल । रउआ लोगिन के स्नेह आ सहयोग से आगहूँ के सफर जारी रही, एहि बिश्वास के साथे समर्पित बा सिरिजन के बर्तमान अंक।

राऊर आपन,

(तारकेश्वर राय)

रोटी नइखे त भात खाए के चाहीं

कई बिशेषज्ञ लोग किसान आंदोलन में तरह- तरह के कमी निकालत बा, जइसे पी डब्लू डी के इंजीनियर कमीशन खातिर सड़क में कमी निकालेला। किसान जदि अपनी समस्या आ भूख का साथे आजो जियत बा त ओ के सलाम।

रोटी नइखे त भात खाए के चाहीं, पानी नइखे त कोकाकोला पिए के चाहीं। छोट मोट समस्या खातिर सड़क पर आ के आंदोलन कइल ठीक बात नइखे नू जी। सरकार शहर के स्मार्ट बनावे खातिर संकल्प छोड़ले बिया त गाँव आ किसान धीरे -धीरे अपने आप खतम हो जाई। सरकार के सहयोग करीं, हो हल्ला आ आंदोलन क के देश के बिकास में बाधा बनल जरूरी बा का? सरकार कइगो एप्प बनवले बिया। ओ से ऑनलाइन फसल के मार्केटिग करीं आ बेचीं।

का कहत बानीं, बिजली नइखे? त ओ से का भइल? उहो आ जाई। तले एगो पनरह हजार के एंड्रॉयड मोबाइल धान बेंचि के किन लीं। बहुत जल्दिए सरकार एगो रोटी दाल के भी एप्प लांच करेवाली बिया।

सुख सुविधा खातिर आंदोलन करबि त इतिहास का कही? अन्नदाता जे दुनियाँ के पेट भरेला ऊ एतना पेटू, स्वार्थी आ लालची हो गइल बा कि खाली अपना विषय में सोचत बा, इहे नू? अरे, तनी इहो सोचीं, रउआँ फाँसी लगा के आतमहत्या करीले त राउर बलिदान बेकार ना जाला। सरकार तुरन्ते मुआवजा देले, अखबार में छपेला, टीबी पर कुकुर झौं झौं होला। भुला गइनीं का ? पिछला बेर कवि जी के संचालन में केजरीवाल के आंदोलन में रउआँ सबका सामने फाँसी लगा के पेड़ से झूल गइनीं। राउर बलिदान बेकार ना गइल, किसान जी। केजरीवाल के पूर्ण बहुत से सरकार बनि गइल। तहिए से केजरीवाल का हाथे अल्लादीन के चिराग लागल। दिल्ली के लोग अनाज कम उपराजे, भाषण ढेर। बाकी, किसानन खातिर सबसे जिआदा चिन्ता केजरीवाल का रहेला, काहें? इनकर दादा बावन बिगहा पोदीना बोवत रहलें। तब्बे नू ई हेतना रायता फाइलावेलें। रउआँ अन्नदाता नू हईं। दाता माने होला देबेवाला। शिक्षादाता, चिकित्सादाता, जीवनदाता, भाषनदाता, सभे त दाता ही हउवे। बाकी, जले फिरी में ना देब त काहे के आ कइसन दाता?

दवा- बीरो ना मिलला पर आदमी मरि जाला, लेकिन अन्न ना मिलला पर आदमी जियत ना रह सकेला। दुनू बात में अंतर बा, रउआँ किसान हईं, राउर आ रउरा उपरजला अनाज के महत्व ढेर बा।

ए जी, मरला पर आदमी एकदम्मे मर जाला, बाकी जियत ना रहला पर आदमी ई महसूस करेला कि ऊ जियत नइखे। छोड़ीं, ई दार्शनिक बात ह, समझ में ना आई। ढेर पढ़ल लिखल लोग के भी ना बुझाला आ रउआँ त पढ़लहीं नइखीं। तनिको पढ़ले रहतीं त बिना पढ़ले किसान बिल त ना फरितीं? जवना ट्रैक्टर से खेत जोताला ओ लछमिनिया टेक्टर में आगी ना लगवले रहितीं। आतमा अजर अमर ह। महसूस करीं कि रउआँ अमर बानीं। त, जाड़ पाला में बिना मतलब के आपन बलिदान देत रहीं। रेल रोकीं, सड़क बन्द करीं, आंदोलन करीं आ उहवें प्रोजेक्टर लगवा के सलीमा देखीं। घर से राशन पानी बान्हि के निकलल बानीं, इहे कुल करे खातिर, करीं। ए किसान काका! हऊ राउर जोड़ीदार न्यूज चैनल पर बोलत रहलें कि मोदी जी कब्बो कुदारी चलवले बाड़ें, अमित शाह कबो खेत में कुछ बोवले बाड़ें?

त तनी हमरो सुनि लिहल जाव- मोदी जी कुदारी चलवले बाड़ें। जब मोदी जी कुदारी उठवलें त धारा तीन स सत्तर, तीन तलाक जइसन देश के कंजास कोड़ि के फेंक दिहलें, जब दोबारा कुदारी चलवलें त राम जन्मभूमि के नेव खोनि दिहलें। अमित शाह के त पुछबे मति करीं। इहाँ का धनिया बो देइले, खेत केहू के होखे।

✍ (डॉ अनिल चौबे)
सम्पादक "सिरिजन"

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गीत/गज़ल

नाज-नखड़ा

उहो नाज-नखड़ा, दुलारऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।
सजी लाग बाझऽ श्रृंगारऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।।
ऊ बसंतऽ कोइल फाग के, ऊ निठाहऽ टीसऽ के राग के।
ऊ श्रृंगार गाँवऽ के यारऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।।
कबोआके चमकल छुप गइल,कबो बात-बातऽमें रूस गइल।
सजी भाव भेस कुआँरऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।।
कबोआके पूछत घातऽके,कबो जाके रोवल रात केअब।
ऊ बाहार कँगना कटारऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।।
जवानी खेतऽ का हाथऽपर,ऊ श्रृंगार सागऽके माथ पर।
उहो पुरुवा-पछुआ बयारऽ के, दिन याद बाटे तनी-तनी।।
गजल के जौहर गीत के,ऊ पहिल-पहिल छवि मीत के सकल।
सजी अपना उनका करारऽके,दिन याद बाटे तनी-तनी।।

नज़रिया में तूहीं

नज़रिया में तूहीं, कजरिया में तू हीं।
समइया का सोझा डगरिया में तू हीं।।

चकित बानी हम देख के तहरे लीला।
संवरिया में तू हीं, गुजरिया में तू हीं।।

बनल बारऽ मंदिर आ मस्जिद के शोभा।
सुरतिया में तू हीं, मुरतिया में तू हीं।।

कवन जात हउवऽ धरम का ह बोलऽ।
गगरिया में तू हीं, अँचरिया में तू हीं।।

भरम में पड़ल लोग झूठे लड़त बा।
नजर जाता जेने, बजरिया में तू हीं।।

कवन नाम से जाने तहरा के जौहर।
चकरिया में तू हीं, उतरिया में तू हीं।।

तहरे बिना सइयां कासे बहसीं

तहरे बिना सइयां कासे बहसीं,
काटे धावे अंगना-दुआर रे ।
विरह वियोग के घाती रतिया,
कोइली के बोलिया कटार रे ।।

फागऽ के रागऽ बसंती हवा में,
मन-पपीहा के पुकार रे ।
अहमऽ-सोहम के रूप ना भेटल ,
ना नहियर ससुरार रे ।।

नेह का डोर में लोर के लीला,
जल बिन मीन चितकार रे ।
साँचे कहीं सइया इहे दशा बा,
तनिको ना चैन-करार रे ।।

आस के रास दशा पंछी के,
सपनन के कचनार रे ।
जौहर दास भ्रम पथ रोके,
प्रेम करे भव पार रे ।।

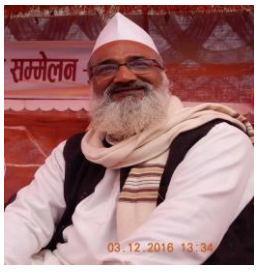

(डॉ जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी के कविता

सुशीला

सुनली सुशीला कि बुढ़ऊ तेयार बाड़े ,
गइली सहुआइनि से हालि सब बतवली।
देखलि रउनाइनि , ठकुराइन , ललाइन के ,
हाथ देके सबका के बहरा बोलवली ।

देखे चउबाइनि , तिउराइनि , मिसिराइन के ,
भगतिन के आगे ऊ अचार बढ़वली।
पहुँचे ओझाइन , शुकुलाइन, खँवाइन सब,
पठकाइन अँगना से जल्दी से धवली ।

सबका से माँगे में जेकरा लेहाज रहल ,
ओतने भरि मँगले जे मीठ रहे मन में।
दुनिए भिखारी बा दाता प्रभु दुनियाके ,
चलती बा प्रभुवर के जग में जन-मन में ।

के ना बा मँगले के गंगा के धोवल बा ,
भिक्षुक बा जन-जन पियास तन मन मे ।
पेट बा पहाड़ ना त भीखि बड़ा बाउर ह ,
निनी नाहीं आवे दे कहियो नयन में।

* * *

हमार बुढऊ जइहे कान्हा का नगरी

हे पंचे लमहर रास्ता ब , लगी भूखी पियास ।
दे देई कुछु चना-चबेना , पुरई मनके आस ॥
हमार बुढऊ जइहे कान्हा का नगरी।
तन नाचे, मन नाचे, नाचेले पगरी।

बहुते दिननँवा के पालल पिरितिया,
जरते रहल जइसे दियरा के बतिया,
बीति गइल देखते में जिनगानी सगरी ॥हमार • ॥

ऊ अंतर्यामी , इयाद होइ आइल ,
एही से मनवाँ में हुदबुद बुझाइल,
लागि जाई नइया अबजमुना का कगरी ॥हमार• ॥

साँचें के सूरता , ईमाने के जिनगी ,
कुछउ नाआपन ह,आनेके जिनगी,
भरिआइल नेहिया,सनेहिया के गगरी ॥हमार • ॥

सुनीले जे दुख भंजन तुरते देयाले ,
नेह - नीर पी-पी के अइसन अघाले ।
रचि दीहे अंजन नयनवाँ के कगरी ॥ हमार• ॥

** *** **

लागे संगमरमर जस अंग -अंग जन -जन के,
दूध दही नदिया के नदिया बँटाता।
रूप रंग देखत में, बोलत -चालत में,
केतनो अटँवला से तनि ना अँटाता।

एक -एक सुन्दर से सुन्दर महल बाटे,
देखते में धरती पर डेग डगमगाता।
केहू दरिद्र केहू राजा बा दुनिया में ,
हाय रे विधाता तू हाय रे विधाता।

** *** **

सुन्दर सुकुमार सुमन मुस्कुरात वन उपवन,
गली-गली बछरू पियावति बा गइया।
शोभा अनूप लागे भूप नीयर द्वार -द्वार,
कवने अटारी में होइहें कन्हइया ।

सोचत विचारत निहारत बा पाँव उठत,
डोलि रहल घाटे पर जिनिगी के नइया।
अपने में मगन -लगन, जन -जन निहाल लागे,
धारे के आर पार बाड़ें खेवइया।

राधामोहन चौबे "अंजन"

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता

दिल्ली में और लखनऊ में हमरो एकहे गो घर बाटे ।
ऊ छोट मोट ना बा कवनों दूनूँ घरवा लमहर बाटे ॥1॥

ओही घर में राखल हमार सब हक पद के गट्ठर बाटे ।
दोसर केहु जा के ओहि में से कुछ ले मति ले ई दर बाटे ॥2॥

कुक्कुर हमार दुओ जगही एकहे गो पहरा पर बाटे ।
बड़का बा सीधा बहुत किंतु छोटका जब जब धावे काटे ॥3॥

लखनौआ घर का पहरा पर कुक्कुर हमार जे बइठल बा ।
ओकर बोली सुनि के हदास बहुतन का मन में पइठल बा ॥4॥

औरी उहवाँ केतने लोगन के गठरी धइल सहेजल बा ।
सबका आपन आपन कुक्कुर पहरा देबे के भेजल बा ॥5॥

जाने भर में बोलतू कुक्कुर सब खोजि खोजि पहुँचावेला ।
लोग जब पानी उहवाँ के तब कंठ उघरि ना पावेला ॥6॥

केतने कुक्कुर अइसन बाड़े पहरा खातिर भेजल जाले ।
उहवाँ नीमन कवरा पा के ऊ खा के सब दिन औंघाले ॥7॥

कवरा प्रतिदिन बीसन रुपया ढुढ़हाई अलग मुनाफा में ।
रेलो पर बिना टिकट घूमें पकड़ायँ न कवनों दाफा में ॥8॥

कवनों देशी बुलडाग हवे कवनों ताजी पनियाला ह ।
कवनों असली अलसेशियन ह त कवनों भुटिया काला ह ॥9॥

कवनों घोघर कवनों लकड़ा कवनों कुछ अधिक शिकारी बा ।
कवनों के मुँह सुइलार हवे कवनों कोकाच के भारी बा ॥10॥

कवनों डलमेशियन बा जे के चितकाबर रंग सुघर बाटे ।
कवनों का खउरा धइले बा खजुवावत खबर खबर बाटे ॥11॥

दूनूँ कानन तर आठ पहर अँठई के दल बा अटल रहत ।
आगे पाछे कुकुरौंछी के दल रातो दिन बा सटल रहत ॥12॥

कवनों कुक्कुर बाटे कटाह कवनों ओहि में तनि ढूँढ हवे ।
कवनों ओहि में तनि झबरा बा कवनों पोंछी के भूँड़ हवे ॥13॥

कवनों बतास सुनि भोंकेला कवनों रहि रहि के ठोठियाला ।
कवनों अइसन चुप्पा बाटे कानों धइले ना कोंकियाला ॥14॥

कुछ गोला मुँह बरनार्ड हवें ब्लड हाउण्ड बड़का कान हवे ।
न्यु फाउण्ड लैण्ड जाति वाला बिलकुल बरनार्ड समान हवें॥15॥

मल्टीज यार्क शायर टेरियर बुल टेरियर और फाक्स टेरियर ।
ई चारू टेरियर देखे में लउकेले प्राय: एक नियर ॥16॥

गे हाउण्ड और बोर जोई प्वाइण्टर कोली एक भाँति ।
लम्बा गरदन आ लम्बा मुँह दउरे वाला पतराह काँति ॥17॥

बुलडाग चार्ल्य इसपेनियल पग मस्टिफ जे चार प्रकार हवे ।
झूलत बा ओठ नाक चापुट कद छोटा, बड़ा कपार हवे ।।18।।

रशियन जे हवे उल्फ हाउण्ड ऊहे ह जाति बोर जोई ।
आ चार्ल्स नाम का पहिले किंग रखला से नाम शुद्ध होई ॥19॥

बासठ क्लम्बर इस्पेनियल आ पोमेरेनियन जाति गनावल बा ।
ई तीनि जातिका कुक्कुरके मुँह खेंखर नियर बनावल बा ॥20॥

कुछ जनसंघी कुछ मन संघी कुछ साथी सिर्फ कहावेले ।
कुछ दल का दल-2 में भासें कुछ एने ओने धावेले ॥21॥

कवनों बड़हन बकबादी बा कवनों ढँगगर बातूनी बा ।
कवनों निछान बादी बाटे कवनों एकदम से खूनी बा ॥22॥

कुछ के बा बनल विरोधी दल कुछ के बाटे सरकार बनल ।
हमनीं के भुलियावे खातिर नित रहे उहाँ तकरार ठनल ॥23॥

✍स्व.पं. धरीक्षण मिश्र

चनन-जीन के असवार

'फिकरा' उद्देश्य-विधेययुक्त पदसमूह, वाक्य, परिच्छेद, कवनो सटीक बात जोड़ के कहे के अर्थ बोधक ह। फिकरेबंदी तुक जोरे के फन ह। पता ना एह शब्द के अर्थ में कुछ अपकर्ष कब आ कइसे भइल कि फिकरा धोखा, चकमा, फब्ती, फरेबी बात आ जुमला के अर्थ में प्रचलित बा। एकरे नगीची 'फकड़ा' के कोशगत अर्थ रद्दी किस्म भा बेअरथ के तुकबंदी ह। फिकरा एकदम से तत्समय के परिस्थिति के उपज हो सकेला, पानी के बुलबुला अस जे उठल आ फुट के बिला गइल। एकरा उलट कुछ फिकरा चल निकलेलें आ दीरघ काल ले काएम रहेलें।

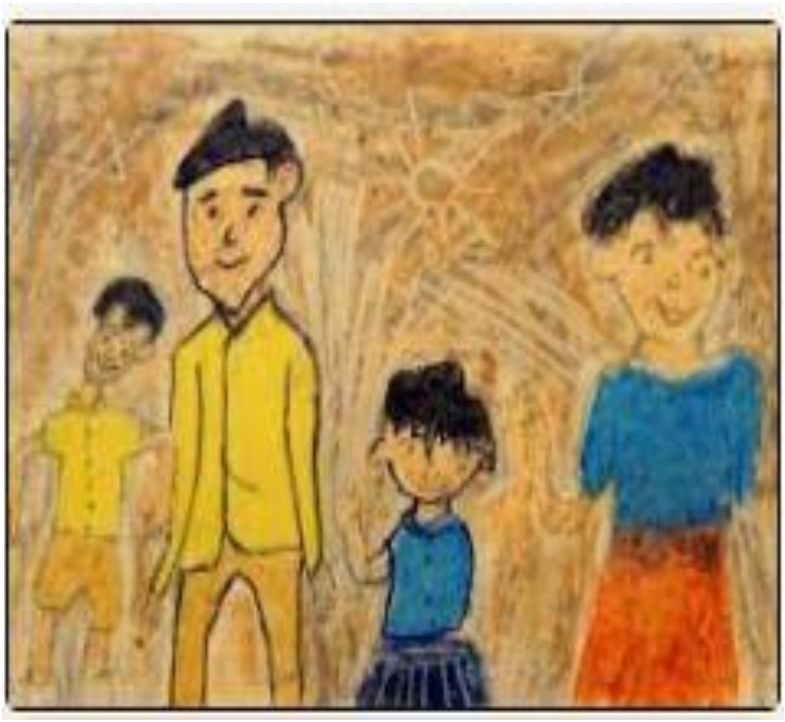

फिकरा भाषाई व्यवहार के अंग हवें ए से भाषा का संगे भाषासमाज के भौगोलिक दायरा के बहरियो उनकर पसराव होला। एह दरम्यान इनकर शब्द, सरूप, अर्थ, परोजन आदि में बदलाव लाजिमी बा। समय के अंतराल में इनकर मूल सरूप के खोज लगभग नामुमकिन हो जाला। अइसनो संभव बा जे कवनो खास परोजन से जुड़ के बेगर कवनो सोपट अर्थ के उनकर मौजूदगी बरकरार रहे। 'ओका बोका' के खेलगीत अइसने फिकरा ह जेकर पसराव उत्तर भारतीय आर्यभाषा के लगभग सब लोकभाषा में बा। कब से बा, कवनो साखी के अभाव में इहो ना कहल जा सके। मूल रूप से ई लरिकन के खेलगीत ह। एकरा में ना जाने का खिचाव बा कि एह गीत के बंद के प्रयोग साहित्य से लेके लोकगीतन तक में होत आइल बा।

दरअसल 'ओका-बोका' कवनों एगो खेल ना ह बलु खेलन के एगो क्रमबद्ध सिलसिला ह जवना में खेलमंडली आपन कल्पनाशीलता, अभिनयपटुता आ समूह भावना के मोताबिक बहुत कुछ जोरत-घटावत जालें आ खेल निरंतर चलत रहेला, तब ले जब ले समय आदि के कवनो वाह्य अवरोध ना आ जाय। खेल के शुरूआत में गोल घेरा में बइठल बालमंडली के प्रत्येक सदस्य आपन हथेली के, अधोमुखी ओक के शक्ल में, अंगुरी के सहारे जमीन प टिका देलें। प्रतिनिधि सदस्य ऑक्टोपस के आकृति में जमीन प टिकल सबके हथेली के पीठभाग प तर्जनी रखत एगो गीत के बोल बोलत जाला- "ओक्का-बोका, तीन तड़ोका / लावा लाठी, चनन काठी / चनना में का बा? / इजई-विजई, पान-फूल / पूआ पचका द.... ।"

अंतिम शब्द जेकर हाथ प पड़ेला ऊ आपन हथेली पचका के जमीन से लगा देला। इहे क्रम तब तक चलत रहेला जब तक कि मंडली के अंतिम सदस्य के हथेली ना पचक जाय। अब खेल के दोसरका भाग शुरू हो जाला। प्रत्येक पचकल हथेली के पीछे के चमड़ी के चुटकी से पकड़ के घेरा के केन्द्र में तर-ऊपर रखात जाला। फिर प्रतिनिधि सदस्य सम्मिलित हथेली के सबसे ऊपर के हथेली प आपन हथेली से उलट-पलट के चपत लगावत जाला। ई अलग से 'अटकन-बटकन' के नाँव से जानल जाला। एह दरम्यान गीत के बोल बदल जाला- "अटकन-बटकन दही चटाकन / बर फूले बनइला फूले / सावन मास करैला फूले / सावन गइले चोरी / बँसिला कटोरी / धर कान मरोरी।"

एकरा बाद खेल के अगिला चरण शुरू हो जाला। खेल के मुख्य खिलाड़ी आपन बँवारी पाँव के एँड़ी जमीन प टिका देला, अँगूठा आकाश का ओरि, फिर बाँए हाथ के बंधल मुट्ठी के कनगुरिया छोर से जमीन प रोपल पैर के अँगूठा पकड़ लेला। एह मुट्ठी के अँगूठा ऊपर भरे होला। खेल के सब सदस्य एक-एक क के मुट्ठी के नीचला छोर से अँगूठा धरत मुट्ठियन के मिनार बना लेले। मुख्य खिलाड़ी आपन हथेली के तरुआर सरिस उपयोग करत ऊपरी

मुट्ठियन के जोड़ प हलुक आघात करत संबंध छोड़ावत जाला। ई क्रम अंत तक जारी रहेला। एह क्रिया में समूहगान होला-

तार काटो तरकुल काटो, काटो रे बरकाजा,
हाथी पर के घुंघरू चमक चले राजा
राजा जी रजइया ओढ़े, रानी के दुपट्टा,
ईंच मारो, घींच मारो, मूसरि से बेटा।

खेल के सब सदस्य गोल घेरा में अपना दहिने-बाँवे के सदस्य के कान पकड़ के मंडलाकार घूमे ले। समूह गीत के नया बोल होला- "चूँटा हो चूँटा / मामा के घरिलवा काहे / फोरल हो चूँटा। [चिवटा, ए चिवटा। मामा के घइला काहे फोड़ दिहल।]

एक दोसर खेल में घेरा के लरिकन एक दोसरा के हाथ धइले गावेलें- "चलऽ गदेला बारी में / बारी में सियार बा / भूअर-भूअर बार बा / भूअर होशियार बा / लाठी लेके ठाढ़ बा / मारे के तैयार बा।"

["बालक, बारी (घर, बाड़ भा बाग) में चल।" "बारी में त सियार बा, जेकर रोंआँ भूअर बा। ई भूअरा चालाक बा। ऊ लाठी लेले खड़ा बा आ मारे प आमादा बा।" निसंदेह ई अंश आजादी के अगते के जन मनोवृति ह जवन आपन चौहद्दी में घुस आइल भुअरबारा आ धूर्त अंगरेजन के धौंस आ अत्याचार के संकेत कर जाता।]

खेल के क्रम आ गीत के कवनो अकट नियम नइखे। एके खेलमंडली के अलग-अलग समय में खेलल गइल खेल के सरूप, क्रम आ तेवर में थोरिक भिन्नता हो सकेला, जवन खेलमंडली के परस्पर सहयोग, खास परिस्थिति में उनकर समिलात निरनय-छमता के आसरे बा।

'आधुनिक गीति काव्य' में उमाशंकर तिवारी जी एह तरह के गीतन के संबंध सामवेद के 'स्तोभ' से, जवना के आदि सोत आदिम गान रहलन, जोड़ले बानीं। 'स्तोभ' (स्तुभ+घञ्) सामवेद के एगो प्रभाग ह। "स्तोभ पद्धति के उद्गम आदिम नाच-गान ह। आदिम जन समाज में नाच-गान के आयोजन में गावल जाएवाला गीतन में अक्सर निरर्थक शब्दन के प्रयोग होत रहे। अभियो आदिम जातियन में गाए जाएवाला गीतन के अधिकतर टेक के शब्द अइसन होलनि जेकर कवनो अर्थ ना होखे, ऊ महज हरख-बिखाद, अचरज, आदि भाव के व्यक्त करेवाला ध्वनि होलनि। श्रमिक जइसे- 'हैया-हैया' आदि शब्दन के व्यवहार करेलनि ओसहीं गीतन में ए तरे के शब्दन के टेक के रूप में प्रयोग होत रहे। सब देशन में लरिकन के गीत में ए तरे के निरर्थक टेक के प्रयोग होला।" स्तोभ के तीन प्रकार- १. वर्ण-स्तोभ, २. पद-स्तोभ आ ३. वाक्य स्तोभ में से तीसरी कोटि में 'ओक्का-बोक्का' के रखल जा सकेला। परतोख बदे उहाँ का एही गीत के हेह सरूप के उल्लेख कइले बानीं- "ओक्का बोक्का तीन तलोक्का / लौवा लाठी चंदन काठी / चनना में का बा / इजइल विजइल पान-फूल / एक हाथ पचक्का।"

तिवारी जी भरतमुनि के नाट्शास्त्र में ध्रुवा के प्रयोग के नियम के अधीन नांदी के बाद अवकृष्टा, अड्डिता आदि स्तोभ के प्रयोग (न तत्र गानं कर्तव्यं तत्र स्तोभ क्रिया भवेत्।) के रेखांकित करत भारतीय शास्त्रीय संगीत में तराना, आलाप के व्यवहार का ओरि ध्यान खिचले बानीं।

सिद्धांत के तौर प एह तथ्य से असहमति के कवनो कारन नइखे बाकी एगो सत्य इहो ह कि ब्रहमांड में उत्पन्न कवनो ध्वनि एकदम से बेअरथ ना होखे। सामान्य खटपट के आवाजो तेकर उत्पत्ति के पीछे के वजह आ तात्पर्य, अगर होखे, तेकर बोध करा जाला। वैदिक साहित्यो में चाहे ऊ सामगान के कवनो अतिरिक्त ध्वनि होखे, अथर्व के कुछ मंत्रन मे आइल अबूझ शब्द-पाँति भा छांदोग्य के कुकुरन के हिकार, ओकर कुछ मतलब बा। आम बोलचाल में आइल कवनो निरर्थक ध्वनि, बड़बड़ाहट भा असंबद्ध प्रलापो के परख-विश्लेषण कइल जा सकेला। 'अनमिल आखर अरथ न जापू' के बर्जना का बादो बीजमंत्र, झाड़-फूँक के अबूझ मंत्र, ए तरे के आन भाषाई लोकसामग्री, जवना में अइसन खेलगीतो के लिहल जा सकेला, के तात्पर्य के प्रति जिज्ञासा आदमी में हरदम रहल ह। इन्ह खेलगीतन के मतलब तक पहुँचे में सबसे बड़ बाधा इनकर तयशुदा सरूप के ना होखल बा। खेल के तौर-तरीका, गीत के शब्द, पद, वाक्य, लय सब में बदलाव के बावजूद एकर वजूद आ पहिचान कायम बा, ई अचरजे अस बुझाला। बदलाव महज भाषा आ क्षेत्र के भीतर रहित त एक बात बाकी हिहाँ त जतिने मुँह ततिने बात वाली बात बिया।

'मध्यप्रदेश के जनपदीय खेलगीत' में एकर कुछ क्षेत्रवार रूप के उल्लेख कइल गइल बा-

"ओक्का बोक्का तीन तलोक्का / लौवा लाठी चंदन काठी /

चन्दना के नाम का / इजई-विजई पान फूल पचक्का।" (भोजपुर क्षेत्र)

"ओका-बोका तीन तिलोका / लइया लाठी वन के टाटी
वन फूलै वनवारी फूलै / और फूलै वन के करैला
अंगने मा आल गूल / वन मा करैला / डिल्ली डगर ढप्प।" (सुल्तानपुर)

"अक्का-बक्का तीन तिलक्का / लौवा लाठी चंदन काठी
बनने में का बा / इजइल-विजइल पान फूल / एक चिरैया पचक जो।" (बुन्देल खंड)

"ओक्का बोक्का तीन तलोक्का / लौवा लाठी चंदन काठी /
चन्दन के नाम की / फुचुवा फुचुक / सुइया लेबै कि डोरा?"

खाली भोजपुरी में एकर कइगो ना रूप भेंटल जवना के पाठ में कुछ-ना-कुछ अंतर बा-

"ओका बोका तीन तलोका / लैया लाटी चंदन काटी /
रघुआ क काव नाँव- 'विजई' / काव खाय- 'दूध-भात' /
काव बिछवाई- 'चटाई' / काव ओढ़े- 'पटाई' / 'हाथ पटक, चोराइ ले।"

"ओका बोका तीन तड़ोका / लउवा लाठी चंदन काठी
चन्दना में का बा, इजई कि विजई, पान कि फूल?/
बैगन टूटे खेत में, सास पकावे पूआ, ननद खेले जूआ /
पुचुक गइलस पूआ।"

"ओक्का बोक्का तीन तलोक्का / लइया लाठी चन्नन काठी,
चनन में का बा? / ललका सिपहिया.....
दूनो कान कटवले बा। पराती में सुतवले बा।
हँड़िया भुचुक / हमार गुइयाँ चुप....।"

(आकृति विज्ञा अर्पण के कविता 'चुनावी सेतुआ' में उद्धृत)

"ओका-बोका तीन तलोका / लइया-लाठी चंदन काठी।
चनने में काव-काव?
दूध भात पइसा, तीन पाव कै थरिया।
राजा जी जब जेवन बइठे कूद परल लोखरिया।
भइया कै रजाई भीजै, भऊजी कै दुपट्टा।
भादों में करइली पाकी, ऊ करइली क काव नाँव?
अमुनी कि जमुनी? पनिया पिचुक्क...।"

(बस्ती इलाका। श्री श्लेष अलंकार जी से प्राप्त। क्रम संदिग्ध।)

विवेकी राय जी 'मंगल भवन' में लाटबाबा के जुबानी एह गीत नीचे दीहल रूप में उल्लेख कइले बानीं, ई गीत के पारंपरिक रूप ना ह बलु एह बात के संकेतक ह कि लाटबाबा अइसन तुक्कड़ लोग ए में आपन अनुभव के मेरफेंट करत रहेलनि-

"ओका-बोका / तीन तड़ोका / लौवा लाठी / चंदन काठी / सीमा पर सुलगवलीं भाटी / दुश्मन चोखा / बैरी माठा /
तिब्बत लासा / पलटे पासा.....।"

'ओका-बोका' प मनन कइले कुछ तथ्य प सामान्य रूप से ध्यान जाता। ई संवाद शैली में बा आ बतकही के सिलसिला में कथन के पूर्वापर संबंध बहुत साफ नइखे ए से सतही तौर प असंबद्ध प्रलाप अस लागत बा। एकर पहिला अंश मामूली ध्वनिगत हेरफेर का संगे सगरे मौजूद बा।

गीत में आइल ओका शब्द ओक के आकारांत रूप ह। हिंदी इलाका के लोकभसन के ई सामान्य मिजाज ह, चोक, झोंक, थोक, धोक (धोख), बोक, रोक, लोक के जगे क्रमवार चोका, झोंका, थोका, धोका, बोका, रोका, लोका जइसन प्रयोग आम ह। ओक के मूल संस्कृत ओकस् (उच्+असुन) ह जवन मुख्य तौर प घर, वास, आश्रय, ठिकाना के बोधक ह। एकर आन अर्थ पाँखी, शुद्ध, नछत्तर हवें। क्रिया के रूप में ओक(ल) कै करे आ भँइस अस डँकरे के बोधक ह। ओक के एगो दोसर सोत संस्कृत के यूक (यु+कन्, दीर्घ, स्त्री. टाप्) जेकर मुख्य अर्थ ढील (जूँ) ह। ओक नाँव के एगो पहाड़ी बिरीछ होला। ओका वोल्गा (मध्य रूस) के एक सहायक नदी ह, लैटिन 'एक्वा' के साथ ओका के व्युत्पत्ति मानल जाला जेकर अर्थ ह 'पानी'। भोजपुरी में अँजुरी के अर्थ में 'ओक', आम प्रचलन के शब्द ह। जलपात्र के सहज सुलभ ना भइले ओक (अँजुरी के दोनी) से पानी पीए के फौरी उपाय, के ना जाने? अँजुरी के एही आकार सरीखा कुछ खाए-पीए बदे चिरइँन के खुलल चोंच के ओक कहल जाला। आदत, अचरज भा निगुढ़ चितन में अदिमियों के मुँह ओका अस खुल जाला। बात जब समुझ में ना आवे, हाथ में आइल गरई छटक जाय, चलल दाँव फुक्का हो जाय त मुँह 'ओका' भा 'ओक्का' हो जाला। साइद एह मुद्रा-बिसेखी के चलते बेवकूफ मुँहबावा कोटि के लोग ओका के संज्ञा पा जाले।

बोका (बोक, बोक्कड़, बकरा) के मूल संस्कृत के बुक् ह जवन ध्वन्यात्मक अनुकरण प आधारित शब्द ह। बुक् से उत्पन्न बुक्कार

सिघ के दहाड़, बुक्क (बुक्क्यति ते) भूँके, बोले, बतियावे के बोधक ह। बुक्क (बुक्क+अच्) जिगर, छाती, रुधिर आ 'बुक्कक्क' बकरा अर्थ में बा। बोका लाक्षणिक अर्थ में निर्बुद्धि मानुस के वाचक ह। बंगला आ मराठियो में बोका बकरा आ मूर्ख के वाचक ह। 'ओक्का-बोक्का' में समानार्थक द्वैत बा जइसन कोड़-खन, कूद-फान, गाय-गोरू, बाल-बच्चा, मरद-मानुस सरीखे शब्द-युग्म में पावल जाला। ए तरे के समानार्थी दोहराव जोर, फैलाव भा निरंतरता के संकेतक हवें।

गीत में आइल तड़ोका, तलोका, तिलोका जइसन अलग-अलग शब्द-व्यवहार से कइ तरे के संभावना पैदा हो जाता।

तड़ोका तुक के आग्रह से तड़ाक के स्वैच्छिक प्रयोग हो सकेला। तड़ाक या तड़ाका तड़तड़ाहट के संगे टूटे के आवाज आ तुरत के अर्थ में होखेला। तड़ाका नदी, समुंदर के कछार, आघात, सुबह के अगते के प्रभा ह। 'वर्णरड़लयोरभेदः' के फितरत से ई तलोका अथवा तिलोका हो सकेला। तलोका से प्रतल, ताल्लुका, चपत के तात्पर्य निकालल जा सकेला। तिलोका में तीनों लोक, तलाक (भोजपुरी में 'तिलाक', कसम धरावे के अर्थ में) के अर्थ संभावित बा। हालांकि तिलोका के पहिले तीन संख्यात्मक विशेषण के प्रयोग भरम में डाल देता, जब तिलोक (त्रिलोक) खुद तीन लोक के बोधक ह त अलग से तीन जोड़े के कवनों जरूरत ना रहल ह बाकी लोकबुद्धि के का 'तीनों तिरलोक' जइसन प्रयोग के बारीक विसंगति प सोचे के कहाँ फुरसत। कुछ इहे हाल लउआ-लाठी के बा। एह शब्द-युग्म के लइया-लाटी, लउआ-लाठी, लावा-लाठी, लौवा-लाठी जइसन उच्चारण-भेद मिलेला। जोड़ा के पहिला शब्द के जदि लइया मानल जाव त ई लाइ याने आग भा प्रेमाग्नि, लाई (फा.) याने एक तरे के रेशमी कपड़ा, ऊनी चद्दर, शराब के तलछट, धान के लावा, चुगली में से कवनों अर्थ दी। लावा-फरही के गुड़ के पाग से बनल लइया भा लाई से केकर परिचै नइके। लउआ लव (लौ, लगन), लौआ लौकी के अर्थ राखेला। लउआ के संबंध लउर (सं.- लगुड) से हो सकेला। लावा 'ले आवऽ' (पछिमी भोजपुरी) के अरथो में संभव बा। गीत में लाटी या लाठी के दू पाठ-भेद बा। लाटी लाट प्रदेश (गुजरात के एक भाग के प्राचीन नाँव) के स्त्री, थूक आ ओठ सूखे के दशा (सूखहि अधर लागि मुँह लाटी- रा.मा.), चिरकुट (धोती फटी-सी लटी दुपटी-सुदामाचरित), लरिकन के भाषा के बोधक ह। लाठी (सं- यष्टि) डंडा के अर्थ में ह आ काठी काठ संबंधी, लकड़ी के तिल्ली, जीन जवना में नीचे काठ होला, काठ के म्यान आ काया के गठन ह। चंदना चंदन, अनंतमूल, चंद्र, चंदवा (चंदोवा), टोपी के ऊपर के गोल हिस्सा आदि, चाँदना उजाला, रोशनी आ चनना चंदन आ चंदना दूनो के अर्थ में हवें। इजयी-विजयी के इजयी या त शब्द-युग्म के निरर्थक शब्द ह अथवा इज्या (यज्ञ, पूजा, उपहार, सम्मान) के अर्थ में।

'ओक्का-बोक्का' के अर्थ तक पहुँचे में एकर सरूपगत भिन्नता सबसे बड़ रोकावट बा। शब्दन के हेह मकड़जाल के

सझुरावल कठिन काम बा, बेगर बिधुनइले साबूत सूत हाथे लागल दुल्लम बा। गीत में प्रयुक्त शब्दन के छोर से संगत आ सिलसिलेवार अर्थ के संभावना के तलाश कइल वाजिब रीति हो सकेला बाकी एकर सटीकता के लेके कवनो दावा ना कइल जा सके। एकर हेह काव्यात्मक रूपांतर के देखल जाव-

तीनों लोक निबुद्धि,
जीवन-संघर्षी,
चनन-जीन के असवार।
का बा एह वितान तले?
दान-सम्मान, जय फिर पल्लंपुष्पंतोयं।
पूआ सरीखे फूल जनि,
पचक जो।

एकर भाव-विस्तार होई- "ई उजबक (ओका-बोका) दुनिया (तिलोका) अंत में जेकरा चिता (चंदन-काठी) प चढ़हीं के बा। एह हकीकत के बावजूद एक अंतहीन द्वंद्व, जीवन संघर्ष, अंतर्विरोध (लउआ-लाठी) । पूरे सांसारिक प्रपंच के फैलाव में, आकाश के चंदोवा (चंदना) तले आखिर का बा? मतलब कुछ नइखे। कुछ हइयो बा त महज पारस्परिक दान-सम्मान, कर्म, जय (इजय-विजय) आदि। एन्हनि के प्रलोभन में अझुराइल आदिमी! इन्ह चीजन से यानि जीवन में प्राप्त उपलब्धि से उपजल अहंबोध में पूआ अस फूलऽ मत, पचक जा।"

इहाँ तड़ोका, तलोका भा तिलोका के अभेद माने के कारन बा। लरिकन के भाषा-बोल में उच्चारण शुद्धता के उम्मीद कइल बेमानी ह। अधफुट शब्द-प्रयोग के बयस में लरिकन के भाषा असहीं अरबरात रहेला। इहे हाल लउआ-लाठी के बा। एकरो सब उच्चारण भेद के असली मकसद 'लउर-लाठी' के इर्द-गीर्द चक्कर

काटत बा। लोकमन में चिता रचना खातिर चंदन के लकड़ी के आदर्श हरमेसे रहल। एह अभाव के पूर्ति देवदारु से बनल धूप-सकील से कइल जाला। निरगुनिया मिजाज के लोकगीतन में चनन के हिडोला, सेज, पीढ़ा, चौकी, के चरचा अक्सर होला जेकर अर्थ-व्यंजना अर्थी, चिता में होला- "चनन काठ के बनल खटोलना, तापर दुलहिन सूतल हो (कबीर)।" चंदन-काठी के कवनो आन अर्थ का ओरि गइले भटकाव के अनेसा रही। कठही चिता के असवार होखल अदिमी के नियति ह, चनन आ काठी (काया) के ई युग्म बिल्कुल असामान्य नइखे। पूआ स्वस्थ गाल बदे रूढ़ उपमान ह। देह प माँस चढ़े के असर गाल प अगते जनाला। असहमति, नाराजगी के आदि के हालत में घोघ लटकावल भा पूआ अस गाल फुलावल आम बात ह। 'पूआ पचका दऽ' के तंज भरल प्रबोधन के पीछे मिथ्या अभिमान, बैर, नाराजगी, असहमति आदि के बर्जना आ विनयी होखे के भाव परगट बा।

ए तरे त एक गूढ़ दार्शनिक अर्थ उपरा जाता। कुछ विद्वान लो के विचार खेलगीतन में कवनों गम्हिराह अर्थ खोजे के विरुद्ध बा, अइसन दृष्टि के पीछे के तर्क ई बा कि बालिस्मति में हतना वजनी बात ना आ सके। खेलगीतन के रचनाकार के रूप में लरिकन के माने से एह तरे के धारणा बनल, बाकी एह बात के प्रतिपक्ष ई बा कि लरिकन के खेल, एकर भौतिक उपकरण, गीत-संवाद आदि तैयार करे में पउढ़ समुदाय के भूमिका होला। खेल-खेल में लरिकन के भीतर जागतिक सत्य के बोध करावे के विचार प्रबल होला। ए से एह में अस्वाभाविकता देखल उपयुक्त नइखे। चलीं, घुणाक्षरन्याय से सही अइसन तात्पर्य व्यक्त होता त का दिक्कत? अर्थरि मे प्रयोजनं नतु शब्दरि।

अजय पाण्डेय, सुहवल, गाजीपुर के ब्लाग लेख के अनुसार एह गीत के गोट तात्पर्य ई बा कि आपन केहू कतिनों खास होखे जेकरा खाती जीए-मरे के कसम खाइल जाला, ओक्का (ओकरा) तीसरे लोक में जाते भा कहीं त मुअते चंदन के लकड़ी से दाह आ लाठी से कपालक्रिया कइल जाला॥ ई कइसन प्रेम? जीवन के एह सत्य के खेले-खेल में बता दिहल गइल रहे।

'खेल खेलाड़ी आ ओकर बोल' में शारदानंद प्रसादजी एकर अर्थ हेह तरे कइले बानीं- "ओंकार (ओका) बोलला से सत, रज, तम (तीन तड़ोका) तीनों के बन्हन टूट जाला। लुआठी लकड़ी चनन बन जाले। भगत जय-विजय के दरजा पा लेला। भगवान विष्णु के सानिध पावते ओकर पान-फूल रूपी संसार के आकर्षण खतम हो जाला आ भगत तिरगुनातीत हो जाला।" एकरा प बेगर कवनों टिप्पणी कइले एगो किस्सा मन परत बा। संत, पहलवान आ बनिया तीनों से अलग-अलग सवाल भइल कि जिनिगी में सबसे अहमीयत कवन चीज के बा? उत्तर बड़ा दिलचस्प रहे। क्रमवार में तिनहुन के उत्तर रहे- राम-लछुमन-दशरथ, डंड-मुंद-कसरत आ नून-तेल-अदरक।

ओका-बोका के आगे के अलग-अलग सरूप के बेतरतीब पद-बंध में कवनो तारतम्यता या पूर्वापर संबंध देखेले कुछ हाथ ना लागी। एकर कारन स्थान, भाव, समयांतराल में उत्पन्न परिस्थिति, एकाधिक खेल आ फौरी तुकबंदी के अंतर के संमिश्रण बाड़न। ओकर भाषा आ अर्थ-रोपन में कवनों खास पेंचीदगी नइखे। सब के चर्चा बहुते विस्तार दीही। अबहीं त बात के ओका -बोका तक सीमित रखे के बा। दरअसल ओका-बोका अइसन टेक बन गइल बा जेकरा जरिए लोकमन कभी सोझे, कभी परोक्ष रूप से मन के भाव परगट करत रहल बा। ई काम आज ले चल रहल बा।

आज-काल्ह अपसंस्कृति के दौर बा। भोजपुरी में लोकगीत आ सिनेमाई छोर से सांस्कृतिक बिरूपीकरण के प्रक्रिया बहुते तेज होखे के असर इन निहछल लोकसामग्रियनों प पड़ रहल बा। ताज्जुब ना जे आगे के कालखंड में इन्हगीतन के मूलभाव के छीजन आ विकृतिमूलक अर्थारोपन के हावी होखे से लोकमानस एन्हनि से दूर होत चल जाय। सांस्कृतिक अपघटन आ स्वार्थी व्यवसायीकरण के हेह दौर में लोक धरोहर के निरउठ रखे के फिकिर केकरा बा? अबे त ढाँय-ढुच् के छाती दलकावे वाला भतार संगे, इयार संगे मुखिया जी के रहर-खेते भा अहले भोरहरिए ना जाने कवन 'ओका-बोका' खेले के मनसा संजोवेवाला लुच्चागीत के बोल प लोग कावा काटऽता। रामजी सुमति देसि।

✍दिनेश पाण्डेय, पटना।

द्रोपदी खण्डकाव्य से

तू दुरुगा बनिके अईलू तोहरे बल बीर चलावत भाला।
माई सरस्वती तू बनलू तोहरी किरिपा कविता बनि जाला।
आठ भुजा नभचुम्बी धुजा नहिं मइहर में सीढ़िया चढ़ि जाला।
राउर ऊँची अदालत बा बदरा जहँ से रचिके रहि जला।।

नाहीं ढोवात अन्हार क भार बा, ताकत बाटे ढोवाइ न देते।
झंखत बाटी अजोर बदे दीयरी ढिबरी से छुवाइ न देते।
भोर समै पछ्तइबे अकेलइ राह अन्हारे देखाइ न देते।
बाती अकेली कहाँ ले जरइ तनिका भर नेह चुवाइ न देते॥

देखले कबौ न बाटी पढ़ले जरूर बाटी
सुनीले कि ऋषि मुनि झूठ नाहीं बोलेलें।
ब्रम्हा बिस्नु औ महेश तीनू मोहि गइलें माई
तोर बीन कवन कवन सुर खोलेले।
द्रौपदी बेचारी बाटे खाली एक साड़ी बाटे
उहो न बचत बाटे बैरी मिलि छोरलें।
अस गाढ़ समय मे देखब तोहार हंस
हाली-हाली उड़ेलें कि धीरे-धीरे डोलेलें॥

ना लुटिहइ द्रौपदी कतहूँ मतवा भेजबू जौन धोती एहीं से।
रोज तू सुरुज बोवेलू खेत मे रोजइ भेजेलू जोती एहीं से।
माई रे तोरे असिसन के बल पाउब छंद के मोती एहीं से।
बाटइ हमें बिसवास बड़ा निहचाइ मिले रस सोती एहीं से ॥

ढोंग कविताई क रचाइ गैल बाटै तब
छोड़ि के दुआरी तोर बोल कहाँ जाई रे।
भाव नाहीं भाषा नाहीं छंद रस बोध नाहीं
कलम न बाटै नाहीं बाटै रोसनाई रे।
कौरव सभा मे आज द्रौपदी क लाज बाटै
गाढे में परलि बाटै मोर कविताई रे।
हियरा लगाइ तनी अचरा ओढाइ लेते
लरिका रोवत बा उठाइ लेते माई रे ॥

ओहि दिन पुरहर राष्ट्र धृतराष्ट भैल
भागि में बिधाता जाने काउ रचि गइलें।
ना ऊ त धरमराज नाहिं बा सरम लाज
हाय राम लाज क जहाज पचि गइलें।
ठाट बाट हारि गइलें राजपाट हारि गइलें
आगे अब काउ हारे काउ बचि गइलें।
अंत जब द्रौपदी के दाँव पर धइ देलें
अनरथ देखि हहकार मचि गइलें॥

नाहीं ढेर बड़ि बाटै नाहीं ढेर छोट बाटै
नाहीं ढेर मोटि बाटै नाहीं ढेर पतरी।
छोट छोट दाँत बाटै मोती जोति माथ बाटै
तनीमनी गोरी बाटै ढेर ढेर सँवरी।
बड़ बड़ बाल बाटै गोल गोल गाल बाटै
गोड़ लाल लाल बाटै लाल लाल अंगुरी।
बड़े बड़े नैन वाली मीठे मीठे बैन वाली
द्रौपदी जुआरिन के दाँव पर बा धरी॥
(द्रोपदी खण्डकाव्य से)

✍पं. चंद्रशेखर मिश्र

चाँद गगन से झाँके जब

चाँद गगन से झाँके जब
बदरी के खिड़की खोल
प्रीत के गीत भइल अनमोल !

सारा जग अउँघाइल बाटे
दिल के धड़कन जागे
रूप अँजोरिया छम से आवे
झलक देखा के भागे
संयम सपना के अंगना में
रहि रहि मारे बोल
प्रीत के गीत भइल अनमोल !

अक्षर अक्षर से रस टपके
स्वर शरबत जस लागे
शब्द शब्द मधुआइल अइसन
छन्द छन्द रस पागे
अमर प्रेम के राग रागिनी
जस मिसिरी के घोल
प्रीत के गीत भइल अनमोल !

प्रेम मिलन के गीत अचानक
कहँवा आज सुनाइल
जइसे केहू पास खड़ा बा
अनहक जिय घबराइल
कान में गूँजे झांँझ मजीरा
मन में बाजे ढोल
प्रीत के गीत भइल अनमोल !

✍सुनील कुमार तंग,
सिवान।

केहू मन परल

कल्पना कइलस गजब सिंगार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

सुधि के सूरुज मन-मुरेड़ा पर,चढ़ल अगरा गइल
रूप - दर्शन के सुगंधित घाम,सब छितरा गइल
फेर फुलाइल आस के कचनार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

एह किनारा भोग बा आ ओह,किनारा जोग बा
आत्मा - परमात्मा के बीच,में संजोग बा
साधना दोहमच में बा लाचार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

का पता जीवन - नदी के धार,कहवाँ ले बही
राह में बिसभोर के कब के रही,के ना रही
आँख में अचके बसल संसार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

दीन-दुनिया,रूप-यौवन,मोह-माया,धूप - छाँव
चार दिन के चाँदनी आ फेर अन्हरिया,ठाँव - ठाँव
याद के जुगनू करे उजियार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

देह - माटी मन के गंगा में नहाइल,रात - भर
सत्य शिव आ सुन्दरम् के सुर सुनाइल,रात - भर
प्रेम पूजा से मिलल अंकवार,केहू मन परल
गीत के बिरवा भइल छितनार,केहू मन परल !

✍सुनील कुमार तंग,
सिवान।

मनवाँ बहुत उदास बाटे

आज मनवाँ बहुत उदास बाटे।
अउर केहू ना आस- पास बाटे।

के तरे उनका बिन जियत बानीं,
का उनहूँ के ई आभास बाटे ?

चोट ओही से बा मिलल अक्सर,
हीत जेही कि बहुते खास बाटे।

कवनो मड़ई कहीं जरल होई,
अइसहीं ना त ई लहास बाटे।

दिन ईहो गुजर जाई अबहीं,
कोरोना चढल खरमास बाटे।

ई धरती कबो बंजर न होले,
फसल जहवाँ उगे ना घास बाटे।

'संजय' अब त बस बाटे टंगाइल,
वक्त के अरगनी पर आस बाटे।

✍संजय मिश्र 'संजय',
कार्यकारी सम्पादक- सिरिजन।

छोड़ल जा

आँख खोल के सपना देखल छोड़ल जा।
गरज से अधिका लमहर फेंकल छोड़ल जा।

आपन जेतने बाटे ओ में गुजर करीं,
दोसरा के धन-सम्पत छेंकल छोड़ल जा।

अपना गरजे राजनीति के तावा पर,
जनता के रोटी जस सेंकल छोड़ल जा।

साइत संगही जाई रोग पुरनका ई,
केतनो चहनीं कहवाँ मेटल छोड़ल जा।

अब अइसन कुछ करीं कि सब खुशहाल रहे,
अबले के- के, का-का भेंटल छोड़ल जा।

चाहीं जे नीमन लउके नवकी दुनियाँ,
जबरी बात पुरनका पेसल छोड़ल जा।

'संजय' सेतिहा ना ह कविता-गीत-गजल,
दू कौड़ी में कीनल- बेचल छोड़ल जा।

✍संजय मिश्र 'संजय',
कार्यकारी सम्पादक- सिरिजन।

भोजपुरिया संस्कृति के रोचक तत्त्व-गारी

शब्दन के जाल ह गारी। संस्कृति के कमाल ह गारी। गारी बा त सास बाड़ी, ससुर बाड़ें, साला बा, साली बाड़ी, ना त मन कहीं भा मिजाज कहीं, सब खाली खाली बा। ई चाहे त किला ठोकवा देवे, ना चाहे त किला भँसवा देबे। गारी के ही बूता बा कि एकरा एगो बोली से गाँव से गाँव के दिल जुड़ा जाला आ एके बोली से गाँव के गाँव लहक जाला। हमरा समझ से एकर रोचकता आ खिस्सा बूझे खातिर एकरा खोह में घुसे के पड़ी।

गारी के इतिहास-

सतजुग में त ना बाकिर त्रेता में गारी के चर्चा बा आ एकरा पर तुलसी दास जी अपना महाग्रंथ 'राम चरित मानस' के बालकाण्ड में जनकपुर के एगो प्रसंग में बड़ी रोचक ढ़ंग से चर्चा कइले बानीं। अजोध्या से राजकुमार राम आ तीनों भाई के बारात चहुँपल बा जनकपुर। सभे जनवासा में बइठ के भोजन करता आ उहाँ के मेहरारू सब लोक रीति के मुताबिक रिश्ता के खेआल राख-राख के गारी देत बा लोग। खूबी त ई कि अजोध्यावासी चहक-चहक के सुनता आ मुसकात बा लोग-

"जेंवत देहित मधुर धुन गारी।
ले ले नाम पुरुष अरु नारी॥"

बाकिर महाभारत काल में गारी के खूब राज रहल बा। द्रौपदी बेचारी दुर्योधन के खाली- "आन्हर के बेटा आन्हरे नूँ होला?" - कह देहलीं आ उनकर लूगा लूटा गइल,उहो भरल सभा में। शिशुपाल निनान्वे गो गारी देहलें कृष्ण जी के, तब तक कुछुवो ना भइल बाकिर जइसहीं सव गो के गिनती पूरल,कृष्ण जी के अंगूरी से सुदर्शन चक्र निकलल आ उनकर मूड़ी काट लेहलख (शिशुपाल के अइसने वरदान मिलल रहे)।

वर्त्तमान में एकर तूती बोलता बाकिर सवाल फेरु उँहवे बा-आखिर गारी ह का?

जहाँ तक हम समझत बानीं-रिश्तन के ले के ई जादा संवेदी मुद्दा बन जाला। अभी एके गो पक्ष पर धेआन दिआव-ससुरार के सब

हितई जइसे सास-ससुर,साला-साली,समधी-समधिन,साँढू-सँढुआइन जस ढ़ेर सारा संबंधन के संगे कहीं मजाकिया बतकही के संभावना बा त कहीं आदर देवे के परिस्थिति बा। एगो जीजा,अपना साली के कवना हद तक गरिआ सकतारें, ई कहे के ना, समझे के चीज बा। उहे ससुर, सास भा जेठसर लोग के आदर दे के बतिआवल मजबूरी बा। माई-बाबू, बड़ भाई जस लोग के हमनीं के समाज ऊँच पीढ़ा देवेला। हरमेसे ओह लोग के इज्ज़त बनल रहो, एकरा खातिर दिने-रात लागल रहेला।अइसन रिश्तन पर जब शाब्दिक हमला होला, संबंधन के धज्जी उड़ेला, बिखाह भा तिताह बोल दोसर केहू बोलेला तब ओह बोल के गारी कहल जा सकेला। ई बोल के असर सोझा वालु के भीतर तक मार करेला। एह प्रतिक्रिया में एनहूँ से बतकुच्चन होखे लागेला। लाठी चल सकता, भाला चल सकता, मूड़ी फोरऊव्वल हो सकता। इहाँ तक कि एक-दोसरा के लोग मुआ भी सकता।

गारी के द्वु गो प्रकार-

ऊपर के लेख के अगर गंभीरता से देखल जाव त द्वु तरह के गारी के प्रकार लऊकता- एगो गारी दिहल आ एगो गारी गावल। हालांकि गावल आ दिहल द्वुनों क्रिया रुप ह। गारी देहल जहाँ ज्वालामुखी फोरल भइल, उहवें गारी गावल सूखल बगइचा में पानी पटा के फूल उगावल भइल। ई भोजपुरिया संस्कृति के विराटता बा कि गारी गावहूँ के परम्परा विकसित कइलख। बिआह-शादी में गारी गवाई नेग दिआला। अगर गारी ना गवाइल त जगहँसाई होला। अभी के दौर में त गारी गावेवाला एगो दल भी होला,जवन ढ़ोलक के थाप पर तिलक में, बारात में बढ़-चढ़ के माजा लुटत गारी देवेला-

"हम त मंगनीं सोना के कंगना, चांदी काहे लवले रे!
मार बहिन छिनरा के,गाँव के हँसवलख रे! ए तरे के गीतन में जवन हास्य रस के स्वरुप लऊकेला, ऊ बवाल ना रचे, उल्टे गुदगुदी बढ़ावेला।

उहवें अगर बिना गवले "बहिन छिनरा" कहा जाव त सावधान हो जाये के चाहीं, एकरा बाद मामला कोट-कचहरी के हो सकेला।

गारी देहल एगो संज्ञेय अपराध-

भारतीय संविधान में गारी देहल एगो संज्ञेय अपराध मानल गइल बा। अइसन अपराध कइला के बाद गैरजमानतीय धारा के अनुसार सीधे जेल जाये के नऊबत आ जाला। एकरा के शिष्ट संस्कृति "मान हानि" कहेला। माने केहु के इज्जत लूटल मान हानि के दायरा में आवेला। एकर बड़हन केस होला आ भगवान बचावस,अइसन नऊबत केहू के नाहिए आवे त ठीक बा।

ई अद्भुत संस्कृति हमनीं भोजपुरिया संस्कृति में ही नइखे। एकर प्रभाव पूर्वांचल के लगभग हर लोक संस्कृति मे पावल जाला। का मैथिली,का मगही,का अवधी भा का अंगिका-सब जगह एकर रुप लऊकेला।

एकर ई खासियत बा कि गारी गावे में एतना अधिकार मिलल बा कि जनकपुर के एगो हजामिन अजोध्या के राजकुमार के भी गरिआ सको- "हँसी-हँसी बोलेली नाइन बचनिया,बबुआ बोलऽ ना, एगो भाई साँवर, एगो गोर, काहे बोलऽ ना?" एह गीत के शब्दार्थ पर तनीं नजर डालल जाव-राजा भा राजकुमार के सोझा एगो सामान्य हजामिन के का औकात? बाकिर रिश्ता के हिसाब से दशरथ जी के पत्नी ओह हजामिन के समधिन हो गइली। अब हजामिन समधिन रानी समधिन के गरिआवे के अधिकार पा गइल बाड़ी। ऊ साँवर आ गोर के चर्चा कर के रानी के चरित्र पर अँगुरी उठा रहल बाड़ी।

धन्य बा ई रिश्तन में बन्हल हमनीं इहाँ के गारी संस्कृति। ई जब ले बा, तब ले भारत आ भारतीयता के जड़ के हिलावल मुश्किल बा। ईश्वर करस, ई बचल रहो। हँ, एगो बात, ई बची तबहीं, जब हमनीं के एकरा के जीअतार राखेब सँ। त आइल जाव, ई व्रत लिआव-समाज के अइसन रोचक तत्त्व के प्रति हमनीं जिम्मेवार हो के एकरा प्रति समर्पित रहेब सँ।

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया संस्कृति।

✍उदयनारायण सिंह,
वरिष्ठ लोक कलाकार।

भोजपुरी का प्रगतिशील धारा के प्रमुख कवि सिपाही सिंह 'श्रीमंत '

जब उनइस सव चउरासी-पचासी में मशरक के लोग जाने लागल कि हमहूँ कविता-उविता लिखिले, त एक दिन भोजपुरी-हिन्दी के सुख्यात कहानीकार, नाटककार आ समीक्षक स्व. नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' के छोट भाई प्रसंगवश बतवलें कि ओह घरी तूँ बहुते छोट होखबऽ, जब मशरक में अस्सी का दशक में बहुते बढ़ हिन्दी-भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल रहे। आयोजक-संयोजक रहलें डिप्टी साहेब सिपाही बाबू। सिपाही सिंह श्रीमंत। देश का कोना-कोना से कवि-साहित्यकार लोग जुटल रहे। श्रोता सब से पूरा फिल्ड खचाखच भरा रहे। बाद में पता चलल कि सिपाही बाबू ओह घरी मशरक (सारन) में ' बिहार राज्य प्रगतिशील लेखक संघ ' के अधिवेशन करववले रहस। बाद में उहाँ का बिहार सरकार का शिक्षा विभाग के अनुमंडल स्तर के उच्च पदाधिकारी भइलीं आ जहाँ-जहाँ गइलीं अपना मातृभाषा भोजपुरी आ ओकरा साहित्य के निर्माण, उत्थान, पहचान आ स्वाभिमान खातिर कुछ ना कुछ आयोजन नधले रहत रहीं। अस्सी दशक के आखिर में आ नब्बेवाँ दशक के शुरू में तरैया के बी ई ई ओ शिवपूजन पाण्डेय के सहयोग से पूरे सारन जिला का विद्यालयन में रामचरित मानस के अन्ताक्षरी के कार्यक्रम चलववले रहीं। जवना के सुफल भइल रहे कि मिडिल इस्कूल से लेके हाई इस्कूल तक का लइकन का पूरा रामचरित मानस इयाद हो गइल रहे। बनल 1962 ई. तक उहाँ के आपन नाम सिपाही सिंह 'पागल' लिखत रहीं। दरअसल उहाँ का मन-वचन-कर्म से विविधता में एकता, विषमता में समता, नफरत में भाईचारा आ आडम्बरी कर्मकांड के जगह प्रगतिशीलता के उपासक आ साधक रहीं। एही धून में समुझीं जे हरमेस पगलाइल रहता रहीं। एसी से उनकर उपनाम हो गइल रहे 'पागल '। बाकिर उनका अइसन विशाल हृदय के सौम्य, शालीन, कर्मठ, समय के पाबंद, कुशल प्रशासक के तार्किक वैचारिक आ शैक्षिक-शैक्षणिक स्तर के विवेकशील-प्रगतिशील व्यक्ति के उपमान 'पागल' साहित्य जगत का पचत ना रहे। एही से सन् 1962 ई. के एगो साहित्यिक आयोजन में बड़-बुजुर्ग साहित्यकार लोग उनकर उपनाम ' श्रीमंत ' राख दिहल। तब से साहित्य जगत उनका के सिपाही सिंह श्रीमंत के नाम से जाने-पहचाने लागल। उनकर प्रगतिशीलता खाली देखने भर तक सीमित ना रहे। उहाँ का एड़ीं से बड़ेंड़ी ले मतलब आपादमस्तक मन, वचन आ कर्म से प्रगतिशील रहीं। जवन लिखनीं उहे दिखनीं।

गुरुदेव स्व. जितराम पाठक जी के बरमहल उलाहना रहत रहे कि ' भोजपुरी काव्य लोक तत्तव-लोकगीत-लोकसंस्कार के

चक्रव्यूह में प्रमुख पार्लर हो गइल बा। ओकरा में पुरवा बेतार, आंचल के उड़ान, टिकुली के टिटकारी, ओठलाली के लयदारी, चोली-चुम्मा के चारदीवारी आ चुहुक चाम चेहरा का चकचहुनी में फँसा-धँसा के सकदम कर दिहल बा। ओकरा में निखालिस उरूआइल-बसिआइल-गुमसाइल-फोकराइल बात के बतंगर भर बनावल जात बा। जवना से ओकरा में जीवन के नया भाव-बोध नइखे आ पावत। ' एसी भाव-विचार के लेके ऊ आपन कविता लिखले रहस - 'पटरी ना खाई ' - ' तूँ बाड़ अइसन उजिआवन/ दुपहरिया में गीत भोर के गावत बाड़,/ लागल बाटे आगि, बइठि पगुरावत बाड़,/ मारि फसकड़ा बइठल बाड़ महकल अइसन,/ पगुरइब एने अब, त पटरी ना खाई।-----'

ई रचना हम सन् उनइस सव छिआसी में बी. ए. में पढ़ले रहीं । हमहूँ कुछ कविलोग के कविता-गीत ओही बसिआइल-फोकराइल रूप में सुन के अनसात रहीं कि श्रीमंत जी के कविता -' बनल रहे बिसवास ' सोझा आके खड़ा हो गइल-

"बनल रहे बिसवास बटोही, धीमा पड़े ना चाल।
मंजिल दूर, थथम के बइठल, भाई रे, बा काल॥
खाली सपना काम ना आई
बुनी पकड़ के चढ़ल गगन में
अइसन केहू नाम न पाई

--- --- ---

मन के जीते जीत बटोही, मन के हारे हार,
बल बटोर के बढ़त गइल जे, सेही पहुँचल पार।
जे कदराइल, से भहराइल, सहुरल ना ऊ लाल,
मंजिल दूर थथम के बइठल, भाई रे, बा काल॥'

ई सोच के कि मंजिल बहुत दूर बा, अब कुछ ना हो सके। एकरा से उबरल नइखे जा सकत। त इहे काहिलपन वाला सोच असली काल बा। मंजिल तक पावे के कुभावी वैचारिक बाधा बा। एह सोच से बिसवास का संगे निकलले पर सब संभव बा। आदमी जब जिनिगी का जतरा के दरम्यान अइसन चउमुहानी पर पहुँच जाला कि ओकरा आगे के राह सुझबे ना करे आ ओकरा दिसांस लाग जाला। ऊ भक्क हो जाला। ऊ जीवन का जतरा के जवानी काल में भी अउंघाए-सुते-बिसनाए लागेला। ऊ पुरान रूढ़िवादी अप्रासंगिक परम्परागत सोच में अझुराके अपना आगे का विकास के बात भुला जाला। तब श्रीमंत जी जइसन प्रगतिशील भावधारा के जीवंत जीवट वाला कवि ओइसन दिग्भ्रमित मनई के ललकारत आगे बढ़े खातिर प्रेरित करत लिखेलें -

' खड़ा होके जिनगी का बीच चउमुहानी पर
आदमी का सुतलो जवानी के जगाइले॥

--- --- ---

पत्थर के बना के भगवान सभे पूजेला
हाड़ चाम वाला भगवान भूखे मूएला।
दिन रात खट के जे मंदिर उठावेला
ओकरे के हउ देखीं सभे धकिआवेला।

--- --- ---

तबहूं जे चुप होके सह जाला रह जाला
ओकरा करेजवा में आग सुनुगाइले॥

श्रीमंत जी अन्याय, अत्याचार, अनाचार कदाचार आदि देख-सुनके गूंगी नाधे वाला मनई ना रहस। ऊ अप्रासंगिक, अबेवहारिक आ अतार्किक बात-बिचार आ कर्मकांड के परम्परा के नाम पर पाले आ आधुनिक विचारन के अपनावे से हिचके वालन खातिर एगो रचनात्मक सार्थक बौद्धिक-वैचारिक आंधी रहलें। बुद्धि-विवेक, विद्या, जनबल, मनबल आ धनबल से सम्पन्न श्रीमंत रहलें। ऊ नया निरमान खातिर पुरान पड़ल रीति-रिवाज आ भाव-विचार-विवेक के नया-नया कलंगी के निकले खातिर पाकल पतइयन के भहड़ावे के आग्रही रहलें। ऊ अपना ' आंधी' कविता में एही चीजन के फरिआ-फरिआ के जोर देके कहले बाड़न -

' गुमसुम गुमसुम तनिको ना भावे हमें
आंधी हईं आंधी, अंधाधुंध हम मचाइले।
नास लेके आइले कि नया निरमान होखे
नया भीत उठेला, पुराना भीत ढ़ाहिले॥

--- --- --- ---

बड़- ऊंच -लमहर रोके के जे राह चाहे
ओह लो का हस्ती के माटी में मिलाइले
छोटी-छोटी,नन्हीं-नन्हीं, हलुक हलुक मिले
ओके गोदी में उठा के आसमान में खेलाइले॥

भोजपुरी का एह प्रगतिशील धारा के सुख्यात कर्मजोगी कवि का व्यक्तित्व आ कृतित्व पर जब हम नजर दउराइले त दंग रह जाइले कि धन्य रहलें मातृभाषा के सजग सपूत सिपाही, मानवता के समर्थ उपासक आ भोजपुरी आंदोलन जगत में भामाशाह के उपाधि से नवाजे जाए वाला श्रीमंत जी।

हमरा समझ से व्यक्ति का बेवहार के अभिव्यक्ति ओकर व्यक्तित्व के बोधक ह त भाव-विचार के वाचिक भा लिखित अभिव्यक्ति ओकरा कृतित्व के द्योतक ह। सिपाही बाबू के बारे में लोग बतावेला कि उनकर जनम पुरनका सारन जिला के बैकुंठपुर थाना में पड़ेवाला मूंजा नाम के गाँव में बाबूजी आदित्य नारायण सिह आ माई बासमती देवी के परिवार में 8 मई, सन्

1923 ई. के भइल रहे। जे माई-बाबूजी आ चाचा सूर्य नारायण सिह सहित सउंसे परिवार आ पड़ोस के आँखिन के पुतरी रहलें। परिवार आ जवार उनका के दुलार से शिवजी के नाम से पूकारत रहे। उनकर प्रारंभिक पढ़ाई-लिखाई त गाँवे का पाठशाला में शुरू भइल। बाकिर जब मैट्रिक के परीक्षा माथे आइल तले सन् 1942 ई. में स्वतंत्रता संग्राम तेज हो गइल आ इहो गाँधीजी के ' अंगरेजों भारत छोड़ो आंदोलन ' में कूद पड़लें। बहुत दिन ले छूप के क्रांतिकारियन के मदद कइलें। अंगरेज लोग लाख चाहल ऊ ओह सबका हाथे ना लगले। सिपाही बाबू के बिआह बचपने में शारदा देवी से हो गइल रहे।एही दरम्यान उनकर दाढ़ी बढ़ल से बढ़ले रह गइल। फेर मैट्रिक कइला के बाद आई. ए. आ बी.ए. करे खातिर राजेन्द्र कालेज, छपरा में उनकर नाम लिखाइल। जहँवा से ऊ सन् 1944 में बी.ए. करे में लगलें। उहँवा उनका तीन गो अइसन गुरुजी लोग के सानिध्य मिलल कि उनकर बेवहार, विचार, विवेक , शिक्षा आ भासा-साहित्य आदि के अइसन परिष्कार - संस्कार भइल, जवन उनका सउँसे जीवन के आलोकित कर दिहल। एक ओर जहँवा उनका भीतर राष्ट्रप्रेम आ प्रगतिशील चेतना भोजपुरी प्रान आ फिरंगिया के महाकवि प्रिसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के पाके पल्लवित-पुष्पित भइल त भाषाई संस्कार आ सादगी के सहज संचार आचार्य शिवपूजन सहाय जी के पाके पोढ़ भइल। काव्य-कला का हर एक बारीक पक्ष त पहुँच करवले हिन्दी साहित्य जगत के सुख्यात कवि-साहित्यकार जनार्दन झा ' द्विज ' जी। रामाज्ञा प्रसाद सिह ' विकल ' ठीके लिखले बाड़न -

पानी का बहे के किनारा मिल जाला,
लत्तर का लतरे के सहारा मिल जाला।
जेकरा जेकरा जिनगी के रुझान जेने बा,
ओकरा ओनहीं बहे खातिर धारा मिल जाला॥'

इहँवा त सिपाही बाबू का आगे बढ़े खातिर तीनों विभूतियन से किनारा, सहारा आ धारा तीनू एकट्ठे मिल गइल।

एकरा बाद ऊ सन् 1951 ई. में पटना के ट्रेनिग कालेज से डिप.इन- एड. कइलें। बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के जी. बी. बी. कालेज * आज के लंगट सिह कालेज) से हिन्दी से एम. ए. कइलें। फेर सन् 1953 ई. में पटना विश्वविद्यालय से शिक्षा शास्त्र में एम. एड. के परीक्षा पास कइलें। सन् 1953 ई. में ही उनकर बिहार शिक्षा सेवा में चयन हो गइल आ ऊ उहँवा के विद्यालय अवर निरीक्षक हो गइलें। कई जिला में आपन सेवा देला के बाद अंत में फिर मुजफ्फरपुर जिला के शिक्षा विभाग के डिप्टी इंस्पेक्टर हो के अइलें। ओह दरम्यान भोजपुरी भासा-साहित्य आ शिक्षा के क्षेत्र में कएगो महत्त्वपूर्ण काम भइल। बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई के मंजूरी मिलल। सन् 1973 ई. में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के गठन भइल। सन् 1978 ई. में बिहार सरकार के ओर से भोजपुरी अकादमी के गठन भइल। एह सब से उनकर बहुते रचनात्मक जुड़ाव रहे। भोजपुरी पाठ्यक्रम बनवावे आ बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य आ गद्य संग्रह के प्रकाशन में जब आर्थिक संकट खड़ा भइल त एक मुश्त पइसा मुहैया कराके छपवावे में मदद कइलें।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक सदस्य रहलें। सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन में उनका के साहित्य मंत्री आ सन् 1980 ई. वाला सतरहवां अधिवेशन में महामंत्री बनावल गइल। अपना एही महामंत्रित्व काल में अकस मात् हृदय गति रुक गइला के कारन 15 जनवरी, 1980 के उनकर देहांत सर्विस काल में ही हो गइल आ उनका देहांत के उपरांत हमरा नानाजी श्री कैलाशपति सिह उनका जगह पर बदली होके अइलन। जिनका से श्रीमंत जी के कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी, सादगीपूर्ण जीवन, आ अपना मातहत के प्रति सद्व्यवहार के किस्सा सुनले बानी। उनका बारे में विस्तार से बतावे वाला विभूति मिललें डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव जी। रिपुसूदन बाबू के अनुसार जब बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई के बेवस्था हो गइल आ पं. गणेश चौबे जी किहां से किताब लिआके पाठ्यक्रम निरमान समिति पाठ्यक्रम बना के पाठ आ पुस्तक तय कर दिहल त पुस्तक छपवावे खातिर अर्थ के संकट खड़ा भइल। ओह दरम्यान डॉ. प्रभुनाथ सिह आ रिपुसूदन बाबू के आर्थिक मजबूरी बतावला पर श्रीमंत जी अपना टेबुल का दराज से आपन निजी रुपेया दिहलें जवना के बल पर पद्य आ गद्य संग्रह के प्रकाशन का काम के सिरी गनेस भइल। अइसन केतने उदाहरन बा, जवना के वजह से उनका भोजपुरी आंदोलन आ प्रकाशन से जुड़ल लोग भामाशाह कहत रहे। अइसन उदाहरन उनका के लेके अनेक बा। जब ऊ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री रहलें त उनका आ कृष्णानंद कृष्ण का संयुक्त सम्पादन में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि कहानी संग्रह ' आ डॉ. विवेकी राय का संयुक्त सम्पादन में ' भोजपुरी निबंध निकुंज ' के प्रकाशन भइल। जब कार्यसमिति तय कइलस कि डॉ. शंभुशरण आ कुलदीप नारायण'झड़प' का संयुक्त संपादन में भोजपुरी संतकाव्य के एगो पुस्तक ' निरगुन बानी ' नाम से सम्पादित होई त डॉ. शंभुशरण जी बिदक गइलें कि द्व आदमी का संपादन के का

जरूरत बा। बाकिर श्रीमंत जी का हस्तक्षेप के बाद ऊ तइयार हो गइलें। बाकिर फेर उहे अर्थ संकट के मामला सामने आइल त श्रीमंत जी एक हजार रुपेया प्रकाशन खातिर ई कहके दिहलन कि पहिले किताब छपे, बाद में सम्मेलन हमार पइसा करजा मानके सधा दी। अइसन रहे उनकर व्यक्तित्व।

सिपाही बाबू शुरूए से सारन जिला आ प्रमंडल के हिन्दी आ भोजपुरी भासा, साहित्य आ संगठन का गतिविधि में सक्रिय रहस। सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दसवां अधिवेशन, महाराजगंज के ऊ सम्मानित अध्यक्ष बनावल गइलें। इनके देखरेख में सम्मेलन का संविधान के प्रारूप बनल आ लागू भइल। राहुलजी, महेन्द्र शास्त्री जी आ श्रीमंत जी के बाद भोजपुरी लेखन आ आंदोलन के दिसाईं ऊ सक्रियता डॉ. प्रभुनाथ बाबू में देखल गइल।

अब जहाँ तक उनका साहित्यिक लेखन आ कृतियन के बात बा त ऊ जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के ओर से निर्भीक के संपादन में छपल ' भोजपुरी साहित्यकार : साक्षात्कार ' पुस्तक मे डॉ. रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव के श्रीमंत जी बतवले बाड़न कि ऊ छव बरिस का उमिर में सन् 1934 ई. में ही पहिले पहिल भोजपुरी के कविता लिखले रहस जब प्राथमिक पाठशाला के विद्यार्थी रहस। ओकरा बाद फेर 1945 ई. में एगो कविता लिखलें। राजेन्द्र कालेज के गुरुजी लोग का सम्पर्क में अइला के बाद आ सन् 1950 ई. से लगातार भोजपुरी आ हिन्दी में कविता, कहानी, निबंध, समीक्षा आदि लिखल गइलें।

सन् 1950 ई. में सताइस बरिस का उमिर में उनकर पहिल भोजपुरी कविता संग्रह ' उषारानी आ पहिल हिन्दी काव्य संग्रह ' नाश और निर्माण '

छप गइल रहे। जब ऊ लंगट सिंह कालेज से हिन्दी में एम. ए. करत रहस ओही घरी सन्1951 ई। में उनकर दोसर हिन्दी कविता संग्ह ' भूखी भिखारिन ' छपल रहे। सन् 1953 में ही उनकर हिन्दी नाटक ' द्वापर की क्रांति ' छपल। ओही साल भोजपुरी परिषद ,मैरवा (सिवान) से भोजपुरी काव्य संग्रह ' आँधी ' छपल। सन् 1950 ई. में छपल हिन्दी काव्य संग्रह ' नाश और निर्माण 'अतना ना प्रसिद्ध भइल कि सन् 1972 में ओकर दोसर संस्करण 'ध्वंस गान : निर्माण गीत ' नाम से छपल। सन् 1973 ई. में उनकर प्रगतिशील भोजपुरी कविता संग्रह ' जवानी के जगाइले ' छपके आइल त साहित्य जगत में तहलका मच गइल। अबहीं तक ओकर तीन-तीन संस्करण छप चुकल बा। दूसरका संस्करण सनः 1978 में आ तिसरका उनका दिवंगय भइला के बाद सन् 2002 ई. में। श्रीमंत जी बालोपयोगियो कविता कम नइखन लिखले। सन् 1975 ई. में उनकर बाल कविता संग्रह ' बजी बाँसुरी ' छपल रहे। शिक्षा विभाग, मुजफ्फरपुर के पदाधिकारी रहत घरी ऊ गुरुवर डॉ. अवधेश्वर अरुण जी के निर्देशन में पी-एच. डी. के उपाधि खातिर ' थरूहट के लोकगीत ' विषय के लेके पंजीयन करवले रहस। बड़ी मनोयोग से शोध कार्य में जुटलो रहस आ कामों कइलें। बाकिर आकस्मिक निधन के चलते ऊ उपाधि से वंचित रह गइलें। उनका दिवंगत भइला के बाद उनकर सुयोग्य सपूत स्व. भारतेश्वर बाबू उनका कुल्ह किताबन के प्रकाशित कराके भोजपुरी-हिन्दी साहित्य जगत के समृद्ध त कइबे कइलन , एकरा संगे-संगे एक तरह से अपना बाबूजी के सम्यक् सरधांजलि देके पितृ ऋण से उरीन हो गइलें।

स्व. सिपाही सिंह श्रीमंत जी का व्यक्तिगत आ कृतित्व के सम्यक् मूल्यांकन अभी बाकी बा। जवना के अध्ययन-अनुशीलन से भावी पीढ़ी का बहुते प्रेरणा आ ज्ञानरूपि अक्षय भंडार के प्राप्ति भी होई। हम ओह महान भोजपुरिया सपूत का चरन में आपन माथ नवाके ई शब्दांजलि, भावांजलि आ सरधांजलि समर्पित करत अपना के बड़भागी महसूस करत बानी।

✍ डॉ जयकान्त सिंह'जय'

इहे औकात बा

टूटि के शीशा छिटाइल बस इहे औकात बा
आदमी समुझे न अतने जिन्दगी के बात बा

आँखि में कुछ किरकिरी कुछ दर्द कुछ लाली भरल
रेत की आन्ही के पछुआ के दिहल सौगात बा

आँखि ना झपके बरिस चउदह लखन लिहलें कसम
ए तपस्वी का बदे जस दिवस तइसन रात बा।

लौटि के सावन गइल बरखा क उहवाँ काम का
नैन से जहवाँ हमेसा हो रहल बरसात बा।

साँझि खोजीं, रात खोजीं, भोर, दुपहर सब घड़ी
हल मिलल ना प्रश्न बनि के ठाढ़ रोटी भात बा।

कुछ घड़ी बइठीं बिताईं साथ में 'संगीत' के
कवि कहाईं लिखि पढ़ाईं जे हिए जजबात बा।

✍**संगीत सुभाष,**
प्रधान सम्पादक, सिरिजन

#मुक्तक

सोना थाल परोसल ब्यंजन, हाथ उठी ना- खाइबि कइसे?
उपजल मने हुलासे गाना, होंठ खुली ना- गाइबि कइसे?
निरा कल्पना, देखले सपना होई ना कुछऊ जीवन में,
राजमार्ग कतनो सुबिधा दी, पाँव उठी ना- जाइबि कइसे?
✍**संगीत सुभाष**

नजरिया क मारल

नजर से नजर के नजर में सम्हारल।
बचल बा कहाँ कब नजरिया क मारल।

झुकलि बा नजर कुछ लजाइल-लजाइल
सरेआम टोपी गइलि बा उतारल।

भले ठोकि छाती गरजि लीं तरजि लीं
समइये बताई कवन के उखारल।

बुझाता नजर के मरल उनकी' पानी
तबे काल्हि बस्ती गइलि बा उजारल।

न लोभी किरोधी न डाही कुटिलपन
नजर बालकन के चहे सब निहारल।

नजर के हलाहल अमिय मस्त मदिरा
जरूरत प अपना जगत खूब ढारल।

✍**संगीत सुभाष,**
प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

खर, पतहर के गरज परल तब छिपलें जाइ चुहानी में।
लीपि- पोति चिक्कन भइला पर सुतलें आइ दलानी में।
बहुरुपिया के भेख बना के चाहे हड़पि लिहीं सगरे,
ए बिचार से कइसे भेंटी बखरा कबो पलानी में?

रब के मंजूर बा

मिली उहे जे रब के मंजूर बा
फिकिर उनका जे मशहूर बा

कभी जे रहे नियरे लउकल ना
अब मदहोशी में उहे मगरुर बा

समझ न आइल कइसे दूर भइल
अब भी ना बुझाइल कि उ दूर बा

परखत रहल हमरा जिनगी के उ
जेकरा बोले के ना इचको सहूर बा

जिनगी के कोसत हम ना चलनी
मगर उनकर जिनगी त काफ़ूर बा

करीं सिलसिला हिफाज़त के हम
शायद उहो हमरे तरह मजबूर बा

✍डॉ मधुबाला सिन्हा
मोतिहारी,चम्पारण

आखिर

करि के सभ तरहा से कंगाल आखिर
फेकलस फिर रहबरी के जाल आखिर

ठोस कुछऊ नाहि सुने के मिलल अबतक
तबहूँ बाजल बा केतना झाल आखिर

चलत यारी रहुवे हवा के संगहि फिर
होखऽ ही के रहल आँख लाल आखिर

राह में लागल रहे बहुत कुछ से हराहिसि
अइसही नाही थमल बा चाल आखिर

एक सवाल के न मिलल रहे कवनो उत्तर
एहि बहाने भी याद बा ऊ साल आखिर

सोझबक दिल के न मन परावे पड़ेला
याद से ही पुछि लेवेला हाल आखिर ।

✍दीपक सिंह
(कोलकाता)

मनवा

करताड़ऽ रोज बाउर ताबरतोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मनवा ।।

जवन करे के तवन भुलाइल ,
जियरा जोखिम में अझुराइल।
सगरो समय अनेरे जाता ,
नीमन बाउर नाहिं चिन्हाता।
अहा !देखी ल हरि कृपा के कोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मनवा ।।

गुणवा त हर जगे पुजाला ,
बाउर देखलो बाउर कहाला ।
आ जाई जब मन में होश ,
अनघा मिलिहें सुख संतोष ।
गुण सुख ,दोष देला अखियाँ लोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मननवा ।।

जग में शेखी-शान जे झारल ,
अवगुण जिनिगी भरो निहारल ।
घुमि के अपना ओर न ताकल ,
नाहीं सत संगति में पाकल ।
ऊहे जग में कहाला डा़कू -चोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मनवा ।।

जे सुधरल खुद में समाइल ,
ऊहे सभ साधु -संत कहाइल ।
आपन सगरो सुख भुलाइल ,
नेक नियत से नेक कमाइल ।
दोष दुसरा के डा़ली बिसभोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मनवा ।

जहिया आपन होई सुधार ,
सुधरल लागी सभ संसार ।
हर में हरि के बोध हो जाई ,
सब केहु लउकी आपन भाई ।
कहे "बाबूराम कवि "कर जोर मनवा ।
कइसे होई सोच भितरी अँजोर मनवा ।।

✍**बाबूराम सिंह कवि**
ग्राम -बड़का खुटहाँ ,पोस्ट -विजयीपुर (भरपुरवा)
जिला -गोपालगंज (बिहार)

बचपन बचावे बदे

आजु सउँसे दुनिया में लरिकन के तादाद सभसे अधिका बा, बाकिर सभसे ज्यादा उपेक्षा आ साँसत के शिकार लरिके बाड़न स। संचार माध्यम सहज लरिकाईं छीनिके असमय जवान बनावे के उतजोग करत बाड़न स, त प्रयोगवादी पढ़ाई बेमतलब बस्ता के बोझा बढ़ाके कई किसिम के तनाव दे रहल बिया। बापो-महतारी के दिलचस्पी लरिका के नेक इंसान बनावे में कतई नइखे, ऊ लोग त ओकरा के डॉक्टर-इंजीनियर भा कामयाब रोबोट बनाके खूब धन-दउलत उगिलेवाली मशीन बनावल चाहत बा। ना त स्कूल में मूल्य-आधारित शिक्षा दियात बा, ना घरे-परिवार में जीवन मूल्य के कवनो मोल बा ।नतीजतन साहित्य-संस्कृति, संस्कार-बेवहार से कटल लरिकन के बालपन एगो मशीन बनिके रहि जात बा ।

आजु एह तथ के खुलासा हो चुकल बा कि लरिकन के अगर शुरुए से महतारी भाषा में शिक्षा दिहल जाउ,त ऊ सर्वाधिक कारगर हो सकेला ।बाकिर एकरा के ताखा पर राखिके शिक्षा के माध्यम बनावल गइल बा अँगरेजी के ।नतीजा होला--ढाक के तीन पात!लरिका मातृभाषा से त कटिए जात बाड़न स, अँगरेजिओ में पैठ नइखन स बना पावत आ विषय में गहिर आउर गझिन समझ बनावे के त सवाले नइखे उठत। दुविधा में ना माया मिलत बा, ना रामे से भेंट होत बा। अइसना स्थिति में बालक आ बालसाहित्य के विकास भला होखबो करे, त कइसे?

भोजपुरी के त बाते दीगर बा, हिन्दियो में बालसाहित्य के स्थिति सराहे जोग नइखे। इहाँ तक कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जब हिन्दी साहित्य के इतिहास लिखलन, त ओहमें बालसाहित्य के कवनो चरचा ना कइलन। एकरा से उलट, बांग्ला, मराठी, गुजराती जइसन भारतीय भाषा में लेखक के तब ले मान्यता ना मिलेला, जब ले ऊ गुणात्मक आ परिमाणात्मक दृष्टि से रेघरिआवे जोग बालसाहित्य के सिरिजन ना कऽ लेला। एह से उहाँ के हरेक नामी-गिरामी साहित्यकार बालसाहित्य रचल आपन दायित्व बूझेलन। बाकिर हिन्दी-भोजपुरी में ई बात कहाँ! इहवाँ त बालसाहित्य के बचकाना साहित्य बूझल जाला आ बालसाहित्य कार के बचकाना साहित्यकार! दोसरा ओरि, इहो जुमला दोहरावल जाला कि बालसाहित्य लिखल बहुत कठिन काम हऽ आ अइसन मोसकिल काम सभका बूता के बात नइखे ।

बाकिर लरिकन के मन त तुकबंदी में रमेला। जनमते केआँ-केआँ के सुर-लहरी गूंजे लागेला। चाहे रोवत लरिका के रिझावे के होखे भा सुतावे के होखे, 'हालऽ-हालऽ बबुआ ' से लेके एक से बढ़िके एक सेसर लोरी लोकजिनिगी में सिरिजात आ गवात आइल बाड़ी स ।चान-सुरुज, मामा-नाना, ऊँट-गिरगिट---कहे के माने ई कि कुदरत के हर करिश्मा से लरिकन के जान-पहिचान तुकबंदी का जरिए करावल जाला, जवना में अजूबापन का संगें-संगें हंसी-विनोद के पुटो होला। जइसे-जइसे उमिर आ

समुझ बढ़ेला, तरह-तरह के खेलगीत लरिकन के मन मोहे लागेलन स ।ओका-बोका तीन तड़ोका ,ताई-ताई पुरिया, गुड्डा-गुड़िया, घोघो रानी, घुघुआ माना उपजे धाना, चिउंटा हो चिउंटा, अटकन-मटकन दही चटाकन, तार काटों तरकुल काटों, आवेली बिलारो दाई, चाक डोले चकबंबक डोले, ऊंटवा गिरगिटवा तमाकू पियेला, ए बनवारी खोलऽ केवाड़ी,आम छू अमरइया छू, हुर्र कबड्डी---आ एह किसिम के सैकड़ों खेलगीत लोकजीवन में भरल परल बाड़न स, जवन आस्ते-आस्ते अब भुलात-बिसरत जा रहल बाड़न स ।इन्हनीं में जवन जीवंतता आ सहजता बा, ऊ'ट्विकल-ट्विकल लिटिल स्टार ' में कहां!बाकिर आजुकाल्ह के उत्तर आधुनिक बनावटी जिनिगी (पंप एण्ड शो)जिए वाला समाज एकरा मरम के का बूझी!

भोजपुरी में बहुत कम एह दिसाईं उतजोग भइल बा ।भोजपुरी के पहिल बालपत्रिका 'नवनिहाल'के प्रकाशन छपरा से भइल रहे, जवन द्व साल ले चलिके बन्न हो गइल। एगो पत्रिका 'दुलारी बहिन ' कदुआपाड़ा, उड़ीसा से शुरू भइल रहे, बाकिर उहो ढेर दिन ना चलि पावल। कोलकाता से 'भोजपुरी माटी 'के आ बलिया से 'पाती 'के एक-एगो बाल विशेषांक छपल रहे। देवरिया से प्रकाशित 'समकालीन भोजपुरी साहित्य 'में एह पांती के लिखनिहार से बालगीत के एगो स्तंभ शुरू भइल रहे, बाकिर ऊ नियमित आगा ना बढ़ि पावल।'उगेन'(सीवान)में बालसाहित्य छपे के सिलसिला चालू भइल रहे, बाकिर ऊ पत्रिके बन्न हो गइल। एह बीच सूर्यदेव पाठक पराग, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा पीयूष आ किछु हमार लरिकन खातिर भोजपुरी में किताब अइली स, बाकिर कुल्हि मिलाके, भोजपुरी में बालसाहित्य के स्थिति सराहे जोग नइखे ।

बालसाहित्य रचे खातिर रचनिहार के बालमनोविज्ञान के कुशल पारखी होखे के चाहीं। चीझ-बतुस के आजुकाल्ह के लरिकन के नजर से देखे-परखे के परी। खुद के बुतरू बनवला का संगहीं विषय के अत्याधुनिक आ विज्ञान सम्मत ज्ञानो जरूरी बा। विषय अइसन चुने के चाहीं ,जवना में बालमन रमत होखे। ज्ञान बघारे आ उपदेश थोपेवाली चीझु लरिकन के फुटलो आंखि ना सोहाली स। शिशु, बालक आ किशोर---तीनों उमिर के लरिकन खातिर अलगा-अलगा स्तर के साहित्य रचाए के चाहीं। अइसन साहित्य, जवन नवनिहालन के मन के रंजित करे, आपन संघतिया बना लेउ आ खेले-खेल में कवनो अइसन रोशनी दे जाउ, जवन जिनिगी के अन्हार-उजियार में फरक करा सके आ आदमीयत के मोल के एहसास करा सके।

आजु किसिम-किसिम के दबाव-तनाव-साँसत से कुम्हिलात लरिकन के आंतर में हास-हुलास के फूल खिलाके सुसंस्कारित करेके जिम्मेवारी हरेक रचनाकार के बा ।

जरूरत एह बात के बा कि भोजपुरी भाषा के पढ़ाई स्नातकोत्तर स्तर से ना, प्राथमिक स्तर से होखे आ एकरा खातिर आपन उत्तरदायित्व संकारत प्रख्यात आ नवहा सिरिजनहारन के अपना दमदार सिरिजन का साथे आगा आवे के चाहीं। लरिकन खातिर मुकम्मल भोजपुरी बालपत्रिका के जरूरत आजु शिद्दत से महसूस कइल जा रहल बा ।जबले बालसाहित्य, बालसाहित्यकार आ नवनिहालन के सही माने में तरजीह ना दिहल जाई, जबले बुतरुन के ओठ पर मुसुकी आ हिया में हंसी के हिलोर ना उठी, तबले कवनो समाज के विकसित, समृद्ध आ प्रगतिशील कइसे कहल जा सकेला? भोजपुरिया समाज के जिम्मेदार रचनिहार लोग के, लरिकन खातिर, लरिकाईं बचावे खातिर लगातार आ जियतार रचहीं के परी ।जे रची, उहे नू बाँची!आईं, अइसन उतजोग कइल जाउ कि:

'बचपन के बचपना अउर शैतानी बनल रहो,

खलकूद,धींगामुश्ती, नादानी बनल रहो,

नटखट-अल्हड़ हँसी खिलाके खिल-खुल जाईं जी!

बचपन अगर बचावे के बा,फूल बचाईं जी!'

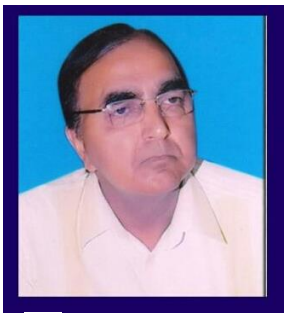

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

नेह में छोह काहे

हमरा आँखिन से अइसन कुछ लउकल जे से हमार करेज कुहुक के रह गइल आ मुँह से चूँ तक ना निकलल। जइसे बसन्त में सुखल गाछी पर बइठ के कोयल कंठहीन हो जाले ओहि तरी कंठहीन हो गइनी हम उनका के देखि के। कुछ देर तऽ लागल कि हमरा आँखि के भरम हऽ बाकिर ई भरम के पर्दा जुरते हट गइल जब ऊ हमरा सोझा आके चल गइली। हम सैकड़ो के भीड़ में खाली उनके के देखत रहलीं बाकी ऊ हमरा ओरि पलक झपकहूँ भ ना देखली। साइद हमरा के ऊ भुला गइल बाड़ी।

साँझ ढले के रहे, हम बाजार से जल्दी निकलल चाहत रहीं। काहे कि नादे प गोरु खुरी काटत होइहें सन।कुवार के महीना अपना ढलान में रहे आ दिन अब ओछ होत रहे। पछिया हवा सिसक के देह में लागे तऽ देह गनगना जाव। काहे कि शरदऋतु आपन गोड़ पसारत रहे। हम सब्जी के झोरा साइकिल में टँगनी आ पैडिल मारत बाजार से बाहर निकल गइनी। बाज़ार हमरा गाँव से एक कोस दूर रहे। गाँव के कच्ची रहता का ओरि जब हमार साइकिल घुमल तऽ हमरा माथा में घुमड़त बात के चीरत मन में सवाल-जवाब के सिलसिला चल पड़ल-

" का.. साँचो ऊ हमरा के ना पहिचनली हऽ। बाकी कइसे हो सकत बा कि ऊ हमरा के भूला जास।"

"जमाना के फेर हऽ, कवनो ताज्जुब ना। असहूँ बालेपन के बात केकरा इयाद रहि जाला, जे उका इयाद होखे।"

"ना-ना, हम मान नइखी सकत कि ऊ हमरा के भुला गइल होखस। हम कवनो सपना के पात्र ना हईं जे भोर होते बिसर जाला।"

" कबो-कबो समय के चक्का सोझा लउकत कवनो हक़ीक़तो के सपना बना देवे ला बाकी हतिना बेचैनी के का बात। आखिर उनका से का मतलब बा ? उनका से कवना बात के लगाव बा ? ऊ तऽ अब दोसरा के संगिनी बारी। उनका बारे में सोचलो धरम के अनुसार तहरा ख़ातिर पाप बा।

"पाप-पुन्न के तराजू पऽ प्रेम के नइखे तउलल जा सकत। इहाँ त देखे के नजरिए अलग होला। इहाँ त भाव के राज बा, बुद्धि के इहाँ के पूछेला।"

उनकर चेहरा कुम्भलाइल रहे, मन चिंतित रहे, तन में फुरती ना रहे जवन रहे के चाही, आँख में काजर ना रहे, ओठ पर लाली ना रहे, दुनु भँव के बीचे बिंदी ना रहे, मांग सुनसान रेगिस्तात भइल रहे। आखिर ई सब काहे? आ कवना कारण ? ई सब के उत्तर जान लेवे के तीव्र टिसुना मन में उमड़-घुमड़ के अतिरपित रह जाय।

इहे उधेड़-बुन में कब घर आ गइल हम बुझ ना पवनी। साइकिल हम चलावत रही कि साइकिल हमके लेके आवत रहे सगरी राहे समुझ ना आइल आ रहता बीत गइल। साइद जब आदमी घोर चिंतन में रहेला तऽ सफर आ समय कब कट जाला ई समझ में ना आवे। हम हाली-हाली गाय आ बाछी के नादे से हटा के दोसर खुटा पर बन्हनीं। अब कवनो काम में मन ना लागत रहे। बाबू जी खाली घूर-घूर के हमरा के देखीं। उहाँ के सोची कि आज ई एतना तेजी में काहे बा ?

जस-जस रात गहिर होखे हम उहे बात के गहराई में घिरल जाईं जवन बाजार में भइल रहे। खाना खइला के बाद हम अपना कमरा में आ गइनी। बिछावन पर गिरते अपना बीतल इयाद के खोह में खो गइनी। हमरा कान में केहू के आवाज़ गूँजे लागल आ आँख मुँदा गइल।

+++ +++ +++

"सनेही तू हर रोज हमार पीछा जन कइल करऽ। गाँव के केहू देख ली त झूठे बखेड़ा खड़ा हो जाई। हम तहरा के केतना बार कह देले बानी कि ई इश्क के भूत अपना माथा से उतार दऽ आ... ।"

मिथिला के बात पूरा ना भइल रहे कि हम अपना छाती पर लिखल उनकर नाम फिल्मी स्टाइल में कुर्ता फार के देखइनी। जवन बिलेड से चिर के हम अपना हाथे लिखले रहीं।

" मिथिला हम तहरा ख़ातिरि कुछो कर सकत बानी। खाली तू एक बेर प्यार के हामी भर दऽ। हम दुनिया के सगरो खुशी तहरा आँचर में भर देम। बस तू हमरा प्यार के अपना लऽ।"

मिथिला के आँखिन के आकार बढ़ गइल, उनकर मुँह खुलल के खुलल रह गइल। तनी देर बाद ऊ अपना नरम अँगुरी से हमरा छाती पर लिखल आपन नाव के छुवत कहली।

" तहरा दरद ना भइल हऽ का सनेही ? जब बिलेड से अपना सीना के चिरत हमार नाम गोद लिहल हऽ।"

"हूँ..! दरद.. ई का कहत बारू मिथिला ! भला तहार नाम लिखला में दरद कइसन।ई तऽ प्यार के मिठास हऽ जवन केतनो बड़ दरद के महसूस ना होखे देवे ला।"

हम ई बात हँस के कहनी तऽ मिथिला लजा गइली आ मुस्किया के हमरा सीना प जगह प गरम फूँक मरली जहाँ उनकर नाम लिखल रहे आ पलक झपकते उहाँ से भाग गइली। अब हमरा मन मे प्यार के उफान हिलोर मारे लागल रहे। हम उनका फूँक से परेम के अथाह समुंदर में डूबे - उतराए लगनी।

परेम अइसन संजीवनी हऽ जवन मानव जीवन के ऊ रूप के जीवंत कर देवेला जवना में आदमी ब्रह्मांड के ऊ परेम रूप के दर्शन करेला जहाँ कुछो पावे के इच्छा न रह जाला। बस एक दूसरा में तल्लीन हो जाये के पिआस बढ़त जाला। अउर ओजा से परेम के सही दर्शन मिलेला जहाँ जाति-पाति, धरम-अधरम आ रूप- रंग के कवनो भेद ना रह जाय। मन नवजात बछड़ा नीयन कुलांच मारे लागेला आ परेम के पाग में सराबोर रहल चाहेला।

अब हम हर रोज मुलाकात के बहाना खोजीं। अगर कहईं जाहूँ के होखे तऽ पहिले मिथिला के मोहल्ला में हम जाईं आ उनका दुआरी के सोझा आपन साइकिल के घन्टी बजा दीं। ऊ हमार घन्टी के आवाज नीके जान गइल रहली। ऊ अपना दुआरी पर आ जास आ अपना मुसुकी से हमार जतरा के मंगल कर देस आ हम अपना राहे निकल जाईं।

हर बार के तरह एक रोज मिथिला से भेंट भइल आ ऊ हमरा से बाते बात में एगो बात पूछ दिहली।

"सनेही अगर हमार तहार मिलन ना भइल तऽ तू का करबऽ।"

"अइसन काहे कहत बारू मिथिला, मिलन काहे ना होई ! अगर घर वाला के राजा मंदी ना मिली तऽ तू हमरा साथ भगबू नु ? हमरा से वादा करऽ काहे कि हम तहरा बगैर नइखी रह सकत आ हम तहरा के ऐजा से कहीं दूर लेके चल जाएम।"

अइसन सवाल के हम अपेक्षा ना कइले रही मिथिला से। उनका कहल बात के ई जबाबो ना रहे जवन हम कहनी। काहे कि हर परेम के इहे अंत होला जवन साइद मिथिला ना चाहत रही।

"अच्छा छोड़ऽ सब बात ! आज तू हमरा के एगो वचन दऽ ?"

" का..? वचन.. ई काहे ख़ातिरि। हम समझनी ना तहार मतलब।"" मिथिला के बात से हम घबरा गइनी।

"पहिले वचन दऽ तब हम बताइब।"

उहो अपना बात पर अड़ गइली।हम उनकर बात कबो ना काटी बाकिर आज मन में अंदरे अंदर एगो डर बने लागल।हम डराते हामी भर देनी।"

"ठीक बा हम वचन देत बानी तू जवन कहबू हम करब।"

"अगर तू हमरा के अपना जान से ज्यादा चाहेलऽ तऽ गलत कदम कबो मत उठइह। काहे कि हमनी के प्यार पवित्र बा आ इहे पवित्र प्यार के तहरा किरिया बा। जवन होइ होखे दिहऽ। ना हम तहरा के भूल पाएम ना तहरा परेम के। बाकिर घर-समाज के बिना इजाजत के हम कवनो कदम नइखी उठा सकत।"

हम एकदम सुन्न हो गइनीं उनकर ई बात सुनके। परेम में त्याग आ विश्वास हम सुनत रही बाकिर आज हमरा सोझा ऊ मूर्ति बइठल रहे। मन तऽ करत रहे कि ऊ मूर्ति के कवनो मंदिर में रख दी आ ओकर पूजा करत रही बाकिर ऊ मूर्ति के ना कवनो चढ़ावा से मतलब रहे ना पूजाये से। ऊ मूर्ति तऽ समर्पण आ त्याग के रहे जवन आपन सब कुछो लुटाके कुछो ना लुटवले रहे।

परेम समय के गति के रोकल चाहेला जबकि समय अपना गति में गतिमान रहेला। समय परेम के परखल चाहेला आ परेम समय के बान्हल बाकिर परेम के एगो अवधि होला आ इहे अवधि में केहू अपना परेम के पा जाला तऽ केहू के परेम ओकरा इयाद के खाई में ऊ समा जाला। हम प्रेमी तऽ रहीं बाकिर हमार परेम उहे इयाद के खोह में गुमनाम हो गइल जहाँ खाली अपना ख़ातिरि सच आ दोसरा ख़ातिरि भरम पैदा करे जोग बिचार रह जाला। मिथिला आ हमार मिलन ना हो पावल काहे कि जाति, समाज, आ संस्कार के जंजीर उनको के जकड़ लिहलस आ हमरो के। मिथिला के मीठ इयाद हम आजो अपना हियरा में सजा के रखले बानी। उनकर बिआह हो गइल हम आगे के पढ़ाई बदे शहर आ गइनी।

+++ +++ +++

चिरइयन के चहचहाहट से हमार आँख खुलल। भोर में सूरज के ललकी धाही से रात के पड़ल सीत के बून्द मोती जस चमकत रहे। हम रात भर अपना इयाद के गाड़ी में सवारी कइले रही। अब बेचैनी त रहबे करि नु। सुबह के नित किरिया के बाद हम नाश्ता कर के घर से बाहर आ गइनी। आ साइकिल से उहे राह पकड़नी जवन मिथिला के घरे जात रहे।

मिथिला के घर के पास पहुच के हम बिचार करे लगनी कि कवन बहाना से हम मिथिला से मिली। इहे अधर-बुन में घन्टो बित गइल आ सूरज मुड़ी पर आ गइल। जाड़ जस-जस अपना जवानी में आवेला दिन छोट होला आ रात लमहर। तरकीबन तीन घन्टा बाद मिथिला छत पे दिखाई दिहली। उनका के देखते हम

साइकिल के घन्टी बजा देनी उहो अचंभा से हमरा के देखली लेकिन पहचनली ना। ऊ हमरा के देखत रही लेकिन उनका ओर से हमरा कवनो साफ प्रतिक्रिया ना मिलत रहे। हम दुबारा घन्टी बजा देनी आ अबकिर तनी देर तक बजइनी। अबकी ऊ हमरा के ध्यान से देखली उनका चेहरा पर एगो हलुक खुशी के रेखा दिखल आ हम आगे बढ़ गइनी। हम ओहिजा चल गइनी जहवा हम मिलत रही। उनकर मोहल्ला गाँव के पुरुब छोर पर रहे या ओजा से खाली खेते-खेत दिखे ओहि छोड़ पर एगो पुरान मंदिर रहे माई दुर्गा के आ ओजा एगो छोटहन पोखरा रहे आ उहे पोखरा के बाँध पर हमनी के मिले के जगह।

हमरा पहुँचले पाँच मिनट न भइल होइ कि मिथिला आ गइली। आज बरिसहन बाद भेट भइल रहे लेकिन ऊ निडरता ना दिखत रहे उनका में जवन पहिले दिखे तनी डेराइल तनी सकुचाइल आ तनी घबराइल नज़र आवत रही मिथिला।

हम उनका लगे जाके कहनी- "काहे घबरात बारू मिथिला उहो हमरा से।" ऊ आँख ना मिला पावत रही। फिर हम टोकनी- "आ ई कवन हाल हो गइल तहार आखिर का बात बा। हमके बतावअ मिथिला हमके सब कुछ बता द$ तहार ई रूप हमरा से नइखे देखल जात।"

एतना कह के हम मिथिला के ओर बढ़ गइनी आ उनकर चेहरा अपना तरफ कर के उनका आँख में देखे के कोशिश कइनी। उनकर आँख लोर से भरल रहे ऊ जबरन अपना लोर के रोकले रही लेकिन हमार स्पर्श पा के अपने- आपके रोक ना पवली आ हमार कान्हे पर आपन सर रख के सिसक-सिसक के रोये लगली। हम बहुत समझइनी तब जाके ऊ चुप भइली आ उनकर बात शुरू भइल-

"सनेही काहे कुरेदल चाहत बाड़? हमरा अतीत के। हम अब ऊ नइखी रह गइल जवन पहिले रही। हमरा जीवन के सगरो रंग बिखर गइल बा अब हमरा लगे खाली सूनापन आ मनहूसियत बा। हमार जिनगी वीरान बा जहवा कवनो सरगम के तार नइखे जैसे संगीत के राग बिखरे। हमके हमरा हाल पे छोड़ द$।"

"कइसे छोड़ दी तहरा के तहरा हाल प तू अइसन ना रहलु फिर तू अइसन काहे बनत बारू। हम तहरा के अइसन नइखी देख सकत मिथिला नइखी देख सकत।"

"आज पूरा चार बरिस हो गइल ऊ बात के जब हमार हाथ में मेहदी आ मांग में मनदीप के नाम सेनुर लागल। हमार जिनगी बदल गइल पूरा तरीका से। तहरा के भुलावल मुश्किल रहे लेकिन मनदीप से नाराजगी ना। हम कुछे दिन में मनदीप के सगरो बात बता देनी काहे कि हम उनकरा विश्वास के साथे घात ना कर सकत रही। मनदीप हमरा भावना आ प्यार के समझले आ हमके पूरा मौका दिहले अपना आप के समझे के। धीरे-धीरे हम मनदीप के अच्छाई आ सोभाव में तहरा के देखे लगनी। फिर हमरा उनका से लगाव होखे लागल आ हम अपना आप के उनका मुताबित बदल लिहनी। हमरा कवनो प्रकार के तकलीफ़ मनदीप के बर्दाश्त ना रहे। ऊ हमरा के सगरो सुख सुविधा दिहले जवन संसार के सगरो दाम्पत्य जीवन के चाही। धीरे-धीरे समय कइसे बीतल पतो ना चलल। हमार पैर भारी भइल रहे हमनी दुनु के खुशी और बढ़ गइल रहे। जब हम हास्पिटल रही आ मनदीप अपना ऑफिस त$ हमार प्रसव पीड़ा उठल आ डॉक्टर हमके इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कर दिहलस। ओकरा बाद उनका पास फोन भइल ऊ जल्द बाजी में ऑफिस से निकल के अपना मारुति से हॉस्पिटल आवत रहले तबे उहे वकत कवनो बड़ गाड़ी मे टक्कर भइल आ ऊ ओहिजा स्पॉट डेथ कर गइले। ई खबर हमरा से छुपावल गइल। करीबन चार महीना उनका एके गो रट रहे कि हमरा लड़की चाही बाकी ऊ अपना बेटी के मुह तक ना देखले। आज बेटी दु बरिस के हो जाई ठीक आज के दिन ओकर जन्म आ उनकर।" एतना कह के मिथला फिर रोए लगली।

पता ना काहे मिथिला के बात हमरा करेजा पर बज्र जइसन लागल। मिथिला के साथे अइसन काहे हम मने-मन भगवान से इहे पूछी। हम मिथला के चुप करवनी। फिर उ हमरा से पुछली।

"अच्छा तू अपना बारे में कुछ ना बतवल$। आज कल तू का करत बारअ। शादी हो गइल नु लड़का बा कि लड़की।"

हम उनका बात पर जोड़ से हसनी।ऊ हमार हँसी देख के मुस्किया देली आ बोललीं-

"तू एकदम ना बदलल न... उहे बेबाकी बा तहरा में। हम का बोलनी अइसन की तहरा हँसी आइल ह।"

हम आपन हँसी रोकत कहनी- "तू बोललू कि लड़का बा कि लड़की ओहि बात पर। अरे अभी हमार बिआह नइखे भइल। हम MBA कर के अभी पुणे में कम करत बानी।"

"अच्छा अब चलतानी हम, साम के जरूर अइह$।"

मिथिला के चल गइला के बाद हम घन्टो ऊ जगह प बइठल रही मन मे अनेको प्रकार के बिचार चलत रहे। बाकिर सब भरम ही पैदा कर देव हम अपना का निर्णय लेवे के चाहत रही अब हमरा कुछ समझ मे ना आवत रहे। हमू अब घर के ओर चल देनी। बाबू जी के स्वास्थ धीरे-धीरे गीरत रहे माई जब तक रहल बाबूजी ठीक रही बाकिर ओकरा गुजरला के बाद बाबू जी में बहुत बदलाव आइल। हम बहुते कोशिस कइनी की बाबूजी के अपना पास पुणे लेके चल जाइ बाकिर उहाँ के जाए से मना कर दीं। हमरा हर छव महीना पर गावें आवे के पड़े दस से पन्द्रह दिन ख़ातिरि। इहे सोचत हम घरे आ गइनी। जब साझ भइल त हम मिथिला के लड़की ला बाजार से गिफ़्ट लेके उनका घरे चल दिहनि।ओजा पहुचनी त$

खुशनुमा माहौल रहे। मिथिला अपना काम मे लागल रहली उनका साथे उनकर भाई आ माई व्यस्त रहे लोग ज्यादा लोग के ना बोलावल रहे कुछ खासे आदमी रहले। हम एक जगह बइठ गइनी तबे एगो बच्ची हमरा पास आई आ बोलल।

"अंकल अंकल ई गिफ़्ट हमरा ख़ातिरि बा।"

हम ओकर तोतला आवाज सुन के हँस पड़नी आ ओकरा के अपना गोदी में उठा लेनी।

"ह बेटा ई गिफ़्ट आपके हऽ अच्छा आपके नाम का बा।"

"हमार नाम आरोही ह।"

"अरे वाह बहुत सुनर नाम बा ई लऽ आपन गिफ़्ट। अब हमरा के मीठी दऽ।" तब तक मिथिला हमरा पास आ गइली।

"ई बदमाश तहरो के ठग लेलस नु सनेही।" मिथिला अपना लड़की के गोदी में उठावत बोललली।

" अरे अइसन बड़ले बारी की केहू ठगाइल चाही इनका से।" दुनु आदमी हँस पड़नी जा। ई हँसी पता ना मिथला के चेहरा से कहा हेराइल रहे। उनकर माई हमनी के गौर से देखली।

अब सगरो कार्य-कर्म होखे लागल। पहिले केक कटाइल आ कुछ नाश्ता भइल। धीरे-धीरे लोग खाना खाके जाये लागल। हमके मिथिला पता न काहे के रोकेले रहे।जब सब कोई चल गई तऽ उनकर घरवाला लोग के साथ हमू खाये बइठनी। पूरा पार्टी भर आरोही हमरे पास रहल आ हमरे गोदी में सूत गइल। खा के जब सभे उठल तऽ हम जाये के कहनी तबे मिथिला के माई हमरा के अपना पास बोला के कुछ कहली हम सोच में पड़ गइनी। उनका घर से निकल के थोड़ा आगे बड़नी की मिथिला पीछे से टोक देली हम मुड़नी त उनका साथ में हमार जाकिट रहे। ऊ जाकिट देत कहली।

" अभिओ तहार आदत नइखे छूटल ना कहियो कवनो समान छोड़ देवे के। अच्छा सनेही फिर भेट होइ अच्छा से जइहऽ।"

हम एक टक मिथिला के देखत रही। शरदऋतु के चांद पूर्ण रूप से आकास से अमृत बरसावत रहे आ ऊ अमृत के बरखा में खाड़ मिथिला स्वेत साड़ी में कवनो देवी से कम ना लागत रही।हम अपना आप के रोक ना सकनी दिल के बात जबान पर लिया के पूछ दिहनी-

"मिथिला का तू आपन जिनगी हमरा सङ्ग दुबारा शुरू कइल चहबू। ई मत समझिहऽ कि तहरा हालात के फायदा उठावत बानी बा तहरा पर तरस खा के कहत बानी। आजो तू हमरा ख़ातिरि देवी बारू आ पहिलहूँ हमरा ख़ातिरि देवी रहलू। भले रिस्ता हमरा सङ्ग ना रखल चाहअ हम तहरा के चहले बानी आ हमेसा चाहब।"

मिथिला के आँख शर्म से झुक गइल फिरो ऊ हिम्मत कर के बोललली-

" ई कइसन रिसता कहाई सनेही। लोग का कही आ हम केकरा के मुह देखएम आ ना देखएम।"

"लोग तऽ सब जगह बोलेला अगर अच्छा करबू तबो बाउर समझे वाला समझी आ बोली। बाउर करबू तऽ ओकर बाते दोसर बा लेकिन ऐजा लोग से हमरा कवनो फरक नइखे पड़े के बस तू का सोचत बारू हमरा ओसे फरक पड़े के बा। ओह वक्त तहार माई हमरा के ई बात बोलली आ हमू तहरा से ई बोलल चाहत रही अब तहरा साथ मे तहार जिनगी बा तू जइसे चाहअ ओइसन बनावऽ।"

एतना कह के हम आगे बढ़ गइनी। तबे मिथिला के आवाज़ गूँज़ल हम पीछे मुड़नी तऽ मिथला हँस के बोललली-

"कालहे आरोही से मिले जरूर अइहअ ऊ जवन कहि उहे होई।"

हमू हँस के हामी भर देनी- "ठीक बा, लेकिन आरोही ना बोली तब।"

मिथिला हँसत बोललली- "तब हम सोचम।"

हम अपना घर के राहे मुड़ गइनी दिल मे ख़ुसी तऽ रहे बाकिर मन मे एगो सवाल अभियो घुमत रहे- "नेह में छोह काहे?"

✍विवेक सिंह
सिवान (बिहार)

हँसी के बिखेर दS

भगवान पर भरोसा रखीं। ऊ जब जब तूरेलें तब तब सुनर सुनर गढ़बो करेलें। बादल जब टूटेला त धरती पर पानी बरसेला। सगरो धरती लहलहा उठेली। फसल जब टूटके धरती पर गिरेला त अनाज बीज बनेला। बीज टूट के नवका अंकुर फूटेला तब पौधा बनेला। एगो माई जिनिगी मौत से लड़ के प्रसूति के पीड़ा सहके टूट के बालक के जनम देवेली। घनघोर अन्हार मेटेला त सोनहुला भोर होखेला।

हमनी जब टूटे लागीं तब सोचे के चाहीं कि हमरो इंतिहान के समय चल रहल बा। कौपी लिखाता। जब कौपी जँचाई तब परीक्षाफल से आनंद उठावल जाई। जेतना बड़का परीक्षा ओतने बड़का परीक्षा देवे के होला।

2020में संसार रुपी समुंदर के मंथन चल रहल बा। एह साल में अभी तक ख़ाली विष निकल रहल बा। जब पूरा विष निकल जाई तब धीर धरीं, निश्चित अमरितो निकली।

ठंढी के दिन आ गइल बा। असो त सभनि के पइसा के गरमी त झरिए गइल बा। आदमी के अकड़ त निकलिए गइल बा।

जाए दीं, छोडीं, जिनगी में कुछ नयापन ले आवे के काम कएल जाव । भोरे भोरे योग प्राणायाम आसन व्यायाम से दिन के शुरुआत होखे। लंबा जिनगी जीए खातिर खोराक कम क दिआव । पानी दुगुना, हँसी चौगुना, भगवान के नाम दसगुना लेवे के बा। जे भगवान के निअरा रहेला ओकर हर पल सोनहुला होखेला।

एगो आउर बात कहे के चाहत बानीं, अपना भीतर बचपन के हरमेसे जिदा रखी। खूब खेलीं, कूदीं, हँसीं, मुसकाईं, नाचीं, गाईं। खुश रहि सबके खुश रखे के कारोबार करीं। एहू काम में बड़ा फायदा बा। दोसरा के जे मेंहदी लगावेला ओकरो हाथ लाल हो जाला।

बिखरे दीं होंठ पर हँसी के फुहार के, बँटला से बढ़ जाला जायदाद प्यार के।

✍आशा सिंह
मोतिहारी
पूर्वी चंपारण बिहार

बेवफाई

पना हर धड़कन पर नाम उनकर लिख लिहनीं,
अइसन करत ना जननीं कि हम कुछ गलत कइनीं।
ऊ साथ निभावे के वादा क के हमसे बदल गइलें,
बेवफाई से ऊ अपना, हमरा के कुछ सबक दे गइलें।

साँझ सवेरे रोज जेकरा नामे हम आपन करत रहनीं,
ऊ आज केहू आउर के संगे बाँचत बाड़ें प्रेम कहानी।
उनकरा इयाद में अँखियाँ आजो रहता हमार भींजल,
रह-रह लउकता उनकर ऊ मने-मने हमरा पर हँसल।

कहाँ गइल ऊ बंद मुँह से अँखिया से सभ बात कहल,
काहें मेंटल ऊ प्यार जवन हमनीं में भइल कबो रहल।
आदत तहार बा रिश्ता बना के नाता सभका से तूड़ल,
आदत हमार बा नाता नेह के अपना दुश्मनो से जोड़ल।

रहिया आजो निहारता अँखिया उनकरा लवटि आवे के,
बाकि इरादा बुझाता उनकर अबहीं हमरा के तड़पावे के।

✍**राम प्रकाश तिवारी ठेठबिहारी**
ग्राम पोस्ट: भटकेसरी
थाना जलालपुर जिला छपरा सारण
बिहार

इहे भोजपुरी हऽ

ओसारा आ कोठरी के ताखा में तेल के ढिबरी ह
दलान ह, दुवार के चाह ह, चाह पर बिसकुट ह भोजपुरी।

चउपाल के बतकही ह, बिना मांगल सलाह ह,
डीह आ दतुअन ह, इनार के पानी से नहाइल ह भोजपुरी।

बरम बाबा के स्थान आ संझा माई के किरिया ह,
पितरन के नेवतल ह, भउजी के गोड़ लागल ह भोजपुरी।

बसुला ह, खंती ह, कुदार ह, खुरपी-गँड़ासा ह,
हेंगा पर चढ़े के आ ट्यूबेल में नहाए के,आनंद ह भोजपुरी।

पोखरा ह, गड़ही ह, गेहूँ के ऊम्मी ह, होरहा ह,
सतमेरवन अनाज के सातू ह, लिट्टी आ चोखा ह भोजपुरी।

कल्हुआनी में गुड़ के कड़ाह ह, गाय के पगुरी ह,
गर्मी में आइस-पाइस आ दोल्हा-पाती के खेल ह भोजपुरी।

लंठई ह, अनाज के ओसवन आ घर के लेवरन ह,
बचपन में बकइयाँ चलल आ कउड़ा के तापल ह भोजपुरी।

ओक्का-बोक्का खेल अऊरी दीवाली के दलिद्दर ह,
गोधन के कुटाई ह, पानी उदह के मछरी मारल ह भोजपुरी।

गाय के गोबर से लिपाइल भोजपुरी के ई आंगन ह,
आंगन के मर्यादा ह,आपन मातृभाषा ह भोजपुरी।

✍**सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय,**
जबलपुर।

भूलि गइलन

होखते बिआह भूलि गइलन बाबू माई के,
अँचरा में मुँह लुकवावेलन लुगाई के ।

सास ससुर जी मंदिर मस्जिद
तीरथ साला साली,
बाप मतारी कुकुर कुतिया
दिनभर सुनस गाली ।
बाँह ध के खेद दिहलन ,
भाई भउजाई के।। ....

छोड़ छाड़ दिहलन कुल्हि हितई
करिके बहुत बहाना ,
दुसरे तीसरे दिन जाये लगलन ,
ससुरारी सढ़ुआना ।
बड़ा मान जान करस ,
मेहरी क भाई के ।। ....

अइसन पाठ पढ़वली बेगम
अइसन कइली नखरा ।
बेगम का कहला में पड़ि के
मांगे लगलन बखरा ।
कुछो समुझवला पर बोलस,
खिसिआई के ।।

✍कृष्ण मुरारी राय
टुटुवारी, बलिया

रउआ बाड़ा मशहूर

गाँव गली में बानी रउआ बड़ा मशहूर ,
इहे बा निहोरा मत पिहीं ए हुजूर ।।

सुनिला कि पी के रउआ रोज घरे आइला ,
घर में घुसे से पहिले खूबे गरिआइला ,
सबका के बूझीं रउआ मूँजिआ के झूर।।..
इहे बा..

जब से शराब बंद भइल बा बिहार में ,
रउआ जा के पिअत बानी रोजे ओह पार में ,
दिहन स सिपहिया कहियो देहिया राउर थूर।।
इहे बा ..

अबो से सुधारीं रउआ खुदे अपने आप के ,
बेटा बेटी राउर ना दुलार पवलन बाप के ,
रहत बानीं रउरा एतना मदवे में चूर ।। ...
इहे बा....

सूति उठि करीं रउआ दारुए से कुल्ला ,
कुछु समुझवला पर मचाईं खूबे हुल्ला ,
नशा में देइला बेटा बेटी लो के थूर ।।
इहे बा....

बहुते खराब ह शराब रउआ जानि लीं ,
लागता 'मुरारी 'एक दिन इहे राउर जान ली,
जिनिगी बा लमहर ढंग से जिहीं ए हुजूर ।।
इहे बा....

✍कृष्ण मुरारी राय
टुटुवारी, बलिया

मुक्तक

आदमी आदमी से जुदा हो गइल,
आदमी आदमी क खुदा हो गइल ।
बाप से बेटवा तब्बे से अलगा भइल ,
जब से बेटवा शादी सुदा हो गइल ।।

सजना के अँगना

सजना के अँगना के फूल हम गुलाब के
सजना के अँगना सून बिन गुलाब के।

माथे के बिदिया निहारे मोर साजन रोज
गम - गम महकेला गजरा गुलाब के।

सेजिया प बेलिया - मोगरा बिछल बाटे
पिया आज दिहले गुलदस्ता गुलाब के।

ननदी के छेड़छाड़ देवरा के नेह देख
मन मोरा हरसे जइसे पंखुड़ी गुलाब के।

चारों ओर हँसी खुशी चहुँओर बजना
सब केहू कहे कनिया फूल हऽ गुलाब के।

आम मोजराइल सगरे महुआ फूलाइल
देखि बसंत अगराइल बगिया गुलाब के।

का कहीं सखी तोहसे ससुरा के बतिया
अंग-अंग महके जइसे सुगंध गुलाब के

✍कनक किशोर
राँची (झारखंड)

कइसे मनाईं

कइसे मनाईं कोंहाइ गइल जिनिगी ।
अस कवनों अँतरा लुकाइ गइल जिनिगी ।

भुखिया कतहीं जिनिसिया कतहीं ।
पनिया कतहीं पियसिया कतहीं ।
पेटवे के पीछे बिकाइ गइल जिनिगी ।

जंगरा कतहीं जजतिया कतहीं ।
मटिया भइल मेहनतिया कतहीं ।
कोल्हुआ में उखि अस पेराइ गइल जिनिगी ।

दिनवाँ कतहीं दियनवां कतहीं ।
तर तर चूवे पसीनवाँ कतहीं ।
रसरी अस कसि के बराइ गइल जिनिगी।

दुलहिन कतहीं दुलहवा कतहीं ।
डोलिया कतहीं कहरवा कतहीं ।
रहिया बीचे घेराइ गइल जिनिगी ।

अँखिया कतहीं, अयनवाँ कतहीं ।
मनवाँ कतहीं, मयनवाँ कतहीं ।
सँझिया होते धराइ गइल जिनिगी ।

घरवा कतहीं दुअरवा कतहीं ।
मथवा कतहीं मऊरवा कतहीं ।
खोजते खोजत नियराइ गइल जिनिगी ।

गड़िया कतहीं, पहियवा कतहीं ।
खींचे वाला गड़िहवा कतहीं ।
जोहते जोहत में ओराइ गइल जिनिगी ।

✍दयाशंकर तिवारी ।मऊ ।

उर की अभिव्यञ्जना

पिया परदेश जाके भुलाय गइलें हो।
भइलें आँखी से ओझल हेराय गइलें हो।।

पिया बिन जिनगी ई भइले बीरनवाँ।
देखनीं कुआर में ऊ टूटल सपनवाँ।।
कवनो सौतिन पे जाके लुभाय गइलें हो।
भइले आँखी से ओझल हेराय गइलें हो।।

सजना के देखते ही लागल सनेहिया।
बोललें जो प्यार से त जागल सनेहिया।।
नेह बरसा के काहें भोराय गइलें हो।
भइलें आँखी से ओझल हेराय गइले हो।।

जब - जब कूकेले वन में कोयलिया।
तब - तब याद आवे ढूँढे पायलिया।।
पिया दूर देश जाके भोराय गइलें हो।
भइले आँखी से ओझल हेराय गइलें हो।।

✍पं.संजीव शुक्ल 'सचिन'
मुसहरवा (मंशानगर)
पश्चिमी चम्पारण, बिहार

ठिठुरत गरीब

कहानी जाड़ से ठिठुरत गरीबन के सुनाई का।
रजाई में घुसल हउअऽ दरद तहरा बुझाई का।१

दुआरे से भिखारी मारि के लउरी, भगा दिहलऽ,
कबो जग में केहू के आज तक कइलऽ भलाई का।२

भइल बेटा दिआइल ताव मोछी शान से बड़िए,
सुता के मारि दिहलऽ कोंख में, जनबऽ बिदाई का।३

बुढ़ापा में न आपन साथ केहू तब दरद होला,
भला बेजान हड्डी से, कबो आँटा गुथाई का।४

लगा दऽ शब्द के मरहम, असर जल्दी नजर आई,
अकेला लोग खातिर तऽ दुआ कइसन दवाई का।५

बिछड़ के जी रहल बानी, बताईं आजु हम कइसे,
मुहब्बत यार ऊ पहिला, कबो दिल से भुलाई का।६

कबो पाती मुहब्बत में लिखल नाहीं ऊ का जानी,
कि का होला मुहब्बत में मिलन कइसन जुदाई का।७

✍सन्तोष कुमार विश्वकर्मा "सूर्य"
तुर्कपट्टी, देवरिया, (उ.प्र.)

आश्चर्य

जब हम केंचुआ रहनीं त लोग
हमरा के खण्ड-खण्ड क दिहल।।
जब हम बानर रहनीं त लोग
गुलेल चला के घाही क दिहल।।

चिरई भइनीं, मारल आ मुआवल
जबरन पिजड़ा में बंद क दिहल।।
काट के दरद सहत फूल भइनीं, लोग
भौंरा बन के लूटल, तुरल फारल।

सबके साँस देबेवाला पेड़ भइनीं
त लोग हमरा के काटि दिहल।।
थक हार के जब हम लुढ़कत लुढ़कत
पत्थर हो गइनीं तब आश्चर्य!!!

लोग हमरा के भगवान मान के पूजा करे लागल।।
जब पशु रहनीं, दूहल, जोतल लोग,
अन्त में काटि-कटवा दिहल।।
बेरोजगार, ईमानदार भटकत रहीं,

सहारा ना, लोग गारी दिहल।।
मानवीय सेवा में लागल रहीं,
लोग हमरा के पागल कहल।।
पागल नाहिन अकेल भटकीं,

हमरा के लावारिस कहे लागल।।
इंसान बने के कोसिस कइनीं,
लोग चोर-बेईमान कहे लागल।।
थाक-हार के रावण, कौरव, कंस भइनीं
आश्चर्य!!! दिवाकर लोग हमरा के नेता,
अभिनेता, प्रणेता माने लागल।

दिवाकर उपाध्याय,
रामगढ़,सिवान,बिहार,

मन करेला

केकरा ना परदेश से घरे जाये के मन करेला !!
पर्व त्योहार परिवार संगे मनावे के मन करेला !!

दूर देश में आके आदमी हो गईल एकदम बेदशा ,
ना केहू बा मनावेवाला ना कोहनाये के मन करेला !!

मन के गगरी भरल बिया नेह-छोह अपनापन से ,
मिले रवुआ जइसन केहू त छलकावे के मन करेला !!

घर हमरा गावँ के एकदम हो गईल अब अकेला,
ये शहर ताहर दिहल सब कुछ लौटावे के मन करेला !!

ये जिनगी तू हमरा के ले के अईलू अइसन मोड़ पर,
ना तहरा से रूठे के ना अगराए के मन करेला !!

घूम लेहनी हम पूरा दुनिया पर मन के तड़प न मिटल,
रे माई तोहरा गोद में फेर से लोटाये के मन करेला !!

नूरैन अंसारी
ग्राम - नवका सेमरा
पोस्ट - सेमरा बाज़ार
जिला - गोपालगंज (बिहार)

कलम आ शासन

जब जब कलम प पहरा होई
राज जरुर कवनो गहरा होई,
जनतंत्र के जे जतने लेवे नाम
ऊ सरकार ओतने बहरा होई।।

जब जब कलम रोकाइल बा
जनतंत्र के मांगि धोआइल बा,
सत्ता के अहमी आगि में जानीं
मानवता के पाँखि नोचाइल बा।।

सत्ता में मानुष अमानुष जब होले
तनि के सोझा ई कलमिए बोले,
सत्ता के अँकुशा में रहनीं ना रहबि
सासत त हमरा से थर थर डोले।।

सच्चाई के हम सियाही में घोरनीं
घनानंद के घमण्ड के हमहीं खोरनीं,
कौटिल्य रुप धरिके एही धरा प
मगध के महिके हमहीं तोरनीं।।

हम हरदम आँखि लड़वले बानीं
सत्ता के असली चेहरा देखवले बानीं,
कबो ना हरनीं कबो ना हारबि राय
हरदम असली औकात बतवले बानीं।।

✍देवेन्द्र कुमार राय

रसिक जी के मुक्तक

ढेला ओइँछि आपन दुख के,
करऽ पुरनका साल विदाई ।
सुख-समृद्धि संतान प्रफुल्लित ,
नया बरिस नूतन छवि छाई।1।

बीत गइल ऊ बात बिसारऽ ,
आगे पाँय बढ़ावल जाई ।
का राखल बा मुँह लटकवले ,
सबहिन के समुझावल जाई ।2।

चोखा खा के ऊब भइल बा,
अब लोगन के चोखा चाहीं |
काया रोग रहित बा सभके,
अब लोगन के पोखा चाहीं |3|

आगे बढ़िके काम न होई,
बाछा बैल हरिस अवगाहीं |
बपसी बलु खोभाड़ अगोरस,
बबुआ रामझरोखा चाहीं |4|

पढ़ि के मन में अनुराग उगे,
अस पाठ पढ़ावल नीमन बा ।
जवना जुगुती सभ लोग जगे,
अस बात बतावल नीमन बा।5|

सच पूछि त पीर भरे मन से ,
उधियान सरीसहिं खौलत बा ।
चिपका उनुका क हिया भीतरे ,
कुछ बात बढ़ावल नीमन बा ।6|

✍कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक"
बैंगलोर, कर्नाटक

अमरेन्दर के चौपाई

कातिक बीतल आइल अगहन।
खेत बधारी पाकल बड़हन।।
दृश्य लगे देखत मनहारी।
हरियर पीयर धान कियारी।1।
कान्हे गुर्ही हँसुआ हाथे।
सजनी साजनजी के साथे।।
धनिया पिया करे बनिहारी।
काटे धान धरे पलिहारी।2।
बान धरे धनि सीधा सोझा।
कसि कसि के पिय बान्हे बोझा।।
ले उठाय सिर भर अँकवारी।
जा खरिहानी दुलकत नारी।3।
पीट पाट घर संपति आई।
साल समत के सार कमाई।
खर पुआर के लागत घूरा।
धान कूटि के चिउरा चूरा।4।
आँखि कटीली मृगनयनी सम।
लोच कमर के डारि लवंग सम।।
डारत नयनन मसि जस कजरा।
गुमट केश गहुआवत गजरा।5|
छैल छबिली चाल मतंग सम।
लोच कमर के डारि लवंग सम।।
अधरन लाली गाल गुलाबी।
तरुणी चंचल शान रुआबी।6|
चमकत मुखड़ा दुति सरंग सम।
लोच कमर के डारि लवंग सम।।
कर में मेंहदी पगे महावर।
नाक नुकीली बरन के साँवर।7|
नखड़ा नाज़ुक सुर मलंग सम।
लोच कमर के डारि लवंग सम।।
चन्दन तन पर धानी चुनरी।
डारत मांगहि सेनुर सुनरी।8|

✍अमरेन्द्र कुमार सिंह
आरा , भोजपुर बिहार

भोजपुरिया माटी

भोजपुरिया माँटी पावन ह माँटी ए भाई।
पैदा करे धुरन्धर बेटा-बेटी खाँटी ए भाई।।

रहन-सहन आ रीति इहाँ के भोजपुरियन के गहना।
ढारि पसेना महेनत-कस बनि माने श्रम के कहना।।

देखि लगन जग दाँतन अँड़ुरी काटी ए भाई।
पैदा करे धुरन्धर बेटा-बेटी खाँटी ए भाई।।१।।

बीर कुँवर सिंह जस लड़ाका राजिन्दर जस पढ़वइया।
ठाकुर भिठारी, मिसिर महेन्दर जस गितिया
लिखवइया।।

धरिक्षन -अन्जन जइसन थाती के परिपाटी ए भाई।
पैदा करे धुरन्धर बेटा-बेटी खाँटी ए भाई।।२।।

चाल-ढाल सब गँवई बाटे, जिनगी सहज -सलोना।
भोजपुरी माई के अदरें, रहें कवनियों कोना।।

इहवाँ के भावे चोखा अउरी बाटी ए भाई।
पैदा करे धुरन्दर बेटा-बेटी खाँटी ए भाई।।३।।

✍माया शर्मा,
पंचदेवरी,गोपालगंज(बिहार)

गांव प्रबंधन समिति

गाँव के पूरब दखिन के कोन पर धप धप उज्जर द्वु महल्ला कोठी। गजाधर चौधरी के निवास स्थल। नाम - सुख सागर।

गजाधर बाबू मुखियापति। नावाडीह पंचायत के मुखिया श्रीमती सुनीता देवी के पति। खुद अपने मुखियापति के अलावा भोजपुर जिला परिषद के उपाध्यक्ष।

ई परिचय त द्वुनो बेकत के भइल। अब मिलीं सभ परिवार से।

छोटका भाई दद्दन चौधरी नावाडीह पैक्स के अध्यक्ष। भतीजा करण चौधरी के नाम से गा्व के जन वितरण प्रणाली के अनुज्ञप्ति। बेटा संतन सिह विधायक प्रतिनिधि अउर युवा जदयू के राज्य सचिव।करण चौधरी के औरत श्रीमती ललिता चौधरी गाँव जलछाजन समिति के अध्यक्षा । करण चौधरी के बेटा मनरेगा कार्यकर्ता।

पंचायत सेवक श्री शिवजी तिवारी अउर मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक राधेश्याम प्रसाद गजाधर चौधरी के माननीय वार्षिक मेहमान। श्री तिवारी के जिम्मे पूरा गाँव के सही ग़लत मनरेगा कार्ड के संधारण के जिम्मेवारी के साथे ग्रामसभा के खानापूर्ति के औपचारिकता के पूरा करावे के जिम्मेवारी।

गाँव के विभिन्न संस्था के सत्यापन हेतु पहुँचल बीडीओ साहब के नावाडीह में एक ही दरवाजा पर सब समिति के सदस्य मिल गइलन। ऊ गजाधर बाबू के प्रशंसा करत कहलन- राउर त आदर्श गाँव बा, कतहीं कवनो झंझट ना। ना त हर गाँव में मारामारी के नौबत लाग जात बा।

गजाधर बाबू बीडीओ साहब के जात खा गाड़ी में एक बोरा बासमती चावल अउर एक बोरा रहर के दाल रखवावत पाकिट में एगो मोट लिफाफा रखत बोललन कि सोमवार के आके ब्लाक पर मिल लेब। हुजूर के नज़रे इनायत बनल रहे, ध्यान राखब।

बीडीओ साहब के अनुशंसा पर गाँव प्रबंधन समिति नावाडीह के जिला में प्रथम स्थान देत मुखिया श्रीमती सुनीता देवी के शाल अउर प्रशस्ति पत्र देके जिलाधिकारी द्वारा सम्मानित कइल गइल। साथहीं नावाडीह के आदर्श गाँव के सम्मान से नवाजल गइल।

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

बदनामी

अबहिन बुधनी के उमिरिए का रहे, बस एगारह बरिस | अबे खेले खाए के उमर रहे, अबे शादी के जोड़ा भी पहिरे के सहूर ना तबले बियाहे हो गइल | ना कुछु लूर ना कुछु सहूर,, बियाह करे चउका बइठलि त घूघ में साँसे उबियाए लागल | का करो बेचारी घूघ में से मुँह निकारि के जोर जोर से हाँफे लागलि | देखि के सब मेहरारू हँसे लगली |

ऐजू उमर के शादी,, पहिलहीं बुधनी के बाप सत्तन कहि दिहले रहलें कि शादी त अबे हो जाता लेकिन गवना सात पर होई | दूलहा साभा के उमर भी कमे रहे,, बुधनी से खाली दू बरिस जेठ,, माने अभिन उहो ऐजुये रहलें | लेकिन समय का बीतत देरी कहाँ लागेला | देखते देखत पाँच बरिस के दिन कवनेंगा बीति गइल पते ना चलल | अब त रोजे सत्तन अउरी सत्तन बो बतियावे लोग कि बीच में अब खाली दू गो गोधना बीती कि बबुनिया ससुरा चलि जाई | सत्तन बो त कबो कबो एक ढार रोइयो देसु |

धीरे धीरे गवना के उछाह बढ़त रहे | बुधनी में भी अब ढेर कुछ बदलाव आ गइल रहे | दू महीना से कहीं आइल गइल, घर से निकलल,, सखी सहेली संग बइठल उठल, सब छोड़ि देहले रहे | घर से बहरे ना निकले | ई देखि के सत्तन मने मने बड़ी ख़ुश रहले कि हमार बेटी अब,, बेटी के सहूर सीखि गइलि |

पहिले त सत्तन बो का बेटी की ए आदत से ख़ुशी रहे,, लेकिन बाद में उनका बुझाए लागल कि बिगनी केहू की सामने जाए में कतरातिया | रसोई बना खा के सीधे बिछावना पर जाके सूति जातिया | आखिर बाति का हअ,, जीउ नींक नइखे का ? इहो सोचत पनरहियन बीति गइल लेकिन सत्तन बो बेटी से पूछि ना

पवली कि तोर जीव ठीक नइखे का कि दिनरात सुतले रहअ ताड़े |

ओ दिन गोधना के दिन रहे,, गाँव के सगरी लड़की गोधन बनावे खातिर गाँव में गोबर जुटावत रहली | लेकिन बुधनी नाहीं गइल | दुसर बरिस त गोधन के मेन कलाकार उहे रहे | गोबर जुटवला से लेके गोधन बनवला अउरी कूटला ले ओही के कलाकारी चले | लेकिन असो जब ऊ ना गइल त सत्तन बो अइली अउरी बुधनी के बाँहि धके कहली -- "जो खेली आउ ! हम गोजा पीठा बना देबि !",, कहि के जब ऊ बुधनी की देहि पर नजर गड़वली त ओकर पेट उनका ऊँच लागल | देखि के सन्न रहि गइली -- "ई का रे,, रे तोरी पेट में बच्चा बा का रे ?",, -- माई के सवाल सुन बुधनी का काठ मारि दिहलसि | -- "रे तोरा त लड़िका होखे के बा !",, -- कहत उनका दुःख के पारावारा ना रहे | -- "रे जवने बात पर हमनीं का खुश रहनी हँ जा कि बेटी का सहूर आ गइल | लेकिन ई त तोर ढींढ़ पचावे के तरीका रहल ह |",,

एक्के बेर हजारो बात अउरी हजारो शिकायत,, लेकिन ई इज्जत के बात केहू जनबो ना करो इहो त खेयाल करे के रहे | तनी भर में संसार भर के बात मन में आवे लागल | अगर बुधनी के बाबूजी के बताईं त ऊ बदनामी की डरे मरि जइहें | अउरी ना बताईं त का करीं ? आखिर ए ऊँच नीच के निदान भी त उहे नू निकलिहें | अगर एकरी ससुरा के जानि जा सन त गवने ना करिहेसन | कुलटा कहि के छोड़ि दिहेसन | तब फेरू एकर बियाह कहाँ होई अउरी अइसन लड़की के उठाई के ? अब ई गर के घेघ बनि जाई | छन भर में ही आँखि से आँसू आ गइल अउरी बिगनी के बाँहि ध के खींचले घर में ले गइली --

"ई मुँह में करिखा कहाँ पोतववले बाड़े, बोल |",, लेकिन बुधनी हत्यार बनल मुड़ी गड़वले चुपचाप खड़ा रहे | सत्तन बो हजार बात घुमा फिरा के कबो डाँटि के त कबो पोल्हा के पूछली लेकिन बुधनी की मुँह में बकार कहाँ ? काठ बनल चुपचाप खड़ा रहे | अन्त में रोअत खुदे दुअरे निकलि अइली |

तबसे उनका तिहा कहाँ,, भूख पियास सब मरि गइल | जहाँ बइठसु अनसोहातो आँखि से आँसू गिरे लागो -- "आखिर ई मुँह काला कहाँ करवले बिया,, कुछु बतइबो करित तब नू ओ के छान बान कइल जाइत ! लेकिन ई अभागिन कुछु बतावते नइखे |",, -- दिनभर एही उधेड़बुन में लगले रहि गइली |

अब त साँझि हो गइल। लेकिन सत्तन बो अनाज के एगो फट्ठी भी मुँह में ना डरली | ई देखि के बुधनी का अपनी करनी पर बड़ी पछताव भइल अउरी ऊ माई की लगे गइल | अभिन ऊ कुछु बोलित तले खुदे माइये कहे लगली |

"ई तें का कइले रे बेटी ! भरल सभा में माई बाप के मुड़ी कटवा दिहले | हम कबो सोचलहुँ ना रहनीं हँ कि तूँ अइसन काम करबू ! लेकिन तूँ अइसन कअ दिहलू कि ए दुःख से ना जियल जाता ना मुअल | जवन कहीं सुननीं ना तवन कपारे परि गइल |",, -- कहते बुधिया के माई रोवे लगली | -- "लेकिन तबो बताउ बेटी,, केकरा से ई मुँह करिखा करवले बाड़े ?",,

"माई हम बताएब ना ! हम तहके देखा देब कि ई लड़िका केकर ह |",, कहिके बुधनी माई के मुँह ताके लागल |

"कब देखइबे ?",, डाँटत माई पूछली।

"अगुतइले ना होई,, तनी सबूर करअ | रोअ मत चलअ खा पीयS |",,

"अब हम तोर छुअल ना खाएब ! तें हमके जाति से कुजाति बना दिहले |",, कहि के बुधनी के भगा दिहली |

रात में जब ऊ अपनी मरद सत्तन से ई बात बतवली त उनकरो देंह में खून ना,, आश्चर्य से मुँह खुलल त खुलले रहि गइल | चिन्ता एतना कि रात के नींद गायब,, राति भर इहे सोचते रहि गइलें कि अगर ई बाति ऊ कुल जानि जा सन त का होई ? अगर एइसन भइल त अब बुधनी कवनो घाट के ना होई | सोचत सोचत मन में कबो क्रोध होखे त कबो गुनान |

अब त ओइदिने से दुनू मरद मेहरारू एहि आगी में जरे लगले | "अब का होई !",, बुधनी के माई तरह तरह से बुधनी से पूछसु लेकिन ऊ एकदम मुह सी लिहले रहे | हर सवाल पर एतने जवाब कि बताएब ना तोहके देखा देब | एइमें जरत दू दिन के समय बीति गइल लेकिन बुधनी नाहिये बतवलस कि ऊ लड़िका केकर ह |

तीसरा राति सभे खा पी के सुति गइल रहे,, रातियो नगदे बीति गइल रहे,, तले खिड़की के केंवाड़ी बाजल | सुनि के बुधनी के नींद खुलल अउरी ऊ बूझि गइलि कि उ आ गइलें | धीरे से जा के केंवाड़ी खोललसि अउरी उनके ले आके बिछवना पर सुता देहलसि | उनके सुतवला की बाद खुद अपने कवनो बहाना बना के निकललि अउरी बाहर से घर के केंवाड़ी बन्द कअ दिहलसि | उनके घर में बन्द क के सीधे अपनी माई की लग्गे गइल "चल माई देखि ले कि केकर लड़िका ह |",, सुनते माई हड़बड़ा के उठली, ढिबरी जरवली अउरी लेके बिगनी की बिछावन पर जा के ढिबरी की अंजोर में आँखि चियार के देखली त ऊ त उनके दामाद देवराज रहलें ! लाजे मूड़ी गड़वले बिछवना पर बइठल रहलें |

देखि के बुधनी के माई तनी रिसियेबो कइली | -- "का ये बाबू खाली द्वू बरिस अउरी आगि ना रोकाइल ह ?-- कहिके कुछु देर रिसिया के दमाद देवराज की ओर तकली | लेकिन जब देवराज लाजे मुड़ी गड़वलहीं रहि गइले त ऊ बात सम्हारे लगली --- "अच्छा,, जवन भइल तवन ठीक त नाहिए भइल,, लेकिन तब्बो चलअ गोड़ कौनो ढेर खाले नइखे गिरल ! अब हमार इज्जत रउरे हाथे बा | रउरा आराम से राति भर इहें रुकीं,, सबेरे हम द्वू चार जन के बोलायेब अउरी सबकी सामने रउरा कहि देबि कि ई लड़िका हमार ह | बस एतने से हमार बेटी चरित्रहीन बने से बचि जाई |

राति भर देवराज के पहरा भइल कि ऊ भागि के निकलि मत जासु | सत्तन रत्ते राती जाके समधी के बोला ले अइलें,, गाँव के भी द्वू चार लोग बड़ बडुआ रहे | होत फजीरे ही उनकी दुअरे मजमा लागल अउरी सबकी सामने सत्तन हाथ जोड़लें, कहे लगलें – "हमार बेटी बुधनी का बिन गवने ही चार महीना के लड़िका होखे के बा !",, सुनते पञ्च लोग अवाक रहि गइल | लेकिन ए बदनामी वाली बात पर केहू कुछु बोलित तले सत्तन खुदे कहे लगलें-

"एइसे हम बहुत शर्मिन्दा बानीं | लेकिन ई लड़िका केकर ह रउरो सभन जानि लीं",, --- कहि के घर में ढुकले अउरी ओने से दामाद देवराज के लेके निकललें | "देवराज बाबू बोलि दीं कि ई लड़िका केकर ह?",, देवराज का त बाप के देखते काठ मारि दिहले रहे | अब ऊ का बोलसु ?

लेकिन स्थिति देखि के समधीजी भी समझि गइलें कि ई देवराज के ही कारस्तानी ह | उहो मुस्कियाये लगलें अउरी सत्तन से कहलें --- "समधीजी,, गोड़ खाले गिरल चाहे ऊँचे,, लेकिन जगहिये पर गिरल ये बात के ख़ुशी बा ! त अब गवना खातिर सात या नौ बरिस के दिन का देखी ? गोधन कुटाइये गइल बा ! चलीं दिन धरीं कवनो परेशान भइला के जरूरत नइखे ! हमरा राउर मर मिठाई नाहीं चाहीं | अपनी पतोहि के ए बेरा हम ले के जाएब |",,

ओकरे बाद अपनी बेटा देवराज की ओर घुमलें "लेकिन बेटा,, तो के त इनाम देबे के चाहीं | तें जवन कइले ऊ एगो तुलसिये दास जी कइले रहलें, लेकिन एके दिन,, ओकरे बाद ऊ साधू बनि गइलें | जबकि तें ना जाने कबसे आवत रहले ह, हम खुदे नइखीं जानत | खा के सबके सुता के जब सभे नींद में आ गइल त धीरे से उठि के राते राति द्वू कोस आइल आपन काम क के फेरू द्वू कोस गइल अउरी सबकी सुति के उठला की पहिले घरे पहुँच गइल इ ठाठा बात नइखे | तोके त सहिये में इनाम देवे के चाहीं |",, सुनते सभे हँसे लागल |

✍सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
ग्राम - भठही शुकुल
थाना पटहेरवा कुशीनगर उत्तर प्रदेश

पात्र परिचय

1.	किसुन	नायक
2.	संजय	किसुन के बेटा
3.	संगीता	संजय के माई
4.	राजेस	खलनायक
5.	सरपंच	गाँव के सरपंच
6.	रमेसर	किसुन के संघतिया
7.	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8.	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9.	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10.	अंजली	टेसलाल के बेटी
11.	परपंच	गावँ के कुटिल
12.	कमीना	,, ,,
13.	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14.	दरोगा	दरोगा
15.	जमुना	राजेस के बाबूजी
16.	बिमला	राजेस के मेहरारू
17.	पारबती	राजेस के माई
18.	अन्य	अन्य।

दृश्य सात

स्थान - सहर के होटल समय - रात के पहर

निरेदस -(ऐने ओने टेबुल लागल बा। केहू सराब ढारऽता, केहू पीअता त केहू सिगरेट जरावता।)

कमीना - आरे का हो राजेस भाई, हउ संजय भाई हवन का?

राजेस - बुझात त ओइसने बाड़न।

कमीना - भाई, बैंक के अफिसर नू हो गइल बाड़न। बुझहीं के परी उनुका के।

राजेस - अइसे काहे बतिआवताड़ऽ कमीना?

कमीना - त तुहीं कहऽ, कइसे बतिआईं, हम?

राजेस - संजय भाई हमार जिगरी संघतिया हवन। हम ई ना सुन सकीं कि तू चिन्ह के अनचिन्ह नियन बतिअइबऽ आ हम सुनत जाइब, ऊहो हमरा से।

कमीना - छमा करऽ भाई।

परपंच - तोहार संघतिआँव के लोहा माने के परी हमनी के। एक समय रहे कि संजय तोहरा के फुटली आँखी ना देखल चाहत रहन आ तू एगो संघतिया बाड़ऽ कि अजुओ उनुका के अपना नजरि में बसइले बाड़ऽ।

कमीना - एकरे नाम ह संघतिआँव।

परपंच - (निसा के रंग में) ए भाई, संजय इनिका भिरी नइखन आवत त रजेसो त संजय भिरी नइखन जात। सोचे के इहो बात बउए कि ना?

कमीना - आरे मरदे केहू से केहू दूर नइखे। दूनों संघतिया जगह जगह से रंग लेताड़न। संजय भाई के सब पता बा कि रजेस भाई उनुका अफिसर भइला के खुसी में सभका के ई दावत दिहले बाड़न। जवन कि हमनी के जसन मनावतानी सँ।

परपंच - ताज्जुब एकदम ताज्जुब, औफिसर संजय भाई आ दावत राजेस भाई के?

कमीना - मरदे दावत केहू के होखे तू जसन मनावऽ। रजेस भाई के ई मन बउए कि हम संजय भाई के औफिसर भइला के खुसी में दिल खोल के खरच करीं, असरफी लुटा दिहीं त तू उनुका के रोक देबऽ?

परपंच - रोक काहे देब। हम त दुनों लोग के गला से गला लागल देखल चाहत हईं।

कमीना - तोहार उहो सरधा पुरा हो जाई। हउ देख संजय भाई आपन टेबुल छोड़ के रजेस भाई से मिले आवऽताड़न। का देखे जोग नजारा बउए, संघतिया देने संघतिया लपक के मिले आ रहल बउए। अइसने दोस्तिआँव के नाव कृस्न सुदामा के दोस्तिआँव से दिआइल बाटे।

परपंच - दारू पी के कृस्न आ सुदामा के दोस्तिआँव के काहे नासऽताड़ऽ, भाई?

कमीना - अछा, एही लोग के दोस्ती के चरचा चले द।

संजस - (नसा में) राजेस, औफिसर हम आ खरच तोहार, हमरा प्रेस्टीज के तनिको खेआल कइलऽ ह तूँ। हमरा परतिस्ठा पर पानी फेर दिहलऽ, आँय, बोलऽ ?

राजेस - खरच तोहार भइल चाहे हमार एह में तोहरा फरक कहाँ लउकता ?

संजय - एतहत ओजन के बात कहके तूँ हमार मुँह बन्द कर देलऽ। जाय द, हम ना बोलब, ना मुँह खोलब, तोहरा आगे। हम आज दारू पीअले बानी। तोहरा सराफत के रिनी बानी। दुनिया कहेला कि रजेसवा छली ह, छल जानेला। देख रे दुनिया रजेसवा के बेवहार देख, आ बताव हमरा के कि रजेसवा कहाँ छली बा? छली अदिमी दिल खोल के खरच करेला? परतिस्ठा प चादर देला, आकि चादर उघारेला।

राजेस - हम जानतानी भाई, तोहरा सवाल के जबाब केहू ना दिही। बाकी .....।

संजय - बाकी का कहऽ?

राजेस - इहे कि तोहरा अब आपन मुँह खोले के परी। सिअन होई त सिअन तुरे के परी। बगावत के जरूरत होई त बगावत करे के परी। तोहरा आपन अनहित नइखे जनात त का हमरो नइखे सहात, तोहार अनहित।

संजय - हमार अनहित?

राजेस - हँ हँ .... तोहार अनहित।

संजय - के करऽता हमार अनहित आ हमरा पतो नइखे?

राजेस - आपन से आपन के नाम ना बतावल जाए, संकेत दिहल जाला।

संजय - हमार आपन होके हमार मुड़ी काटऽता आ हमरा पतो नइखे?

रजेस - पता कइसे रही तोहरा, बिस्वास में लेके अकसर इहे लोग करेला। तोहरा समुझे के चाहीं लोग के साजिस आ जाने के चाहीं रहस कि आखिर काहे केहू करेजा तरे साट के राखऽता। सभे रजेस ना नू हो जाई।

संजय - बुझौल बन्द करऽ, साफ साफ ओकर नाम बतावऽ, ऊ हमार बापे काहे ना होखे?

राजेस - लोग हँसत रह गइल ऊ मानल कहाँ, हमरो के लतार देलस। आ बाप होके ई ना सोचलस कि पढ़ल लिखल बेटा के गरदन में एगो पोलिओ ग्रस्त लइकी से सनेह करा के गाँती काहे बान्हऽतानी, त तुहीं बतावऽ ऊ तोहार मुड़ी छोड़लस। अल पुरावे में करे के का त का कर घललस। एगो हतेआर होला कि गला हतत सोचेला बाकि बाप होके काहे ना सोचलस। हाय रे किसुन चाचा, तोहरा अपना बेटा संगे अइसन ना करे के चाहत रहे। माछिओ होली कि दूध से निकल के पाँख झारे के सोचेली तँू त इन्हिका के पाँखो झारे जोग ना छोड़लऽ।

संजय - त एतना सोच ल राजेस कि मुड़ी मारे के परी त बेटो अब ना सोची, लोग तमासा देखी, हमार, तमासा।

राजेस - तनि होस में आवऽ भाइर्, होस में।

संजय - कहऽ का कहऽताड़ऽ ?

राजेस - ई बात के गिरह देलऽ कि आपन के मुड़ी ना मारल जाला।

संजय - त तुहीं बताव का कइल जाला?

राजेस - बस पानी उतारल जाला। धाम ना घुमा के घरे में धसोर मारल जाला। सारा जीवन दुखी बना दिआला। (अँजली ढूँढत ढूँढत आवताड़ी)

अँजली - संजय, तू इहाँ आके सराब पीअले बाड़ऽ? (नाक मूँदत बाड़ी)

संजय - हँ हँ, हम सराब पीअले बानी। तूँ हमरा राह से हट जा। हम तोहार केहू ना हईं। तूँ ... तूँ हमार केहू ना हउ।

अँजली - होस में आवऽ संजय होस में। तँू .... तूँ ई का कहऽताड़ऽ हम .... हम तोहार केहू ना हईं?

संजय - तूँ सुनल चाहऽताड़ु कि ... कि ... हमार के हउ?

अँजली - हँ, हम सुनल चाहत हईं, तोहार के हईं।

संजय - त कान खोल के सुन ल तूँ हमार भोग के बस्तु हउ।

अँजली - संजय, नारी के नारित्व में तोहरा भोग के बस्तु के खेआल कइसे आ गइल?

संजय - तूँ अपने आपके नारी समझऽ, हम तोहरा के भोग के बस्तु से बेसी कुछ नइखीं समझत।

अँजली - के पीआवल ह सराब तोहरा के कि हम जीवन संगिनी से भोग के बस्तु लागे लगलीं। के गुमराह कर दिहल तोहरा के कि हमरा अइसन नारी में भोग के खेआल आ गइल? मान लिहलीं कि हम भोग के बस्तु हईं बाकि संजय अब तूँ घरे चलऽ। कुहूँके के मत करऽ हमरा के जीवन में, पत्नी के जीवन में पति माहुर ना घोरस।

संजय - तोहरा में सरसता कवन बा हो। तोहार सरसता त तोहरा से तोहार पहिलहीं पोलिओ छिन लिहले बाटे। नीर बहावे के अलावा रह का गइल बा। अँचरा पसार के का मंगबू हमरा से हमार पतित्व। हमार मेहरबानी के भीख।

राजेस - संजय, जीवन सौगात सौभाग के चीझ ह। सौगात के चीझ ढोअल जाला। अब अँजली में गैर के भावना जन लेआवऽ। ई कुल्हि तोहरा बाबूजी के जबाबदेही बनत रहे, जवन कि ऊ ना निभइलन। घात ओकरा से साधऽ जे तोहरा से घात कइले बउए।

अँजलीं - संजय, जोआइनिंग बकत तू कहत रहन कि हमरा ई नइखे बुझात कि राजेस एक ओरे सिफारिस करऽताड़न आ दोसर ओरे लंगी मारऽताड़न, ई काहे?

संजय - (जोर स्वर में) हँ हँ, हम कहत रहीं।

अँजली - त हम कहऽतानी कि तू उन्हुके कहे से घरे चलऽ। आ घर मंे शांति काएम रहे द। हमरा निहोरा पर बिचारऽ संजय।

राजेस - जा संजय हमरो कहल मानऽ भाई आ चेतऽ आपन राहता।

अँजलीं - (हाथ धरके खिंचऽताड़ी) चलऽ।

संजय - (नसा में) ना ना ...,ना जाइब, केतनो कुछ कहबु। हाथ छोड़ द हमार।

अँजली - (दरद भरल) गीत

अगिनी के फेरा परल, बन्हाइल गइल गेंठरिया
सँवरिया हो, ए सँवरिया .....।

मुएके अब संग बाटे जीएके अब संगवा
हियवा में उठताड़े कहीं का हम तरंगवा
किरिया खिआ ल चाहे देई द महुरिया
सँवरिया हो, ए सँवरिया ..... ।

अएगुन के रहिया अएगुनवे बतावेला
घिरिना करेला केहू काहे अपनावेला

तोहरा से मांगतानी द ना जनकरिया
सँवरिया हो, ए सँवरिया ..... ।

डुबी गइल एहिए में कतना जिनिगिया
जरि कचनार गइल खुसिया के बगिया
रहता बदलऽ ना बदलऽ बेवहरिया
सँवरिया हो, ए सँवरिया .... ।

हाथ जोरऽतानी आ पएर परऽतानी
नेहिया के नाव पर जरत मरऽतानी
सोचे के भइलबा कइसे धइलऽ ई डहरिया
सँवरिया हो, ए सँवरिया हो .... ।

धीरे धीरे परदा गिरता।

✍बिद्याशंकर बिद्यार्थी

(शेष अगिला अंक में)

कथा-कहनी /दँतकिस्सा

कन्हेला के जिम्मेवारी

" ए बाबुजी, हम जात बानीं हो।" धरीछन जीन्स झमकावत अपना बाबुजी के जनवलन।

" पछेया हवा चलता, बाद में चल जइहऽ,जब तोहरा इया के फोन आइल बा त, रहबऽ त तनिका मदद हो जाई हमार। " धनेसर अपना बेटा से निहोरा कइलन।

" तोहार खेतवा जोताए आ धराए खाती हम इया के अपना इया के बतिया लतिया दिहीं,तुहीं आगे दिन कामे अइबऽ हमरा ?हम जात हईं आदमी लगा लिहऽ ।"

धनेसर कपार धर लिहलन बेटा चल दिहलस इया से मिले,नाधा छटका के,बाप कबरऽताड़न त कबऽरस कन्हेला पर जिम्मेवारी लेके।धनेसर अजुओ ढोअत बाड़न कन्हेला के जिम्मेवारी।

✍विद्या शंकर विद्यार्थी

दादी के ममता

बेटा पतोह जवान रहे, माई रहली अधेड़ । एगो लछमी के आगमन भइल, माई खुस रहली । पोती के नाव धराइल निशा, जे रात में आइल रहली । आजी के घोसना रहे जे पोती के बियाह हम अपना जिनगिए में क' के देख लेब । निशा के देखभाल, पालन पोसन में आजी के भूमिका मुख्य रूप से रहे ।

भोजपुरी में एगो कहाउत बा "लगे बा नइहरवा घुसुक जाएब हो ।" बात कथा कुछ ना लइकी छोड़ के घुसुक गइली निशा के माई। निशा गइली आजी का सिरे । सब चीज आजी का पास रहे। दुलार से खेलवली, जब ओकरा भूख लागल, माई के आह जोर मरलसि रोवे लागल । आजी के कवनो अधापन सफल ना भइल । हार मान के कहिया के बिसुकल दादी आपन छाती धरइली कुछ मिलल ना । इहे रीत दू-चार दिन चलल । आजी के ममता हिलोर मरलसि, दूध पनपे लागल । लइकी चाटे लागल । दूध उतरि गइल ममता के । निशा के माई के आश रहे जे मजबूर होके बोलावे आई केहू । अब निशा का माई के दूध मिल गइल । उनका माई के अइलो पर दादी के करीबी रिश्ता छुटल ना । अब निशा १० पास क'के +२ में गइली ,एने आजी घन्टे भर में हिरदयाघात से सुरधाम चल गइली ।

ई सन् २०२०, दिसम्बर १ के निशा कुमारी के शुभविवाह में दादी के कहल अनुसार दादाजी पूरा कइलन । इहाँ तकले कि दादियो का संतिरा रो के पोती निशा के बिदा कर देलन ।

✍**रामप्रसाद साह,नेपाल**

***

तीस क डड़ारी लांघत बियाह

"कवनो अइसन सुघर शिक्षित अपने जाति बिरादरी के लइका बताईं अपनी बिटिया खातिर, जवन सरकारी नोकरी में लागल होखे, शहर में रहत होखे, गाँव से जुड़ाव होखे, खेत, घर, मकान होखे, माई बाबू के अकेल सन्तान होखे त सोना में सोहागा। अगर, बहिन होखस त बियाह हो गइल होखे, रउवा जनते बानीं हमार लइकी शहरे में पढ़ल, लिखल, पलल, पोसाइल हिय । गाँव मे ना रहि पाई।" तनिका हेर-फेर के साथे रउरो कान में ई बात जरूर परल होई। नीक बर-कनिया के खोज में उमिर भागल जाता । लइकी के मुँहें इहे सुने के भेटाता- "अबहीं हमार उमिरे का भइल बा, रउरा सभे काहे हमके एतना जल्दी घर से भगावल चाहत बानीं जा ?" जेकरा घरे बूढ़ पुरनिया बाड़ें ऊ एही चिन्ता में सुखात बाड़ें कि असो उनतीस के हो गइल, पोर तीस के हो जाई । एह उमिर में हमनीं के द्वगो सन्तान हो गइल रहे, अबे इनकर उमिरे का भइल बा?

सरकारी नियम के अनुसार बियाह के सही उमिर लइकी खातीर 18 आ लइका खातिर 21 बरिस बा लेकिन अउरी कानून के तरह खाली किताबे में लिखल लउकता, जमीनी सच्चाई कुछ अउर बयान कर रहल बिया। कुछ लोगन के छोड़ दिहीं त अधिकांश युवा बियाह के अलावा आपन शिक्षा आ कैरियर के प्रति ज्यादे सचेत बाड़न। ऊ बियाह जइसन जिमेदारी तबे उठावे के पक्ष में बाड़न जब कुछ कमाए धमाये के योग्य हो जासु । बातो ठीके बा। पढ़ाई करत- करत 23-24 बरिस बीत जाता आ रोजी-रोजगार में पाँव जमत 27-28 के उमिर पार हो जाता। साल द्व साल में बियाह हो गइल त ठीक ना त समस्या दिन पर दिन गम्भिराह होत जाता। जेतने मुँह ओतने बात सुने के मिलत बा। गरीबी, दहेज, रुप, रंग, कद, काठी भी कुछ युवा के बियाह में रुकावट पैदा कर रहल बा लेकिन ज्यादा संख्या योग्य, स्वस्थ, शिक्षित युवा के मन माफिक रिश्ता ना मिलला के चलते बा ।

गाँव से शहर की ओर पलायन, टूटत संयुक्त परिवार, एकल परिवार के समाज से जुड़ाव ना रहला के चलते अगुआ के अभाव बा पहिले हितई- नतई, जान- पहिचान के लोग ही अगुवा के भूमिका निभावे। कुछ कमीबेसी होखला के बावजूदो रिश्ता करा देत रहे, अब त रिश्ता होखला के बादो साले भर में कुछ मामिले में अगुवा से मनमुटाव आम बात हो गइल बा । अब केहू अगुवा बनले नइखे चाहत कि के सरदरदी लेवे जाव? एह कमी के द्वर करे खातिर लोग संचार माध्यम के शरण लेता, बिज्ञापन देता, मैट्रीमोनियल साइट पर समाचार पत्र में सोशल मीडिया पर । पहिले खाली लइकी खातिर बर खोजात रहे, अब समय बदल गइल बा। बर आ कनिया दुनो खोजात बा । लइका-लइकी के लालन -पालन से ले के शिक्षा, रोजी- रोजगार में भी दुनो बराबर बाड़ें त अंतर काहें? लइका का सहमत होखला के बावजूद भी लइकी के सहमति के अभाव में रिश्ता परवान नइखे चढ़ पावत । लोग बढ़ि चढ़ि के आपन बखान करता, मिलता, बतियावता, लइका लइकी के आपस मे बात करावल जाता आ मिलावल भी जाता, समय दिहल जाता बिचार के आदान प्रदान करे खातिर। एकरा बावजूद भी रिश्ता होखे के आँकड़ा मन खुश करे वाला नइखे । सालो साल अपना मन माफिक जोड़ा के खोजे खातिर रेल के पटरी नियन पास पास रहि के भागल जा रहल बा युवा जरोह, जोड़े वाला स्लैब यानि बिचौलिया के अभाव में अधिकांश रिश्ता नइखे हो पावत ।

बियाह के रिवाज त हजारन बरिस पहिले तब अस्तित्व में आइल जब आदमी के सभ्य बनावे खातिर धार्मिक नियम के समाज मे लागू कइल जात रहे । खुशी के बात बा कि समय कतनो बदलल,बैज्ञानिक क्रान्ति के दौर चल रहल बा, तब्बो एह रिवाज पर अमल शत प्रतिशत युवा, कुछ अपवाद के छोड़ि के कइल चाहत बाड़ें लेकिन चेतना के चलते मन आगे पीछे कर रहल बा आ मन मे संसय रहता कि जिम्मेदारी उठावे के काबिल बानीं कि ना ?

बियाह के उमिर त मुठ्ठी में बंद रेत नियन होला, जवन मुठ्ठी में बन नइखे रह सकत,सरकबे करी । जब मुठ्ठी खाली हो जाला त हीनभावना के शिकार हो जाला युवा मन। तब लव जिहाद लिभिग इन रिलेशनशिप जइसन कुरीति के तरफ मुड़ जाता कुछ युवा मन । जवन अपना भारतीय संस्कृति सभ्यता के खिलाफ बा । पाश्चात्य सभ्यता के नकल क के ऊ दाम्पत्य सुख त लिहल चाहत बा, लेकिन बियाह के बन्धन में बन्हल नइखे चाहत । ऊ बियाह ले पहिले साथ रहिके देख लिहल चाहत बा कि ओकरा हमसफ़र से ओकर ताल मेल बइठता कि ना, कहीं बेमेले बियाह त ना हो जाई ?

हमरा बिचार से त हर बियाह बेमेले होला काहें कि कवनो दू आदमी के एके नीयन सोच, एके जइसन पसन्द, एके जइसन बिचारधारा, मिजाज, रूप- रंग, कद -काठी होइए नइखे सकत । एक जइसन योग्यता, एके जइसन आर्थिक समाजिक स्थिति भी मिलल नामुमकिन त ना लेकिन मुश्किल त जरूर बा । अपनी जिनिगी के हमराही चुनल मनपसन कपड़ा ना ह कि रंग पसन कइनीं, कपड़ा पसन कइनीं आ नीमन दर्जी खोजि के सीया लिहनी । हर रिश्ता में समय के साथ ही मिठास आवेला।

बिकास के आन्ही में बहात समाज के सोच, रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान कुल्हिए चीज में आमूलचूल परिवर्तन भइल बा । इयाद आवेला ऊ समय जब अधिकतर लइकिन के खाली चीठ्ठी -पतरी भर पढ़ा के जेतना जल्दी हो सके ओकर बियाह करे के फिकिर में माई-बाप दुबरात रहलन । बियाह कइसनो होखे सामंजस्य अउरी आपसी सुझबुझ के जरूरत पड़ेला । पहिले एकर उम्मीद खाली लइकिन से कइल जात रहे । कहलो जात रहे कि लइकिन के अइसन गुण सिखावे के चाहीं कि ससुरा जाके ऊ ओहिजा के माहौल में जल्दी ढल जाव, ओकर सुभाव त पानी नियन होखे के चाही, जवना बर्तन में रखाव ओही के रूप, आकार में ढल जाव। जवन रंग मिलावल जाव ओही रंग में रंग जाव । एकतरह से ओकरा वजूद के ही नकार दिहल जात रहे । समय के साथ एह सोच में बदलाव आइल बा । अब लइका के साथे साथ लइकी के भी सहमत होखल जरूरी बा बियाह खातिर, दुनो परिवार के भी सामंजस्य बनावे में अहम भूमिका निभावे के जरूरत बा । समय के साथे प्रेम अउरी समझ बढ़ेला। बेमेले लागे वाला बियाह भी सफल दाम्पत्य जीवन बनि जाला । हर रिश्ता के समय देवे के जरूरत बा ।

जरूरत के पूरा कइल जा सकत बा, इच्छा के ना । रहल बात पसन के त ऊ समय के साथ बदल जाला । समय से ही कवनो काम नींक लागेला । बाहरी रूप रंग के बहुत ज्यादा तवज्जो देहला के जरूरत नइखे। हँ, सीरत, स्वास्थय, निरोग काया के साथे साथ नीमन सोच देखल बहुते जरूरी बा । उहे काम आई जिनिगी के सफर में । बहुते नजीर बा अपना समाज में बियाह के समय धन- दौलत अफरात रहे आज पइसा पइसा के मोहताज बाड़ें, बियाह के समय स्थिति फटेहाल रहे, अब स्थिति बिल्कुले उल्टा बा । धन कमाइल त आदमी के बश में बा लक्ष्मी के त ओइसही चंचला कहल जाला, ई कहाँ एक जगह टिकेली। हँ, हुनर रहे के चाहीं । सुख धन से ना मन से भेंटाला ।

कवनो आदमी सर्वगुण सम्पन्न ना होला कुछ खूबी होला त कुछ कमियो साथे बन्हाइल रहेले । दूरगामी सुखद परिणाम के दिमाग मे राखि के बियाह कइल जाव त अंत नीके होई आ नया रिश्ता के साथे समाज क हिस्सा बनके रहल भी नीक लागी।

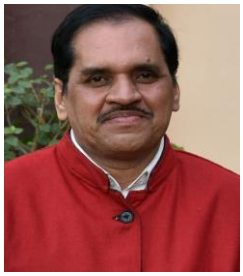

✍तारकेश्वर राय "तारक"
सोनहरिया, गाजीपुर
उत्तरप्रदेश

बीर जोद्धा के लच्छन

जोद्धा ऊ जे जुद्ध में लऽड़े,
दुश्मन से कबहूँ ना डऽरे।
जब दुश्मन से होखे भिड़ाई,
उठा के पटके सीधे खऽड़े।।

समर भूमि में पहिले आवे,
बीर रऽस के गाना गावे।
जइसे देखे ऊ दुश्मन के,
आन्ही पानी जइसन धावे।।

दुश्मन के हँयिंचे लतिआवे,
चढ़ बढ़ के खूबे बतिआवे।
ऊपर से नीचे ले फोरे।
सीमा से बाहर धकिआवे।।

तनिको कोर कसर ना छोड़े,
नटयी पकड़े झट से मोड़े।
गरजे तड़के बिजली जइसन,
उठा के पटके जोड़े-जोड़े।।

तोप से जब ऊ गोला दागे,
देस प्रेम के ऊर्जा जागे।
अंधाधुंध चले जब गोली,
ऊँचे-खाले दुश्मन भागे।।

इहवाँ जोद्धा घर-घर बाड़े,
दुश्मन के लील जइहें खाड़े।
देखते दुश्मन काँपे लगिहें,
छुटी पसीना मरिहें जाड़े।।

जोश देश में ढेर बढ़ल बा,
ढेर नया इतिहास गढ़ल बा।
पहिले वाला भारत ना ह,
देश प्रेम के रंग चढ़ल बा।।

आँख उठा के अब जे ताकी,
बुरा नजर से अब जे झाँकी।
एको बिध ना बाकी लागी,
जे हमनी के कमतर आँकी।।

✍ अखिलेश्वर मिश्र

कहिया जइबऽ ?

फेफरी पड़ल ओठ पर बा
मुसुकी कहिया कटवइबऽ?
ए पहुना अपना गाँवें तूँ,
बोलऽ कहिया जइबऽ?

अइलऽ जहिया, खइलऽ तहिया
पुआ पुड़ी पकवान हो।
लवटि के ना गइलऽ, तूँ कइलऽ
दोसरा दिन सतुआन हो।।
खरची खतम बा, अब खिंचड़ी
अरुआइल बसिया खइबऽ।
ए पहुना अपना गाँवें .....।।

बेद कहे तन रूप अतिथि
होखेला भगवान के।
तब काहे तोहर मुँह हमरा
झलकेला शैतान के??
डोकना लेई के अब अरविन्द से
तूँ भिखिया मँगवइबऽ।
ए पहुना अपना गाँवें .....।।

केतना नेह बा पहुना तोहरा
अपना नसवर देह से।
साबुन ना दिहनीं तब देहिया
मललऽ नुनगर रेह से।

खुँटिया टाँगल झोरा झँटा
कब पिठिया लटकइबऽ?
ए पहुना अपना गाँवें .....??

करवट फेरि फेरि के तूँ
ओरचन तुरलऽ बँसखट के।
आज अभी, जे ना गइलऽ
घेंटुआवल जइबऽ टटके।।
कहिया डेग उठइबऽ पहुना
कब खटिया खलियइबऽ?
ए पहुना अपना गाँवें .....??

✍अरविन्द श्रीवास्तव
एकमा (सारण) बिहार

जरे दिल अरमान

जरत खेत, खरिहान जरे, जरे दिल अरमान।
जोर लगा के बोलीं रउरा, भारत देस महान।।

हम बबुनी के कब कहीं, दूधे नहा पूते फलऽ।
नाहिं चयन बा सांझि के, नाहिं चयन बिहान।।

पेट चलावे खातिर बुचना, रहत बड़ुए दिल्ली।
गरहन से रोजे जूझेला, ओकरा पूनम के चान।।

मुआ करोनवा काल में, का करीं का ना करीं।
नाहिं खुलल इस्कूल बा, नाहिं खुलल दोकान।।

जरत हिताई, जरत मिताई, जरे प्रेम परिहास।
हमनी मूरखन प कृपा करीं, सुनीं दया निधान।।

✍**हरेश्वर राय, सतना**

<u>पिरितिया करेले गजबे कमाल</u>

पिरितिया करेले गजबे कमाल
पिरितिया करेले गजबे कमाल
सनेहिया करेले गजबे कमाल।

नैनन में बसेली कवनो सुरतिया
मती के गती के होला दुर्गतिया
होला बउड़म भंवरवा के हाल
पिरितिया करेले गजबे कमाल।

निंदिया ना आवे ना परे चएनवा
दिलवा में दरद उठेला बएमनवा
चलेली सन आंँख मिरिगा चाल
पिरितिया करेले गजबे कमाल।

अंबरो से ऊँचा रहेला अरमनवा
बरहो महीना बसंत के समनवा
पुरवाई निगोड़िया करेले बेहाल
पिरितिया करेले गजबे कमाल।

✍**हरेश्वर राय, सतना**

हो बिवेकानन

भारत के भुईं माई आरत पुकार करे
फेरु अवतार ले के आवऽ हो विबेकानन ।
देखऽ एहि जुगवा के लुगवा लूटत रोज
अपनी पगरिया बढ़ावऽ हो विबेकानन |

जन जन होखें मन मन नेक होखे
बिमल बिवेक होखे, होखे न कुबतिया |
धरम अनेक रहे करम अनेक रहे
तबो सब एक रहे मानुष के जतिया |

धरम धेआन राखऽ गीता के गेआन राखऽ
माटी के महिमवा बचावऽ हो बिबेकानन |

बिपद जे हीनुआ के घरवा में परे तब
हूक उठे जाई के तुरुकवा के छतिया |
धरम के नीति होखे कहीं ना अनीति होखे
राजनीती होखे लोक नीति के संघतिया |

देख लोग धरम के मरम भुलाई गइले
अलख के जोतिया जगावऽ हो बिबेकानन |

कृष्न जी के भेख लेके गीता उपदेश देके
देस के कलेस से बचावऽ हो बिबेकानन ||

✍सुशांत शर्मा

आदमी अब **कबर** गइल बा

आदमी अब कबर गइल बा
जिंदगी में उजर गइल बा

ढाँक के ना रखल दरद के
सादगी अब बिखर गइल बा

जोह के भोर थाक लवटल
धूप से ऊ गुजर गइल बा

घर जहाँ ना भहर सकल तऽ
बेबसी में छितर गइल बा

आन के आन लूट लिहलस
जिंदगी के खबर भइल बा ।

✍**विद्या शंकर विद्यार्थी**

नाम के आदमी भरल बा
लोर तऽ हूक में ढरल बा

बात में दम कहाँ मिलल ऊ
डाढ़ में काँट तऽ फरल बा

आब मानी हवा इहाँ अब
झोपड़ी आग में जरल बा

साल देता तरे हिया में
नाम के आदमी गिरल बा

फाग आइत परा गइल ऊ
टीस तऽ आग पर बरल बा।

✍**विद्या शंकर विद्यार्थी**

महँगी के ज़माना

तूरी दिहलस करिहाई रे,महँगी के ज़माना ।।टेक।।

रोज-रोज पेटवा के भुखिया सतावे ।
बाबू पढ़े जाव नाहि पइसा अभावे ।
छोटकी बबुनिया के देह पर ना कपड़ा ,
ओढ़नी त नइखे हमसे बडकी बतावे ।
कहँवा से करी हम उपाई रे ।

गबरू जवान रहलें ,मुनिया के बाबू ।
चढ़ले जवानियाँ में, थाकि गइल काबू ।
छोड़ी के गइलन, जबसे कलकतवा ।
अबहीं ले भेजलें ना, कवनो सनेसवा ।
केकरा से दुःख, हम सुनाई रे ।

केतना ले करीं हम, रोज मेहनतिया ।
समझी ना दुनिया, ई हमरो बिपतिया ।
सतुआ ले दुलम बा ,अउर का बताई ,
रोज-रोज आ जाले, कवनो अफातिया ।
हम गरीबवन के, केहू ना सहाई रे ।

बरछी-सा छेदेला, माघ के बेयारिया ।
फूस के पलानी बा ,खुलल दुअरिया ।
कउड़ा के तापि-तापि ,राति सब बिताईं,
भूखल लइकवन के, कइसे सुताईं ।
लउकत ना कवनो, उपाई रे ।

✍**डॉ मनोज कुमार सिंह**
ग्राम +पोस्ट -आदमपुर
जिला-सिवान ,बिहार

अंजन सम्मान से बिभूषित डा० अशोक द्विवेदी जी के जय भोजपुरी- भोजपुरिया परिवार खातिर सनेस:-

भोजपुरिया भाई बहिनी सभे !

तीन बरिस पहिले, भोजपुरिया टीम स्पिरिट से बनल " जय भोजपुरी जय भोजपुरिया" संगठन अपना भाषा-समाज, संस्कृति-साहित्य के चेतन प्रसार आ संरक्षन खातिर, जवन संकल्प लिहलस, ऊ सिद्धि का ओर अग्रसर हो रहल बा। संगठन के ई-पत्रिका आ समय समय पर होत रहे वाली गतिविधि से, भोजपुरी के बल-बेंवत बढ़ रहल बा।

संगठन का पछिला दिल्ली अधिवेशन में, अतिथि का रूप में भागीदारी के गौरव हमरो के मिलल रहे। ओह जलसा में हम रउरा सभे क नेह-छोह आ सम्मान से अभिभूत रहनी। सांस्कृतिक समागम के उछाह आ सामूहिक रचनाशील सक्रियता के साक्षात देखके एगो सुखद अनुभव होला। साँच ईहे बा कि भोजपुरिया समाज, अपना सामूहिक भावना आ सांस्कृतिक-उछाह का जीवन्तता खातिर, दुनिया में जानल जाला।

"जय भोजपुरी,जय भोजपुरिया"- परिवार अपना संस्कृति चेतना, लोकरंग आ सिरिजनशीलता के जवना निष्ठा से प्रसार कर रहल बा, ऊ मूल्यवान बा ।

हम स्वास्थ्य कारन से रउरा सभे का एह तिसरा अधिवेशन में ना पहुँचि पवला खातिर क्षमा माँगत बानी। रउरा सभे हमरा के सम्मान जोग समझनी, ई रउरा सभ के बड़प्पन बाटे। अन्त में अपने सभ का नेह-छोह आ आदर का प्रति विनयशील होके भोजपुरियन का एह तिसरका संस्कृति समागम का सफलता खातिर हृदय से शुभकामना प्रकट करत बानी।

जय भोजपुरी !!

✍**डा० अशोक द्विवेदी,**

बलिया।

#जय भोजपुरी- #जय भोजपुरिया के कवनो आयोजन सामूहिकता, समरपन, सेवाभाव आ सनेह का साथे शुरू हो के भोजपुरी आ भोजपुरिया खातिर जब्बर सनेस देत समाप्त होला। ए परिवार के "साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्सव-३" एही भावना से शुरू भइल आ समापन होत- होत केतना सनेस दिहलसि, एकर निरनय पधारल विद्वान, कविगन, अतिथि, गवइया, बजवइया, सुनवइया, देखवइया आ समय करी। हमनीं अपना मुँहे अपने परिवार के कवन बडाई करीं।

तारीख 23 नवम्बर, 2020, दिन- सोमार कोरोनाकाल का डेग-डेग पर बन्हन का बावजूदो अमहीं मिसिर, भोरे, गोपालगंज में इतिहास रचलसि, जब "जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया" के अध्यक्ष श्री Satish Kumar Tripathi जी (सपत्नीक) उपस्थित गणमान्य लोग श्री ज्वाला सिह जी (अध्यक्ष- सारण भोजपुरिया समाज, वरिष्ठतम सवांग- जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया), Bimlendu Bhushan Pandey जी (संस्थापक- सारण भोजपुरिया समाज आ वरिष्ठ परामर्शी- जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया), प्रखरवक्ता Jitendra Dwivedi जी, केशव तिवारी जी (चुन्नू बाबा), Bhawesh Anjan जी आ अन्य का साथे दीया जरवनीं आ महाकवि #अंजन जी" का चित्र पर माल्यार्पण कइनीं। आचार्य रत्नेश कुमार मिश्र जी के मांगलिक स्वस्तिवाचन वातावरण के दिव्य बना दिहलसि।

अध्यक्ष जी के जोशीला, उत्साह बढ़ावेवाला संतुलित आ सारगर्भित वक्तव्य सुनि के उपस्थित समुदाय में सायदे केहू अइसन होई जेकर नजरिया भोजपुरी खातिर समरपन आ आदरभाव से ना भरि गइल होई। ज्वाला सिह जी का सम्बोधन में "जय भोजपुरी -जय भोजपुरिया" के कइल, कइल जा रहल आ भबिस में करेवाला सब कामन के लेखाजोखा आ भोजपुरिया स्वाभिमान के अनमोल बानगी शब्द शब्द में छलकत रहे।

"जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" परिवार द्वारा दिव्यलोक में विराजमान अपना पुरोधा आ सुकोमल गीतकार की स्मृति में देबेवाला सम्मान "अंजन सम्मान" भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर आ भोजपुरी खातिर आपन जीवन खपा देबेवाला परम सम्माननीय डा. Ashok Dvivedi के समर्पित क के परिवार खुद अपना के उहाँ की अस्वस्थता का कारन उहाँ के प्रतिनिधि प्रतिभा से सम्पन्न संजीव कुमार त्यागी जी ई जवन बहुत जल्दी उहाँ का अपना खातिर आ "जय भोजपुरिया" खातिर एकरा बाद उपस्थित कवि

गौरवान्वित समुझलसि। चलते अनुपस्थिति का गाजीपुर के बहुमुखी नौजवनान कवि श्री सम्मान ग्रहन कइनीं, लगे पहुँचा के तियागी जी भोजपुरी-जय आसीरबाद लेबि।

सब के अंगवस्त्र ओढ़ा के आ माल्यार्पण का साथे स्वागत भइल। भोजपुरी कविसम्मेलन के शानदार शुरुआत "संजय मिश्र 'संजय' जी" का संचालन, बेतिया से आशीर्वाद बरिसावे पहुँचल वरिष्ठ कवि आदरणीय श्री Akhileshwar Mishra जी की अध्यक्षता आ श्रीमती Maya Sharma जी की सरस्वती वंदना से भइल। भारत का कई राज्यन से पधारल नौजवनान आ वरिष्ठ कवि सब अपनी अलग-अलग बिधा में रचल रचनन के सुना के उपस्थित सुनवइया सब के अबिस्मरणीय आनन्द से भरि दिहल आ बदला में जोरदार ताली, जस, नाम आ शोहरत के हकदार भइल सब।

कवितापाठ करेवाला कवि सब:-

सर्वश्री

1- संजय मिश्र 'संजय' (Sanjay Mishra Sanjay)- मंच संचालक आ उद्घोषक

2- अखिलेश्वर मिश्र- कविसम्मेलन के अध्यक्षता, प.चम्पारण

3- अमरेन्द्र सिह (Amrendra Kumar Singh)- आरा

4- संजीव कुमार त्यागी- गाजीपुर

5- सर्वेश तिवारी श्रीमुख (Sarvesh Kumar Tiwari)- गोपालगंज

6- रघुवंशमणि दुबे- देवरिया

7- श्याम श्रवन- प.चम्पारण

8- माया शर्मा- गोपालगंज

9- नूरैन अंसारी(Noorain Ansari)- गोपालगंज

10- पुरुषोत्तम शुक्ल- कुशीनगर

11- भरत मिश्र(Bharat Mishra)- गोपालगंज
12- बाबूराम भगत (Baburam Bhagat)- गोपालगंज
13- उपेंद्र दुबे- देवरिया
14- रामप्रकाश तिवारी (Ram Prakash Tiwari)- सारण
15- नन्देश्वर मिश्र 'नन्द'(Nandeshwar Mishra)- गोपालगंज
16- दिवाकर उपाध्याय(Diwakar Upadhyay), सिवान
17- अरविन्द श्रीवास्तव (Arvind Shrivastava) -सारण
18- अमित मिश्र सूर्यांशी, देवरिया
19- विकास मिश्र- गोपालगंज।

भोजपुरिया समाज गीत-गवनई के दीवाना ह। गीत- गवनई ना होखे त कवनो भोजपुरिया कार्यक्रम निरस लागेला। एक्के सरस बनावे खातिर दूसरा सत्र में दूर- दूर से आइल आ क्षेत्रीय भोजपुरी गवइया लोग आपन जोरदार प्रस्तुति दिहल। गणमान्य अतिथि का साथे अध्यक्ष जी फीता काटि के कार्यक्रम के शुरुआत करवनीं।

वरिष्ठतम लोकगायक श्री Uday Narayan Singh जी के सुपुत्री लोकगाथा गायिका #तिस्ता _शाण्डिल्य की स्मृति में दिआएवाला "तिस्ता सम्मान" अनाइथ, नवादा, आरा के युवा गायिका सुश्री #रजनी_शाक्या के श्री उदयनारायण सिह जी प्रदान कइनीं आ प्रशस्तिपत्र के वाचन कइनीं त पांडाल ताली की आवाज से गूँजि गइल। सब कलाकार के अंगवस्त्र आ माल्यार्पण का बाद Singer-Vinod Kumar Gupta की सरस्वती बंदना से कार्यक्रम के शुरुआत भइल। एक से बढ़ि के एक भोजपुरी गीतन के श्रोता सब रातभर आनन्द लिहल।

#गीत- गवनई प्रस्तुत करेवाला कलाकार-
1-विनोद गुप्ता, गोपालगंज।
2-नीरज पाण्डेय (Niraj Pandey), आरा।
3- रजनी शाक्या, आरा।
4- उदयनारायण सिह, सारण।
5- श्रेयांश मिश्र (Shreyansh Mishra), कुशीनगर।
6- प्रीति कुशवाहा (Singer Priti Kushwaha), कुशीनगर।
7- मोहन मिश्र (Mohan Mishra), गोपालगंज।
8- प्रिस उपाध्याय, गोपालगंज।
9- राहुल शर्मा(Rahul Sharma), गोपालगंज।
10- विनोद गिरि, दिल्ली।
11- राधेश्याम जी (Radhe Shyam), आसाम।
11-संगीतकार- राजन द्विवेदी(Rajan Dwivedi) , कुशीनगर।

कार्यक्रम के पल पल के जानकारी लेत मुम्बई में बइठल आदरणीय संरक्षक श्री Suresh Kumar भइया जी बंगलोर से नजर गड़वले आदरणीय संरक्षक श्री Kanhaya Prasad Tiwari Rasik भइया जी के आशीर्वाद खूब बरिसल, जवना कारन कार्यक्रम एतना सफल भइल।

कार्यक्रम में कवनो भाँति पधारल सब सवांग/सवांगी के हिरदय से धन्यवाद/आभार। अमहीं क्षेत्र की जनता के आभार। समूचा भोजपुरिया समाज के आभार जे सदेह ना उपस्थित हो के जीवंत प्रसारन के सुदूर देश/ बिदेस में बइठि के कार्यक्रम सुनि के आनन्द लिहल आ "जय भोजपुरी -जय भोजपुरिया" का भोजपुरी खातिर समरपन के सराहल।

रउरा सब के इहे सहजोग आ मनोबल बढ़ावल हर साल हमनीं से अइसन कार्यक्रम करावत रही। आशीर्वाद देत रहीं सभे।

✍संगीत सुभाष,
उपाध्यक्ष- "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया"।
प्रधान सम्पादक- #सिरिजन, भोजपुरी पत्रिका।
मुसेहरी बाजार, गोपालगंज।

योग अउर योगी- 10

नमस्कार योग गुरु शशि प्रकाश तिवारी के रउरा सभन के। योग अउर योगी का पिछला संस्करण में प्राणायाम का बारे में पढ़नीं। हमनी के योग पथ पर आगे बढ़ते हुए पिछला संस्करण में सीत्कारी प्राणायाम आ शीतली प्राणायाम से रू-ब-रू होखनीं सन। एह संस्करण में हमनीं के भस्त्रिका प्राणायाम आ भ्रामरी प्राणायाम के बारे में जानकारी लिहल जाई।

भस्त्रिका प्राणायाम

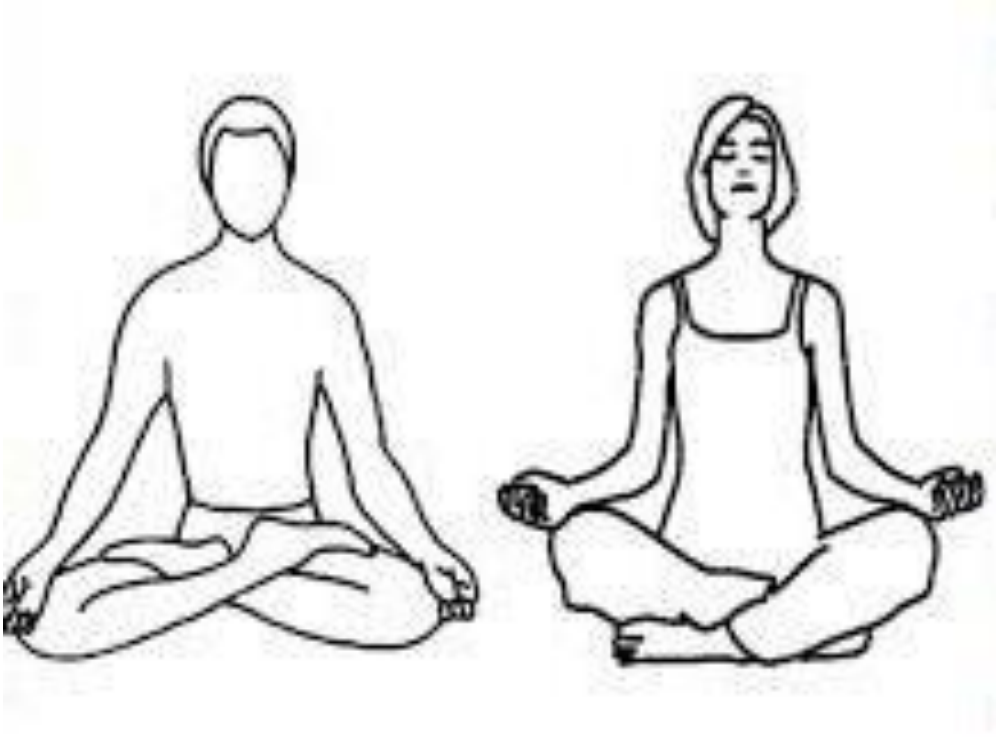

भस्त्रिका प्राणायाम के करे से पहिले ठीक ओसहीं बइठे के बा, जइसे कपालभाति में दुनू गोड़ के मोड़ के, एक दूसरा का उपर चढ़ा के, पद्मासन लगा के भा, (यदि पद्मासन ना लाग सको त सुखासन भा अर्धकमलासन में) बइठल रहनीं ह। भस्त्रिका प्राणायाम में अपना सिर आ मेरुदंड के एकदम सीधा कइके अपना आँख के बन्द कर लिहीं। कुछदेर खातिर विश्राम करीं अर्थात कि अपना शरीर के ढीला, चिन्ता मुक्त, तनाव मुक्त छोड़ दिहीं। ओकरा बाद दहिना हाथ के अंगूठा से दहिना नाक के छेद के बन्द करके बायाँ नाक का छेद से 20 बार दीर्घ साँस भरे के बा आ निकाले के बा । बाद में अपना पूरा शक्ति के साथ साँस खिचल जाई आ बायाँ नाक के छेद के अपना दहिना हाथ के तिसरकी (बिचिली) अंगुरी से बन्द कर लिहीं। अब तीनू बंध (जालंधर, उड्डीयान आ मूलबंध) लगा लिहीं। ओकरा बाद जब तक संभव होखे साँस के रोक के रहीं अर्थात कि कुंभक लगा के बइठ जाईं। कुंभक के पूरा कइला के बाद बंध खोल दिहल जाला। एकरा बाद साँस के बहरा निकाल दिहल जाई। एह तरह से ही दुसरको नासिका छिद्र से कइल जाला। दुनू नाक से कइला के बाद एक चक्र पूरा होखेला। एह प्रकार से एकरा के 5 से 10 बार दोहरवला के बाद दूसर प्राणायाम भ्रामरी प्राणायाम करीं।

भ्रामरी प्राणायाम

भ्रामरी प्राणायाम के अर्थ भइल कि जवना के कइला से भँवरा के मँड़राए जस गूँज उत्पन्न होखे। भ्रामरी प्राणायाम के करे खातिर भी पद्मासन भा सुखासन में बइठ करके अपना दुनू नयन के पलक बन्द कर लिहीं। दुनू कान के छेद में अपना हाथ के अंगूठा घुसा के छेद बन्द कर दिहीं। ओकरा बाद हाथ के पहिला अंगुरी (तर्जनी) के अपना आँख के भौं का उपर अपना लिलार पर राखे के बा। फेर मध्यमा (बड़की अंगुरी) आ अनामिका (कानी अंगुरी का साथ वाला) एह दुनू के बहुत आराम से बन्द आँख के पलक पर सटावे के बा आ अंत में छोटकी अंगुरी (कनिष्ठा) के नाक के छेद का बगल में राखे के बा। अब मूलबंध लगावे के बा आ दुनू नाक के छिद्र से पूरक करे के बा। लगभग पाँच के गिनती तक जालंधर बंध लगा करके कुम्भक करे के बा, तब जा के बन्ध मुक्त होखे के बा। दुनू दाँत के आपस में मिला लिहीं। ओकरा बाद भँवरा के आवाज नियर आवाज़ करके रेचक अर्थात स्वाँस के बहरा निकाले के बा। ई प्रक्रिया करत समय

अपना अंदर एह ध्वनि के तरंग के महसूस करे के चाहीं। एह प्रकार से एकर 5 से 10 बार अभ्यास करीं।

लाभ

जहवाँ एक तरफ भस्त्रिका प्राणायाम के कइला से शारीरिक कांति में बढ़ोतरी होखला के साथ साथ इडा, पिगला आ सुषुम्ना नाड़ी प्रभावित होखला के साथ तेज़, स्फूर्ति आ उत्साह के प्राप्ति होखेला, ज़वना के नियमित अभ्यास से अनेक प्रकार के सिद्धि के उपलब्धि आ फेफड़ा के सफाई, कंठ के सफाई आ कफ से छुटकारा मिलेला, निद्रा,आलस्य का साथे साथे भूख प्यास पर आपन नियंत्रण मिल जायेला। मन के शांति, स्नायु संस्थान के अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त होला, भस्त्रिका के निरंतर अभ्यास से दमा आ क्षयरोग जस बीमारी में औषधि के काम करेला, शरीर निरोग हो के झाँई, झुर्री आदि दूर हो जायेला जेहसे सुंदरता आ रंग रूप में कामदेव के समान लावण्य के प्राप्ति होखेला ।

उहवें दोसरा तरफ भ्रामरी प्राणायाम के कइला से मानसिक तनाव कम होखेला, पित्त ज्वर, प्लीहा, तृष्णा, गुल्म इत्यादि रोग शांत होखेला। भ्रामरी प्राणायाम के नियमित अभ्यास से उपर्युक्त कवनो रोग उत्पन्न भी ना होखेला आ साथे साथे गला से संबंधित रोग जइसे अजीर्ण ,कफ, पित्त के विकार इत्यादि भी उत्पन्न ना होला। शरीर में स्फूर्ति आवेला, रक्तचाप में सुधार होखेला, मस्तिष्क के कोशिका के अतरिक्त ऊर्जा प्राप्त होखेला जावना का चलते भ्रामरी प्राणायाम के सबसे बड़का गुण त ई ह कि एकर नियमित अभ्यास कइला से चिता तथा क्रोध पर आपन नियंत्रण बन जाला। आज्ञाचक्र पर अनुकूल प्रभाव पड़ेला आ वाणी में भी सदैव मधुरता बरकरार रहेला।

सावधानी

सामान्य रूप से त योग केहू योग चिकित्सक का देख रेख में ही करे के चाहीं, बाकी थायरॉइड का अति विकास भइला पर , कमजोर दिलवाला , ढेर चर्बीवाला, मस्तिष्क से संबंधित कवनो रोग भइल होखे, चक्कर आवत होखे भा जेकर कवनो प्रकार के आपरेशन भइल होखे ऊ विशेष रूप से केहू के परामर्श लिहला का बाद जानकार के सम्मुख ही प्राणायाम करे त जादे नीमन रही।

उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, सर्दी, जुखाम , Thrombosis, Anterio Salerosis, Cronic, Catarrah, मलबंध, किडनी, नेत्र, कान का रोगी खातिर बिना परामर्श के शीतली प्राणायाम ना करे के चाहीं।

विशेष रूप से ध्यान राखे के बा कि आसन कइला के बाद कम से कम 5 मिनट के शवासन कर के अर्थात कि 5 मिनट के अंतर का बाद कवनो भी प्राणायाम शुरू करे के चाहीं।

एह संस्करण में एतना ही रहे देवे के, शेष अगिला पुस्तक में रही। योग से संबंधित कवनों प्रकार के सहायता भा कुछऊ पूछे के होई त हमरा से shashiprakashtiwari640@gmail.com पर भा 9599114308 / 7217897727 पर हमरा के फोन/वॉट्सएप कर के हमरा से संपर्क कर सकत बानीं। यदि रउरा चाहीं त यूट्यूब पर भी हमके yogguru shashi prakash tiwari का नाम से खोज सकतानीं, जहवाँ रउरा योग से संबंधित नया नया जानकारी लगातार मिलत रही।

रउरा सभे के एक बार फेरु से हमार प्रणाम का संघे संगे दुनू हाथ जोड़ के

जय श्री राम |

✍योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी
जिला प्रभारी छपरा (अखिल भारतीय योग शिक्षक महासंघ)
परफेक्ट जिम व योगा केन्द्र
भटकेशरी ,जलालपुर, छपरा (सारण) बिहार 841403

फुलेसर आ बुधन दुनू भाई अलगा होत रहे लो। सब सामान त बँटा गइल, बँचि गइल घरके पोथी- पतरा।

फुलेसर कहलें- ' ई बाँटे में कवन झंझट बा? दूगो पोथिए बा। एगो रामाएन के पोथी आ एगो हनुमान चलीसा के पोथा। तहरा जवन मन करे ले लS। मन करे त रामाएन के पोथी ले लS, चाहें हनुमान चलीसाके पोथा ले लS। हम दुनू पर राजी बानीं। बाकिर एकरा खातिर झंझट ना होखे के चाहीं।'

बुधन रहलें सोझबक अदिमी। बुझलें कि पोथा भारी होई। चटाके कहलें कि त हमके हनुमान चलीसाके पोथा दे दS।'

फुलेसर अपनी चाल में कामयाब हो गइलें। अपने रामाएनके पोथी राखि लेहलें आ बुधन के हनुमान चलीसाके पोथा दे देहलें।

* * * *

ए बुधन, चलS ना तनी बाजार में। कुछ दवा लेबे के बा।'
'का हो गइल बा, ए फुलेसर भाई?'- बुधन पुछलें।
'चलS, अब उहवें बताइबि। केतना ले कहीं कि का- का भइल बा? आरे, ई पूछS कि का नइखे भइल?'- कहलें फुलेसर।
बुधन बुझलें कि कवनो बड़हन बात हो गइल बा। ए से फुलेसर का साथे चलि दिहलें। डागदर बाबू का लग फुलेसर आ बुधन चहुँपल लो।
'केकरा का भइल बा?'- डागदर बाबू पूछनीं।
' हमरे तबियत ढेर खराब हो गइल बा।'-फुलेसर कहलें।
'का भइल बा?' डागदर बाबू नाड़ी धरत पूछलें।
'का कहीं ए डागदर बाबू? देखीं ना, बिहाने दतुअन क के एक लोटा चाह पिउईं, तबसे कुछ खाहीं के मन ना करत रहुए आ भूखियो ना लागत रहुए। तबो दोकान पर गउईं त देखुईं, कचउड़ी आ जिलेबी त 10-15 गो कचउड़ी आ आधा किलो जिलेबी खउईं। ओकरा साथे तरकारियो रहुवे। ओकरा बाद फेरु भूखि ना लागत रहुवे ना कुछऊ खाए के मन करत रहुवे। बाकी, देंहि का कुछ लेहना त चहबे करी। 11 बजे का लगभिग 10 गो रोटी आ 250 गराम ले चाउरे के भात कोंहडा का तरकारी का साथे खउईं। ओकरा संगे अरूई के दूगो लूँड़ी रहुवे। ओकरा बाद फेरु भूखि ना लागत रहुवे आ--'
'आ कुछु खाहूँ के मन ना करत रहुवे।'- बुधन आ डागदर बाबू अचरज से फुलेसर का ओर ताकत एके बेर बोलि परल लो।
'का कहीं ए डागदर बाबू? पता ना काहें भूखिए भागि गइल बा? अन्न का ओर त ताकहूँ के मन नइखे करत। का करीं? दुपहरिया में खइला का बाद मलिकाइन का कहला पर जबरजतिए आधा किलो भा साढ़े सात स गराम ले सतुआ खइनीं हँ। ओकरा बाद फेरु भूखि ना लागत रहल ह आ--'
'खाहूँ के मन ना करत रहल ह, इहे नू? तहरा त सही के भारी बेरामी ध लेहले बा, ए फुलेसर भाई। डागदर साहेब नीमन दवाई करीं, नीमन। अबे अधलब लगन परले बा आ इनकर ई हालि बा। पता ना का होई, ए दादा?' बुधन मुसकियात कहलें। अबे बाजार में अइलें हँ त छव गो समोसा खइले हँ आ दू कप चाह पिअले हँ। तबसे भूखिए नइखे लागत आ खाहूँ के मन ना करत होई। हँ, नु हो?'
'हँ ए बुधन हँ। ठीक समुझलS. तहार बेटा जिओ। अब तूहीं बतावS कि तहरे बेटा के जनेव होता। खाए के परी कि ना? खाइल जाई, तबे नू खाएबि आ भूखि लागी तबे नू तनी चाँपि के खाएबि? डागदर साहेब से कहि के हमरा खातिर भूखि लागे के कवनो दवाई ले लS, ए बुधन। हुँसियार- चालाक हउअ, एही खातिर ले आइल बानीं साथे।'
डागदर बाबू चिन्ता में परि गइलें कि ए अदिमी के हम कवन दवाई दीं? कहलें कि रूकS, आवतानीं त दवाई देतानीं। डागदर बाबू झटकले उठि के भगलें आ अइसन भगलें कि एक हपता ले ना लउकलें। ए बीच में बुधन का बेटा लो के जनेवो हो गइल। फुलेसर ओहीं तरे बिना भूखि आ बिना मन के हलुकाहे खिचलें।

✍संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक,
सिरिजन।

छुईमुई जिनगी के अजगुत सपना: आखर-आखर गीत

बूढ़-ठूढ़ होत गाँव-घर में जब-जब केहू आपन भुलाइल-बिसरल लर-जर खोजे जाई त कई-कई गो पुरान-धुरान गीत कवनों कोने-अँतरे में तड़फड़ात पाई। जनम से लेके मरन तक गवाइल इ कुल परम्परागत नेत-नेम भर ना ह बलुक एगो महीन नेह-नाता ह आजी, बाबा, फुआ, माई के मद्धिम सुर में गावल-कढ़ावल। अइसन कुल जाने केतना गीतन में आपन नेह-छोह जतावत-बतावत केतना कुल्ह पीढ़ी जियलीं-जुड़इलीं। गिरहस्ती संचत-सम्हारत लइकन के लायक आ लइकिन बियाह के भर-भर हिक रोवलीं। लइकिन खातिर रोवलीं त रोइबे कइलन बाकिर लयिकन खातिर ढेर रोवलीं। कुलदीपक पढ़े-लिखे बहरे का गइलन कुल्ह अँजोर, कुल्ह आस-हुलास घरे से बहरियाय गइल। तीज-त्योहार प अइले प अपने घर- दुआर आन जस लगे लगल। सुख-सुविधा के अभाव लगे लगल। धीरे-धीरे गाँव के दरिद्दर छुवे लगल। भरल-पूरल अन्न-जन में, भाव-सुभाव में, मान-मरजाद में आ बात-ब्योहार में दरिद्दर पइस गइल।

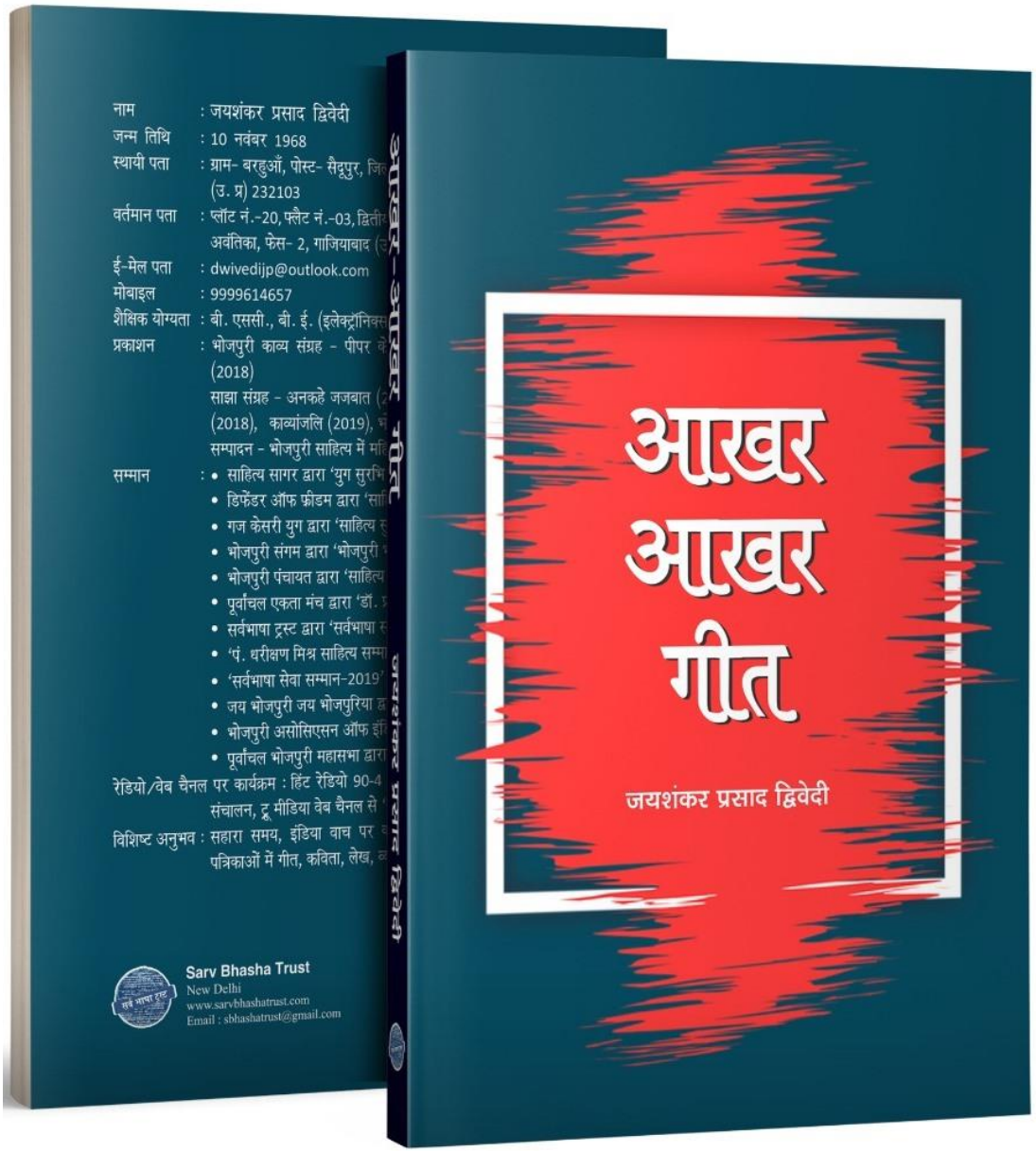

देस-दुनिया उठ के मोबाइल के संगे-संगे गउँवो में आ गइल। सोशल-मीडिया प खेत-खलिहान, बरत-त्योहार संगे सेल्फी पोस्ट होवे लगल। एह कुल में कवनों बुराई ना रहल। बुराई एहू में ना रहे कि शादी-बियाह से लेके देवी गीत फिल्मी गीतन के धुन में बने-गवाए लागल। करेजा में धक से लगे वाली बात इहो ना ह कि गाँव के पोर-पोर में शहर समाइल जात ह बाकिर धक से लगे वाली बात ई ह कि शहर जवने तरीके से गाँव में बसत चल आवत हऽ उ तरीका खतरनाक ह। ई ऊ तरीका ह जवन गाँव के

मुरदन के गाँव बनावत जात ह। कुल्ह हास-हुलास के लीलत, रिश्ता-नाता के मधुरई के खात-चबात, खेत-खलिहान के ऊसर-बंजर बनावत चलल चल जात ह। नइकी पीढ़ी आधुनिक समय आ समाज से संगत में हलकान आ पुरनकी गाँठ से छूटत-छटकत जात रीति-रिवाज, धरम-संस्कार के सँईंच-सम्हार ना पावे से हरान-परेशान हऽ। इहे कुल हरानी- परेशानी के कहल-सुनत, अतीत के जियत आ वर्तमान के जोगावत जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी क संग्रह 'आखर-आखर गीत' आप लोगन के सामने ह। एह संग्रह में जहाँ एक ओरी प्रेम, प्रकृति, राजनीति, व्यंग्य ह त दुसरका ओरी वर्तमान महामारी कोरोना से छुटकारा दियावे खातिर देवी से अरजो-निहोरा भी कइल गयल ह।

सुरुआत सरस्वती वंदना से कइल गयल ह। माँ शारदे क स्मरण कवनो भी कलमकार खातिर अवलम्ब ह। ओही अवलम्ब के आड़े-छाँहें जिनगी के दुख-सुख रोवल-गावल जा सकेला। जिनगी क काँट-कूस, नेत-अनेत कहल-सुनल जा सकेला। एह संग्रह में आपके आखर-आखर में भरल-पूरल नेह क दर्शन होई -

'छुईमुई जिनगी के अजगुत सपना
खीसि में पलल केतनी कलपना
रहि-रहि टीसे बिवइया सजन
अंगनियाँ में आ जा हो।'

छोट-छोट आस पुरावे खातिर जिनगी भर अदमी खटेला-मरेला। हाड़ ठठावत गृहस्थी क कोल्हू जोतत उमर बीत जाला अउर बदले में आपन-आन से मिलल छल-कपट जिनगी भर के हासिल हो जाला बाकिर तब्बो नेह-नाता छूटेला ना।

एगो कलमकार के जिये खातिर गाँवे-घर क ही उजियार पर्याप्त ना होला बाकिर देस क मान-सम्मान, गरब-गुमान क ओज-तेज भी जरूरी होला। देस-प्रेम भोजपुरी संस्कृति में अपने पूरे रुआब के संगे देखे के मिलेला। वीर कुँवर सिह क गाथा आज ले चिरंजीवी ह। भोजपुरी माटी में शहादत क गीत आज भी गुंजायमान ह। वीर सपूतन के शहादत से आज ले गाँव-जवार क भाल उन्नत ह। अपने बुद्धि कौशल आ कर्मठता से नगर-नगर उजियार कइले माँ भारती के लालन से कवन गँवई धरती ना गुलजार ह। जब-जब देस के जरूरत पड़ल नेतृत्व करे खातिर कई-कई गो नायक उठ खड़ा भइलन। एह संग्रह में एगो अइसने नायक क गुन-गाथा ह - 'तारीख पचीस आ पूस महीनवाँ/माई भारती क रहे शुभ दिनवाँ / लिहले अजुवे मदन अटल राग/अन्हरिया में हलचल भइल।'

अन्हरिया में हलचले ना भइल बाकी आज ले ज्ञान क जगमग करत जवन जोती हमहन के मदन मोहन मालवीय जी सौंपलन उ आवे वालिन जाने केतने पीढ़ी के तारी आ उजियार करी, एके गिनावे क जरूरत ना ह। 'आखर-आखर गीत' में जहाँ एक ओरी अनुराग, देस-राग आ देवता-पित्तर मनावे क गीत ह उन्हवे राजनीति क छल-छद्म क भी गहिराह शिनाख्त ह। भासा-बोली संचे-बचावे क बात ह।

एहितरे क कुल कई गो व्यंग्य समाज-राजनीति के विकृति पर आपके एह कृति में मिली। कुल मिलाके इ कहल जा सकेला कि अइसन कुल संग्रह भरोसा जगावेलन कि जब तक लोक के भासा में लोक के सिरजल जाई तब तक मनुष्यता सुरक्षित रही। एह लोक मंगलकारी सर्जन से आदरणीय जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी क सृजनलोक भरल-पूरल रहे। हमार अशेष मंगलकामना आ हार्दिक बधाई।

आखर-आखर गीत, रचनाकार- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, सर्व भाषा ट्रस्ट, उत्तम नगर, नई दिल्ली। मूल्य-160 रूपये

✍डॉ. सुमन सिंह

जिनगी के हर रंग में रँगाइल : फगुआ के पहरा (पुस्तक-समीक्षा)

एगो किताब के भूमिका में रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ऊर्फ जुगानी भाई लिखले बाड़े कि 'भाषा आ भोजन के सवाल एक-दोसरा से हमेशा जुड़ल रहेला. जवने जगही क भाषा गरीब हो जाले, अपनहीं लोग के आँखि में हीन हो जाले, ओह क लोग हीन आ गरीब हो जालंऽ.' ओही के झरोखा से देखत आज बड़ा सीना चकराऽ के कहल जा सकत बा कि भोजपुरी समृद्ध बा, भोजपुरिया मनई समृद्ध बा. हमरा ई बात कहला के बहाना श्रेष्ठ शिक्षक, सुलझल मनई आ सरस मन के मालिक कवि-साहित्यकार डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के किताब 'फगुआ के पहरा' बा. एह किताब के पढ़ला पर बिना कवनो चश्मे के साफ लउकत बा कि माटी के गंध जहवाँ ले फइलल बा, विमल जी के कविता के विषय ऊहवाँ ले बाटे. कविश्री अपना भोजपुरिया परम्परा के निभावत लगभग सगरो विषय पर आपन लेखनी चलावत माटी के सुगंध के असली रूप में पेस कइले बानी. जइसन कि किताब के नाव से लागत बा कि एहमें प्रकृति के सरस आ उदात्त रूप पर रचना ढेर होई, बड़लो बा, बाकिर ओहके देखे के आँखि दोसर बा.

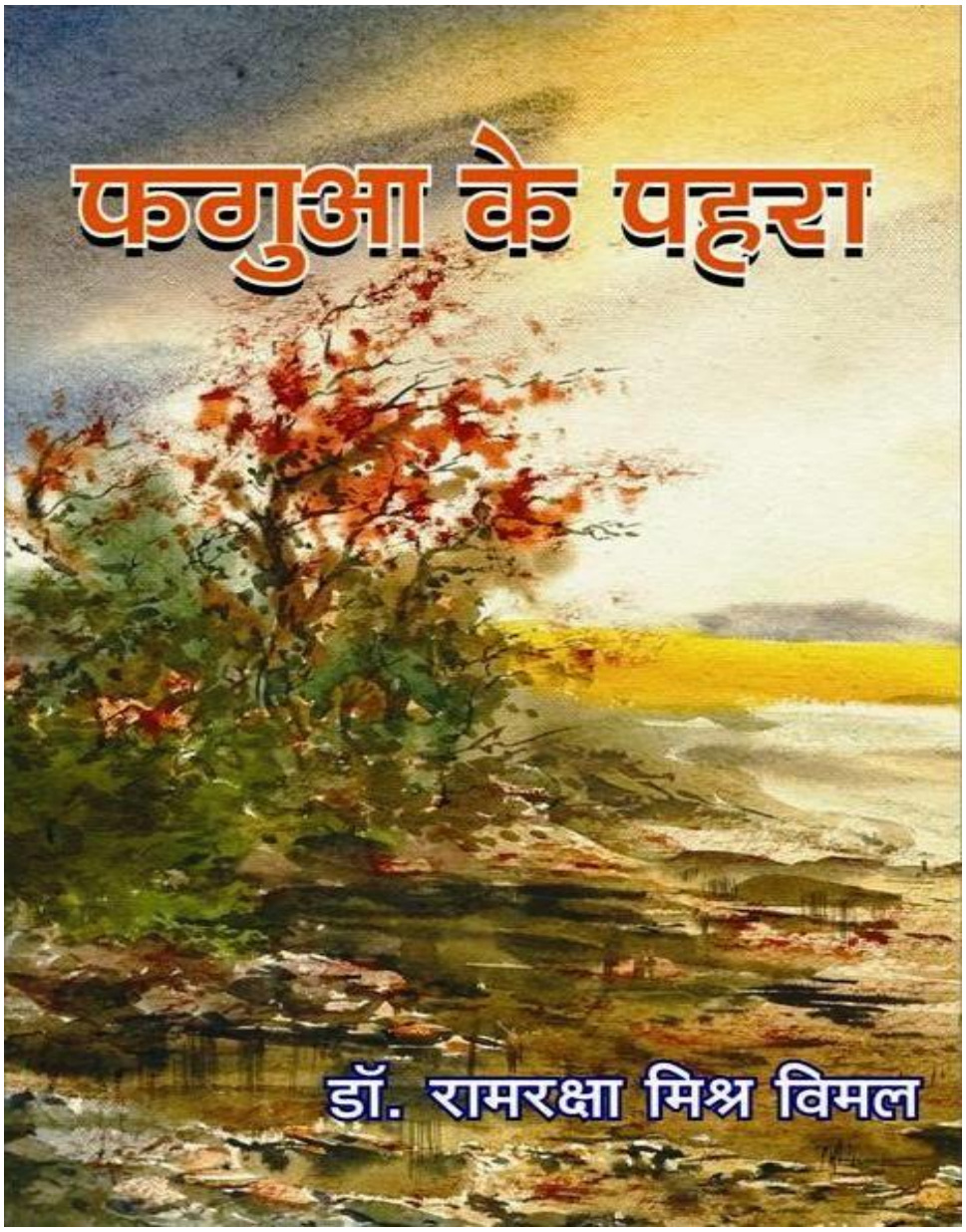

'वनांचल प्रकाशन' से प्रकाशित ई 'फगुआ के पहरा' के दूसरका संस्करण हऽ. भोजपुरी कविता के किताब के दूसरका संस्करण छपल अपने-आप में इतिहास बनल बा. एह उपलब्धि खातिर मन ऊँहा के बेर-बेर बधाई देत बा. ई किताब में तीन तरह के रचना बा. ओह रचनन के कविश्री गीत, ग़ज़ल आ कविता नाम से अलगा कइलहूँ बानी बाकिर कवनो स्तर पर ऊहाँ के शब्द-शिल्प आ प्रस्तुति कहीं भंग नइखे. काव्य परम्परा के निर्वाह करत कवि के पहिलका रचना सरस्वती माई के गोहार 'बरिसावऽ माँ नेह सुधा' बा जेहमें कवि स्वार्थ से ऊपर उठ के परमार्थ खातिर प्रार्थना करत बानी. देखीं ना –

अनाचार के सगरो पहरा
बिलखत जिनगी के भिनसहरा
फइला दऽ ना ग्यान जोति

जड़ बुधि होखो चंचल.

कवि के क्रान्तदर्शा कहल जाला. कवि भूत-भविष्य, सबके ज्ञाता मानल जालें. कवि विमल जी के गीतन में ओही गुण से साक्षात् होता. आज समाज में ढेर फूट-मतभेद समाइल बा. लोग हर एक घटना-परिघटना के जाति-धरम के आँखि से देखत बा. सभे अपना के सयान बूझत बा. साहित्यकार अइसन जीव होलें, जे के ना कवनो जाति होला, ना कवनो धरम. उनका खातिर सगरो धरती घर हऽ आ सभे केहू आपन. तबे नू 'वसुधैव कुटुम्बकम्' लिखल गइल. कवि रामरक्षा मिश्र विमल जी ओही साहित्यकार जाति-धरम के माने वाला हवें, जे आपसी मनभेद-मतभेद भूलवा के सँघतिया बने खातिर बोलावत बानी. एगो उदाहरण देखीं ना, –

आईं हमनी सभ बइठीं सुख-दुख आपन बतियाईं जा
घरफोरवा बा के हमनी के ओकर पता लगाईं जा
मान बढ़ाईं जा माटी के भेदभाव सब छोड़ के.
दुअरा-अँगना कहिया छिटकी मधुर किरिनिया भोर के..

श्री विमल जी के गीतन के बिम्ब बड़ा साफ बा. पढ़ते पाठक के मन में एक-एक बिम्ब अँजोर कऽ देत बाऽ. मन बरबस कहीं अउरी चल जाता. 'असो जाए फगुनवा ना बाँव सजना' के बात होखे चाहें, 'लागेला रस में बोथाइल परनवा' के बात होखे, 'दूब के सुतार' चाहे 'फागुन के आसे' के बात, एह सब रचनन में चित्रन के देख के मन कुछ अउरी सोचे खातिर बेसूध हो जात बा. एगो चित्र रउरो देखीं ना –

डर ना लागी
बाबा के नवकी बकुली से
अँगना दमकी
बबुनी के नन्हकी टिकुली से
कनिया पेन्हि बिअहुती
कउआ के उचराई.

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के रचना संसार के विशेषता में ऊहाँ के लोकोक्ति आ मुहावरा के सहज प्रयोग बा. एह किताब में प्रस्तुत सगरो विधा में लोकोक्ति आ मुहावरा के सहज आ रोचक प्रयोग लउक सकेला. ऊहाँ के अपना आँखिन के देखी के मुहावरन से गढ़ि के प्रभावशाली रूप से सामने राखत बानी. कुछ उदाहरण देखीं –

खतरा बा लँघला पर आपन सिवान
कठवति के गंगा में कउआ नहान.

चाहे

अब तऽ पनियो में अगिया के
हलचल होखे लागल बा.

चाहे

मिले सेर के सवा सेर
औकात बुझाए लागल.

कवि जी अपना लेखनी के ताकत से गीत, ग़ज़ल आ कविता के आपन जरिया बना के अपना सर्जना के सथवे भोजपुरी संवेदना के नया दिशा देहले बानी, जवन हमेशा साहित्य-प्रेमी लोग खातिर अनुकरणीय रही. ऊँहा के 'आँखि लाग गइल' जइसन कवितन में सबके आँख भर देबे के कूबत बा. ओहके पढ़ते भाव के अइसन दरियाव बढ़िया जाला कि कवनो बान्ह टूट जाला. कविश्री के दोहा मीठ पाग में पगल सीख देत बाड़ी सों. ऊहाँ के सगरो दोहा में ठेठ भोजपुरिया, सुभाव आ बात-व्यवहार के पाग बा. एगो देखीं ना, –

झट से निरनय जनि लिहीं, घिन आवे भा खीस.
झुक जाए कब का पता, कट जाए कब सीस..

किताब के भूमिका पढ़त में कई बेर पता चलत कि कविश्री रामरक्षा मिश्र विमल जी खाली एगो कवि ना हईं, ऊँहा के रचनाकार के सथवे एगो सरस गायको हईं, एगो मजल कलाकारो हईं. ऊहाँ के ग़ज़ल के पढ़ के ऊपर वाला सगरो बातन के सत्यापन हो जात बा. कवि के ग़ज़ल के रदीफ आ काफिया बड़ो बा आ छोटो बा, बाकिर मतला, बहर, सबमें ऊहाँ के रचनाकार अनुभव साफ झलकत बा. पाठकगण ग़ज़ल एक, दू, आठ, दस, चउदह, सोलह, अनइस, बीस, एकइस, बाइस आदि के बड़का आ तीन,चार, छव, नौ आदि के छोटका रदीफ़-काफ़िया देख सकेला. कवि के ग़ज़ल के विषय-वस्तुओ देखे जोग बा. 'स्वाइन फ्लू' रदीफ़ पर एगो ग़ज़ल देखीं –

बंद भइल अब सब खिरिकी दरवाजा आइल स्वाइन फ्लू
बचिहऽ भइया आफति के आफति अफनाइल स्वाइन फ्लू

'फगुआ के पहरा' में विषय आ विधा के विविधता कवि के मौलिकता, प्रगतिशीलता आ रचनाशीलता के प्रमाण बा. एह किताब में 'जिनगी के रंग' विषयक हाइकुओ बाटे. हाइकु पढ़ला के बाद आजु के हाइकु-प्रकृति के धेयान आ गउवे. पिछलके साल हिंदी हाइकु के सौ साल मनावल गइल ह. ओहके आधार पर कहीं तऽ आजु-काल्ह हिंदी हाइकु-विधा के जवन विधि चलत बा, ओहमे दू गो धारा मिलेला. एगो धारा मानेला कि हाइकु में प्रकृति के चित्रण के साथे दू बिम्बन के प्रस्तुति होखे के चाहीं. एह हिसाब से खाली पाँच – सात – पाँच वर्ण के मिलन के हाइकु नइखे हो सकत. दू गो बिम्ब हाइकु खातिर अनिवार्य मानल जाला. वइसे कविश्री के हाइकु में कइगो बिम्ब बनल बाऽ

आ प्रकृति के लगहूँ बा. देखीं – जीयत चलीं, बहार पतझड़, लागले रही.

किताब के दूसरका संस्करण हमरा लगे बाऽ. दूसरका संस्करण के नाते एहमें श्रेष्ठ साहित्यकारन से ले के विद्वतजन लोग के टिप्पणियो पढ़े के मिलल बा. ओही में हम मनोकामना सिह 'अजय' जी के टिप्पणी पढ़नी. जवन 'ही' आ 'भी' के सथवे अंग्रेजी शब्दन के प्रयोग पर बा. भोजपुरी में ढेर लोग 'ही', 'भी' के प्रयोग करेला. हमरो विचार से 'ही', 'भी' के प्रयोग भोजपुरी में स्वीकार्य ना होखे के चाहीं. जहाँ अउरी भाषा के शब्दन के प्रयोग बा, भोजपुरी के ओहसे समृद्धि होई. कतहूँ से हानि नइखे. कवि के प्रयोग कइल कुछ हिंदी-अंग्रेजी-उर्दू के शब्दन के देखीं – दहशतगर्दी, टीवी, फोन, साउथ, कल्चर, सर पे, रिलैक्स, एहसास, कापी, पेन, प्रॉमिस, सॉरी, स्विच ऑफ, स्वाइन फ्लू, सीबीआई, बेइमान, इंफेक्शन आदि. 'अनुभव' शीर्षक एकर पूरा उदाहरण बा. एगो अनुभव रउरो देखीं. बिम्ब, शब्द आ कहे के ढंग देखीं –

अनुभव, सर दर्द के दवाई, आयोडेक्स, अनुभव, विकास के पर्याय, फ्री सेक्स

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी एगो प्रयोगधर्मी कवि बानी. ऊहाँ के कवितन में विविधता बा, विचार में विविधता बा, जिनगी के हर कोना के अनुभव में विविधता बा आ आदर्शो प्रस्तुति के माध्यम में विविधता बा. किताब पढ़त घरी कई बेर हमके कुछ शब्दन के लिखावट में विविधता लउकल. जइसे 'अंगना' चाहे 'अँगना' खातिर 'अङना' के प्रयोग हमरा कुछ खटकल. भोजपुरी में हमार अनुभवहीनता आ अल्पज्ञता हो सकेला. पहिले कबो ना पढ़ले रहनी हँऽ. एतने ना, सङे, बङला, अङुरी, अमिरित, बिशवास, भूँकल आदि हमके ओही तरह के शब्द लागत बा. किताब में 'ङ' के प्रयोग ढेर मिली. एगो उदाहरण –

सखियन का सङे जाके गंगा नहाइल
सङे- सङे नून मरिचा साग खोंटि खाइल
नइहर के सुख सब गइले छिनाई
अँखिया लोर बरिसाई .....

'फगुआ के पहरा' निश्चित रूप से भोजपुरी के कइगो मरत शब्दनो के जियतार करे वाला किताब बा. कुछ तऽ अइसन शब्दन के प्रयोग भइल बा, जवन भोजपुरी भाषा के धरोहर बा. ओह शब्दन के सहारे कवनो पंच पर भोजपुरी के पक्ष में सभ्यता, संस्कृति आ साहित्य पर बृहद् चर्चा हो सकेला. बाँव, छवरी, पेन्हि, गर्हुआइल, घरफोरवा, सुसुकत, चुहानी, पखाउज आदि ढेर अइसन शब्द आ भाव बा जवना कारने ई किताब पठनीय, लोकप्रिय आ संग्रहणीय बा. पाठक लोग के एह किताब के एक-एक अक्षर पढ़े के चाहीं. ई किताब खाली काव्य के किताब नइखे रहि गइल, विद्वान लोग के विचार के किताब हो गइल बा. किताब के पहिलके फ्लेप पर प्रेमशंकर द्विवेदी जी के लिखल एकहक गो शब्द रचनाकार आ किताब, दूनो के जोरदार भूमिका प्रस्तुत करत बा. पहिलका फ्लेप से ले के पिछला कवर ले सगरो विचार एगो पाठक आ भोजपुरी साहित्यानुरागी खातिर थाती बा. ई थाती कविश्री विमल जी के लेखनी के कारने बा, ऊहाँ के लेखनी के बहाने बा, एहू खातिर भोजपुरी ऊहाँ के ऋणी रही, आ'फगुआ के पहरा' के बहाने अपना सरस साहित्य के रसास्वादन कराहूँ खातिर ऋणी रही. एही शब्दन के साथे कवि के लेखनी के कोटि-कोटि नमन आ सादर प्रणाम.

किताब : फगुआ के पहरा (भोजपुरी काव्य संग्रह)
कवि : रामरक्षा मिश्र विमल
प्रकाशक: वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट, बोकारो
मूल्य : 150/ (अजिल्द), 250/ (सजिल्द)

✍ केशव मोहन पाण्डेय

शीतलहरी

मुफलर स्वीटर शाल लाद के
टुकुर टुकुर सब ताकेला।
हाथ गोड़ कांपे ला गन गन
दांत कटा कट बाजेला।।

लइकन कऽ बा चाँदी भइया
कोरोना कऽ साथ मिलल,
भइल बन्द स्कूल मगन सब
छुट्टी पवते बांछ खिलल।
मन मसोस आवें अध्यापक
केहू न दुखवा बाँटेला...

ओढ़ रजाई मोबाइल से
करें जवनका चैटिंग खूब,
कोहरा डेटिंग पर बा छाइल
बइठ घरे में गइलन ऊब।
सेटिंग कतहुँ बिगड़ न जाये
सोच करेजा फाटेला...

बुढ़वन कऽ बा अलगे चिंता
कहीं टिकट काटें न ईश,
चवनप्राश कऽ खपत बढ़ल
सोंठ जवाइन फाँके पीस।
बोरसी के आगी से बचिहें
जान सबे समझावेला...

चूड़ा मटर गाजर कऽ हलुवा
नीक लगे शीतलहरी में,
रजत भइल हड़ताल घाम कऽ
सूर्यदेव के नगरी में।
कम्बल नेताजी ले घूमें
टीवी अखबार बतावेला...

✍अवधेश रजत
वाराणसी

बबुआ त्याग देहले घरवा

जवना करनवा बबुआ त्याग दिहले घरवा,
ऊ बहरवा गइले ना,
छोडी घरवा दुअरवा हो,
बहरवा गइले ना।

सोचले कि जाइब दुगो रुपिया कमायब
बबुआ लो'के नीमन स्कूल में पढाएब
देख भाल करी लो' बनाई सुनर घरवा
ऊ बहरवा गइले ना, छोडी घरवा दूअरवा
हो बहारवा गइले ना।

माई के दुलरुआ अउरी बाबूजी के धन हो
केतनो पढ़वनी तबो बदलल उनकर मन हो
सुख के समइया आइल कइले बिलगवा
ऊ बहारवा गइले ना, छोडी घरवा दूअरवा
हो बहारवा गइले ना।

माई के चरनिया में मिले सुख संचय
बुझि नाही पवले गणेश अउरी संजय
खइला बिना त्याग दिहली माई हो परनवा
ऊ बहारवा गइले ना छोडी घरवा दूअरवा
हो बहारवा गइले ना।

जवना करनवा बबुआ त्याग देहले घरवा
कि बहारवा गइले ना छोडी घरवा दूअरवा
हो बहारवा गइले ना

✍गणेश नाथ तिवारी"विनायक
श्रीकरपुर, सिवान

नवकी कलम

पाँव पसार के बइठल कोरोना

पांव पसार के बईठल कोरोना!
एकरा से लड़े के तरीका बदलो ना-

मुँह पे मस्कवा लगाल अनिवार्य ऐ भाई
अपने त बचीं सबके बचाईं
इहे संदेश बा हमार भाई।

समय बा कम बा चपेट पूरी दुनियाँ
सटल त गइल भाई-बहिन मुन्ना-मुनिया
हटी सावधानी दुर्घटना हो जाई
घर परिवार टोला शहर बचाईं
जिनगी दूइ चार दिन के बा उड़ान ऐ भाई।

केहू ना काम आई घर घरवाली
चाय पानी काढ़ा गरम यूज करीं हाली-हाली-
डाक्टर पुलिस के सहयोग करीं भाई
हाथ जोड़ि हमरो निहोरा बा भाई
रसरी के फसरी बेवजह ना बनाईं।

✍**कृष्णा बक्सरी**

कोरोना काल

अबकी नवका साल में, कइसे मची धमाल।
खतम भइल ना अब तलक, चलत करोना काल।।

दूरी राखल लाजिमी, जनहित के संवाद।
दीपक गफलत जे पड़े, पड़ी कठिन अवसाद।।
जान लिहीं सबका बहुत , एकर रही मलाल।
खतम भइल ना अब तलक, चलत करोना काल।।

छूट मिलल भलहीं तनी, होखल सुस्त न नीक।
ना केहू कहिहें बुरा, जीवन चलिहें लीक।
विश्व त्रस्त ए से सभन,भइले ख़स्ता हाल।
खतम भइल ना अब तलक, चलत करोना काल।।

मुँहझोंपा लवले चलल, अभी जरूरी बात।
बफिक्री में ना नेवँत, सामत सै-सै घात।।
बतिया इहई साँच बा, सुनऽ देश के लाल।
खतम भइल ना अब तलक, चलत करोना काल।।

फिर आई नवका बरिस, बतिया लऽ तू मान।
असों नाहिं मनबऽ जदी, हो जइब परिशान।
मन पर अँकुसा लाइ लऽ,असो रही हड़ताल।
खतम भइल ना अब तलक, चलत करोना काल।।

✍**दीपक तिवारी**
श्रीकरपुर,सिवान।

रोटी

का का ना जिनगी मे करा देला रोटी।
घर बार देशवा छोड़ा देला रोटी।।
पेट खातिर गाँव घर लोग छुटी जाला...
घर बार छोड़ी लोगवा, परदेशवा पराला.... 2

हजारों कोस पैदल चलवा देला रोटी।
घर बार..... छोड़ा देला रोटी।।
जेठ के दुपहरिया माघ के, जाड़ा ना बुझाला ....
लगेला भूख त निमन बाऊर् ना सुहाला...2
का का ना जिनगी में करा देला रोटी ।
घर बार..... रोटी।।

एकर त मोल आजुले केहुओ ना जानल
गिल भइल उनहु से आटा जे रोज रहे सानल 2
रोज बनावे वाला भी जरा देला रोटी।
घर बार..... रोटी।।
दोसर बा आपन, आपन बा पराया
वाह वाह रे रोटी कइसन तोहार माया 2
का ह नीमन बाउर् सुनील, बता देला रोटी।
घर बार..... रोटी।।

✍सुनील कुमार दुबे
(डेमूसा दुबौली)
घाँटी बाजार
भटनी देवरिया

रउवा ना आईनी

आँख में काजर माथ पर बिंदी
हाथ में मेहदी लगा के,
दरवाजा पर आठो पहर बितइनी
बाकिर रउवा ना अइनी।

जाने कौना भूल खातिर हमके भूल गइनी
ना जाने कवना कसुरवा के दिहनी सजा
ना जाने केतना बरिस बीत गइल
अँखिया बिछइनी बाकिर रउवा ना अइनीं।

आज कवनो संदेश कागा सुनाइत
रो-रो के दिल हमार देत बा दुहाई
परदेशी प्रीतम के कइसे भुलाई
केतना चिठ्ठी पाती पेठैनीं
बाकिर रउवा ना अइनीं।

दिल्ली के दर्द दिल में गइल बा समाई
का कवनो सौतिन के चकर में बानी हमके भुलाई
सब्र के बांध अब गइल बा ओराई
अर्पित के साथे सुरु भइल बा खोजाई।

मन में सक बा दूर कैसे होई चलत नइखे उकित उपाई
बिरहन के भेष ई आधी जीवन बिता अइनी
बाकिर आउवा ना अइनीं।

आ जाई ना ता बहुत देर हो जाई डिअर
महुवा के बदले भले पियब रउवा बियर
तन से प्राण अब छूट जाई बात बा क्लियर
रखेब बनाके साया जइसे तावीज़ नियर
दर्द जुल्म के सितम बहुत ढइनी
बाकिर रउवा ना अइनीं।

अन्तिम साँस गिनत बानी यादो के सहारे
फूलो भरल सेज बा कवनो काँटा ना चुभ जाव
प्रीतम बिना जिया कवन बहलावे
कवन अन्धियारा मन के दीपक जलावे
अहि चिंता फकीर में डूबत गइनी
बाकिर रउवा ना अइनीं ।।।

✍अभियंता सौरभ भोजपुरिया

धके कवनो गली आ जईत

धके कवनो गली आ जइतऽ
बान्हि के हाथे प्रेम के धागा ।
कवना ओरि उड़ गइलऽ ए कागा?
आके हमें बता जइतऽ
धके कवनो गली घरे आ जइतऽ ।

उहईं कोठरी में मोटरी बान्ह के,
रखनी सजोके तोहार याद के ।
उहईं हँसत आपन तस्वीर जस,
फेरु से मुस्कुरा जइतऽ,
धके कवनो गली घरे आ जइतऽ ।

व्याकुल मन नैना नींद नाहीं,
निरस जिनगी कवनो रसगीत नाहीं।
कुहुक कोयल जस मन वन में,
कवनो राग सुना जइतऽ,
धके कवनो गली घरे आ जइतऽ ।

हर बाट प बइठ बटोही तुहरे बाट जोहीले।
भोर से जब मुन्हार हो जाला तब दरख़्त धइके रोइले।।
भइल बिरह बियोग के रोग के "राजू"
बनी बैद औषधी ल जइतऽ ।
धके कवनो गली घरे आ जइतऽ।

✍राजू साहनी
ग्रा०/पो:- मदनपूर
जिला:-देवरिया(उ०प्र०)

देश के भविष्य बाल मजदूरी में डूबल

काँधे पर रहल परिवार के बोझ
ऊ लइका के कमर न होत रहे सोझ
स्कूल छोड़ ऊ कमाए जात रहल
तब कहीं जा के परिवार के पेट भर पावत रहल

ले कर छैनी हथौड़ा हाथ मे ऊ चलावत रहल
छैनी हथौड़ा चला के हाथ से खून आ जात रहल
तब जा के छोट भाई बहिन के
सपना पूरा कर पावत रहल

सख्त पड़ गइल रहे छोट-छोट हथेली हथोड़े के मार से
जल जात रहल उ लइका मजबूरी के अंगार से
पेट भरे के जगह उ खाली पेट सुतत रहल
पी के आँसू ऊ आपन परिवार सींचत रहल

जेकरा बचपन मजबूरी में बीतल ऊ कहानी का सुना पाई
ओकरा त मुँह देख कुल मज़बूरी बुझा जाई
जेकरा वर्तमान बा अंधकार में
ऊ कइसे भविष्य सवार पाई

जे मोहताज बा पेट भरे में
ऊ कइसे स्कूल जाई
उनका खातिर न कोनों खेल के मैदान
न ही मिलल खाये के अच्छा-अच्छा पकवान
सड़क पर बीतऽता बचपन
न बा कवनों मकान
बनल बा बाल श्रम पर कानून तमाम

ई बाल श्रम प्रथा कलंक बा समाज के माथे पे
फिर भी नाहीं रुकऽता ई देख के बचपन जनाजे पे
ई प्रथा अब हमनी के रोकेके बा

✍नेहा त्रिपाठी
नंद नगरी दिल्ली-110093

सोमरिया

आज रामपुर गाँव में बड़ी चहल पहल बा काहे कि गाँव के अलियार चाचा के सबसे छोटकी लइकी के बियाह बा।

पूरा परिवार बहुते खुश बा। अलियार चाचा अपना औकात से बढ़के बियाह के इंतजाम कइले बाड़न। बेचारा गरीब आदमी दु बिगहा जमीन के मालिक जइसे-तइसे कइके चार बेटी के बियाह कर देले रहलन। अब बाँचल बिया खाली सोमरिया, आखिरी हिय। एगो लइको बा दुलाल लेकिन अबही ऊ अबोध बालक बा ।

फसल से त घर परिवार के बेकत के लूगा फाटा आ भोजन चल जाव उहे ढेर बा। बची कहाँ से? मजबूर होके एक बिगहा बेच के सोमरिया के बियाह ठीक भइल बा।

"सोमरिया, ए सोमरिया, कहाँ बाड़े रे, देख चूड़ीहारिन आइल बाड़ी, चूड़ी पसंद क ले"। अलियार बो चाची बोलत दलान मे घुसली।

सोमरिया अपना कमरा में बइठल रहे। ओइसे त बेकती-बेकती खातिर अलगा कमरा नइखे, अंगना तनी बड़ होखला के चलते कोना में ढूगो माटी के देवाल पर खपड़ा से छावल कमरा बा आ ऊ चारु ओरि से माटी के चारदीवारी से घेरल बा ।

सोमरिया शुरूए से अपना माई, बाबू के काम में हाँथ बँटावत रहे, खेतिओ के काम में। स्कूल से अइला के बाद ऊ चैन से ना बइठे। जवन सोझा काम लउके ओ के फौरन क देवे। आलियार चाचा जब साँझी के थाक के घरे लौटस त पानी लेके खाड़ रहे बिना मीठा पानी दिहले ऊ सोझा से हटे ना। बाबू के गोड़ दबावल ओकर रोज के काम में सामिल रहे।

हाड़ कपावत ठंढी में पुरान फाटल एगो चदरा ओढ़ के जाड़ काटत देखे अपना माई के पाई-पाई जोर के पेट काट के पइसा बचा के दुललवा के स्वेटर बुन देले ।

बाबू पसीना- पसीना हो जालन जब पैदल शहर से माथ पर खेत के दवा, खाद लेके आवेलन। देखते सोमरिया के दिल रो पड़ेला। आपन गरीबी प रोआई बरे।

"ए बाबू पुरान धुरान एगो साइकिल काहे नइखऽ किन लेत।" हमेशा से सोमरिया के एकही सवाल रहे।

लेकिन चाचा कहेलन- "अरे सोमरिया, जवना बाप के माथ पर जवान बेटी के भार बा, ऊ पहिले दहेज के चिंता करी कि आपन सुख सुविधा देखी। जतना मे साइकिल खरीदब ओतना में बिआह खातिर एगो चीज़ बन जाई।" सोमारिया कसमसा के रह ना जाय त का करे, बतियो साँच बा ।

विधि के लेख भी बड़ा विचित्र ह। एक बेर गाँव में कलेक्टर साहब अइलन, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान के प्रचार प्रसार खातिर। "चित्र बनाओ प्रतियोगिता" के आयोजन कइल गइल सरकार द्वारा। लइकन के प्रोत्साहित करे खातिर। सब लइका - लड़की में बड़ी उत्साह रहे एह प्रतियोगिता खातिर। एह प्रतियोगिता के पहला इनाम रहे "साइकिल"। सोमरियो भाग लेले बिया गाँव के कुल लइका-लइकी के साथे। काहें कि पेंसिल, रंग कुल्हिये सरकार के तरफ से दिहल गइल बा, एही से प्रतियोगिता में सामिल होखे में कवनो अड़चन ना रहे। कवनो लइकी सुंदर मोर, त केहू सुंदर दृश्य बनवली स। सोमरिया बनवलस अपना गाँव के मंदिर अउरी ओकरा से सटल फेड रुख पोखरा ।

प्रतियोगिता खत्म भइल, अब इंतज़ार रहे इनाम के। गाँव के सभ लोग टकटकी बान्हि के देखत बा कि के जीती ई प्रतियोगिता। प्रतियोगिता में सामिल कुल लइका-लइकी के साँस त खूब तेज चलत रहे। एह प्रतियोगिता में गाँव के जुगनियों बिया जे बड़ा बढ़िया चित्र बनावेले।

सबके पूरा भरोसा रहे की जुगनिए जीती पहिला इनाम। ओकरा के शादी बियाह में चित्रकारी खातिर गाँव के छोड़ दीं

आन गाँवो के लोग बोलावे आवेला। ओकरा नियन नीक गुनी अस गाँव पस गाँव में केहू नइखे।

इनाम के घोषणा भइल अउरी पहिला इनाम मिलल सोमरिया के। ओकरा साइकिल मिल गइल ।

सोमरिया के खुशी के का कहे के बरम बाबा डीह बा काली माई सबके सुमिर के ख़ुशी के मारे रोवे लागल अउरी सोचे लागल कि बाबू खातिर एकरा से बढ़िया उपहार ना हो सके। बाबू हमार गरमी में चार - चार कोस दूर पैदल चल के दवा - खाद ले आवेलन । दुललवा के कान्हा पर बइठा के पैदले बगल के गाँव में लागल मेला दिखावे ले जा लन ।

अब हमार बाबू के पैदल ना जाए के परी। इहे कुल सोचते ऊ साइकिल लेकर घरे चहुँप गइल।

दुललवा खुशी से उछल गइल, आ ऊ बाबू से घुमावे खातिर ज़िद करे लागल। " चल ना बाबू हमरा के टुनवा के घर से घुमा लिआवऽ । ओकरा के ई साइकिल देखाइब, कहब हमार दीदिया जीतले बिया " ।

बाबू कहलन "ना रे दुललवा साइकिल हमनी के सोमरिया के बिआह मे दिहल जाई । एकरा के के केहू ना छुई, ना त पुरान हो जाई ।" बाबूक के बात सुन के सोमरिय क़े मन उदास हो गइल । ऊ तिलमिला के रह गइल आउ कहे लागल- " ई तोहरा खातिर ह बाबू" । लेकिन चाचा एक न सुन ले।

साइकिल सुरक्षित दलान के कोना में ढाँक-ढूँक के रखा गइल।

अलीयार चाचा के दिनचर्या उहे रहल लेकिन सोमरिया क़े टीस अभी भी उहे रहे कि कइसहुँ बाबू साइकिल खातिर मान जइतन।

आज सोमरिया के बारात आवे वाला बा। सोमरिया खुश भी बिया आउ उदास भी कि ई अंगना , गाँव, माई - बाबू , दुलाल , सब सखी सहेली छुट जाई ।बाबू के ख़्याल के रखी ।

दुआरे बारात आ गइल बा । गाँव के कुल मेहरारू मिलके दुवार छेकाई गीत जोर- जोर से गावे लगली-

"सुंदर वर हो तुम्हे जाने न दुगी |
नवल वर हो तुम्हे जाने न दुगी ||
अम्मा तुम्हारी शहर की औरत ||
देखेगा हो सब शहर के बनवारी।"

गाँव में दूल्हा देखें खातिर अइसन भीड़ लागे ला जइसे जलेबी प माछी। रात भर बियाह के रीति- रिवाज चलल। पूरा बाराती मे चर्चा बा की गुड्डुआ के बिआह मे साइकिल मिलता ।

पंडित जी सात फेरा के मंत्र पढ़ तानी आऊ दूसरा तरफ अलीयार-चाची सोमरिया के विदाई के तैयारी में बाझल बाड़ी। बहुत व्यस्त बाड़ी की कइसे सब सामान जाई। अबहीं सास के बक्सा सजावे क़े बा, पवनी पजहर के साड़ी , ननद के अँगूठी , ननदोई के कपड़ा, मिठाई, खाजा, झापी । बाप रे बाप, कइसे सब होई?

रसम पूरा भइल विदाई खातिर दूल्हा आउ बाराती डोली लेके तइयार बा । चाचा-चाची सब बक्सा, मिठाई, झापी ट्रैक्टर मे रखवा देले बा लोग। तबे सोमरिया के चचेरा भाई आके चाचा के कान में कुछ कहलस कि सुनते ही चाचा के होश उड़ गइल। सोचले अब हम का कहब लइका वालन से?

भइल ई कि "साइकिल" दलान से गायब रहे। चाचा के घबराहट देख के चाची पूछे लगली कि का भइल। चाचा कहले- " सोमरिया के माई ,साइकिल दालान से गायब बा। अब हम का मुँह दिखाइब लइका वालन के, क़ा कहब ? " लागल उनका के गस्ती मार दी ।

बहरी पूरा गाँव अउरी बाराती इंतजार कर रहल बा कि विदाई के समय निकलता। शाम से पहिले लइका वाला के गाँव पहुँचे के बा।

ऐने घर के अंदर लाग ता कि कवनो बहुत बड़ अपशगुन हो गईल बा । "कुछ त कहहि के परी। बाहर पूरा जवार जुमल बा । सब लोग इंतजार करता। " -चाची कहली ।

दलान के दरवाजा खुलल आउ अलियार चाचा सीधे आपन पगड़ी गुड्डु के गोड़ प रख दिहलन, आ कहलन- " रउआ जवन सजा देबे के बा दि लेकिन पाहुन साइकिल त चोरी हो गइल। सब जगह खोज लिहनी जा कहीं ना मिलल, अब रउआ जवन सजा देब मंजूर बा समधी जी।"

गुड्डु के बाप गुस्सा से तमतमा गइलन आउ कहे लगलन कि "अइसे-कइसे साइकिल गायब हो गइल? जरूर एमा कवनो साजिस बा।"

एतने मे गुड्डु चाचा के पगड़ी उठा के उनका हाथ में दे के कहे लगलन क़ि "एकरा मे राउर कवन गलती बा। रवुआ हमरा के आपन अनमोल थाती बेटी के हाँथ दे दिहनी सोमारि साथ रहिये त साइकिल अइसन केतने सामान जीवन में हमनीके खरीद लिहल जाई। हमनी के खुशी खुशी विदा करी।"

ओहिजे सोमरियो घुंघट में खाड़ रहे। भीड़ में गुड्डु धीरे से सोमरिया के हाथ दबा दिहलन। सोमरिया के आँख में आस अउरी सम्मान दुनो भर गइल।

सोमरिया के विदा होतहीं घर के जेतना हित नात, साथी, दोस्त रहन ,धीरे धीरे सब जाए लगलन । जे द्वर गाँव के रहल जहाँ तहाँ खटिया प, केहू पुअरा प जेके जहाँ जगह मिलल थाक के सूत गइल।

असहूँ बेटी के विदाई के बाद घर में अइसन सन्नाटा पसरे ला जइसे कवनो राजा के सैनिक किला जितला के बाद थाक के सूत जालन।

अलियार चाची लाग गइली आपन सामान ठीक करें में । कहीं बर्तन बा कहीं चादर फइलल बा त ओने लइका वालन किहाँ से झापी आइल बा , लगली सबके बयना तइयार करे। दुललवा भी रो धो के एगो खटिया पर सुतल रहे।

अलियार चाचा के मन ना लागल ना आँख में नींद रहे घर काटे के धउरत रहे, एगो अजीब बिरानी छवले रहे, खेत प चल दिहलन कुछ काम में मन लाग जाई ।

चाचा खेत में पहुँच के पुअरा के टाल ठीक करे लगलन। जइसे तिसरा पुअरा के टाल उठवलन ऊ भौचक्का रह गइलन। ई का सोमरिया के साईकिल एहिजा बा ?" । जल्दी से साइकिल निकललन त देखलन कि ओकरा में एगो चिट्ठी राखल बा । खोल के पढ़लन त भोकार पार के रोए लगलन।

चिट्ठी में लिखल रहे-

"बाबू ई साइकिल खाली तोहरा खातिर ह। अब दुललवा के कान्हा प लेके पैदल मत चलिह। गर्मी के चिल चिलाहट धूप में खेत प साइकिल से जइहऽ तोहके हमार कसम।"

तोहार,

सोमरिया

अलियार चाचा साइकिल के अइसे दुलारे लगलन जइसे सामने सोमरिये खाड़ होखे ।

✍बंदना श्रीवास्तव

पुणे, महाराष्ट्र

समय के फेर

"हेलो! बाबुआ। बबलू?"
"हँ माई प्रणाम! का कुल समाचार बा। ठीक बाड़े नू?"
"हँ ए बाबू, हमनी के तऽ ठीके बानींजा। आपन सुनावऽ।"
"हमनियों के पूरा परिवार ठीक बानींजा।"
"घरे कब ले अइबऽ? देखऽ ना तहरी बाबूजी के बोखार त आज एक महिना से छोड़ते नइखे। झोलाछाप से देखा के हार गइनीं। आ बड़हन अस्पताल में के ले के जाऊ? हमरो से अब चलल ना जाता। कवनोंगा द्वगो रोटी सेंक के पेट भरतानीं। कबो टाइम निकाल के अपने बाबुजी के देखा देतऽ।"
" रे माई, का बताईं छुट्टी तऽ मिलत नइखे, ना त हम आ जइतीं। अच्छा सुन हम पइसा भेज देले बानी केहूँ से कहि के बाबूजी के देखवा लिहे। अच्छा प्रणाम! फोन रखऽतानी।"
एतना कही के बबलुआ फोन काट दिहलस।
तबले बबलू ब के रोवला के आवाज आइल, बबलुआ लपक के पहूँचल
" का भइल? का भइल?"
लोर पोंछत बबलू ब बोललीं-" देखीं ना बाबुजी के खाँसी ठीके ना होता चार दिन से परेशान बाड़न। आज चलीं देख आवल जाव।"
बबलू एतना बात सुनते आफिस में फोन लगवलन- "हेलो, हम बबलू बोलत बानी, आजु हम काम पर ना आइब, हमरे मलिकाइन के बाबूजी बीमार बानीं। छुट्टी लगा देब।"

✍सन्तोष कुमार विश्वकर्मा "सूर्य"
तुर्कपट्टी, देवरिया, (उ.प्र.)

भोजपुरी साहित्यिक आ सांस्कृतिक महोत्स्व-३ के यादगार पल

राउर बात

✍'सिरिजन' के दसवां अंक अपना रचनन के गुणवत्ता के नजरिए से बेजोड़ भइल बा। अंतरराष्ट्रीय शायर आ भोजपुरी भाषी सुनील कुमार तंग जी के भी ग़ज़ल भी आइल बा आ आगे भी आई उम्मीद बा ।अब हमनींके दावा से कहि सकतानी जां कि भोजपुरी के एगो स्तरीय आ मानक पत्रिका के रूप में आपन 'सिरिजन' भोजपुरिया समाज में आदर आ सम्मान पावेके हकदार हो गइल बा।जय भोजपुरी जय भोजपुरिया। - संजय मिश्र "संजय", गोपालगंज, बिहार

✍सिरिजन के सबसे बड़ उपलब्धि बा समय पर एकर प्रकाशन, परिस्थिति कइसनो होखे नियत समय से पाठक के सामने आ जाना अउर दिनों दिन निखरल रूप में प्रस्तुति सराहनीय बा। भोजपुरी साहित्य के गरिमा के स्थापित करे के प्रयास खातिर सिरिजन परिवार के साधुवाद। - कनक किशोर, रांची झारखण्ड

✍सुन्दर सम्यक साहित्यिक मुल्यांकन योग रचनन के संगे 'सिरिजन' एगो प्रभावी पत्रिका के रूप में एह विशेष अंक के प्रकाशन पर बधाई आ शुभकामना - सुनील कुमार तंग,गोपालगंज, बिहार

✍भोजपुरी तिमाही ई- पत्रिका "सिरिज़न" के दसवां अंक के प्रकाशन पर पूरा संपादकीय टीम सहित समस्त कवि , लेखक , रचनाकार आ पाठक सब के हार्दिक बधाई बा , ई अंक निश्चित रूप से उत्कृष्ट पठनीय सामग्री से सुसज्जित बा ••• जय भोजपुरी जय भोजपुरिया- सुरेश कुमार, मुंबई,महाराष्ट्र

✍सिरिजन तिमाही ई पत्रिका के दसवां अंक पढी के बहुत खुशी भइल । इ अंक हर तरह की रचना से भरल पुरल बा आ बहुत ही सुन्दर साफ सुथरा छपल बा जवना के जेतना सराहना कईल जा कमे कहाई ।पत्रिका के संपादकीय मंडल के सुझ-बुझ, मेहनत आ लगन के सादर नमन बा कि पत्रिका के शानदार ,जानदार बना के बहुत ही बढ़िया काम कइले बा,जवना खातिर संपादकीय मंडल बहुत-बहुत आभार आ धन्यवाद। बाबूराम भगत, बिहार

✍बहुत सुंदर सही सम्यक मूल्यांकन युक्त सिरिजन तिमाही ई पत्रिका के दसवां अंक बनल ब। वाह! बधाई हो । डॉ जौहर शाफियाबादी

✍सिरिजन तिमाही ई पत्रिका के दसवां अंक पढी के मनवाँ बिभोर हो गइल ।एतना सुन्नर आ साफ सुथरा माईभाखा में साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन खातिर सिरिजन के प्रकाशक आ प्रशासक मंडल के हार्दिक धन्यवाद आ बधाई|- अखिलेश्वर मिश्रा, बेतिया, बिहार

✍सिरिजन के दसवां अंक बहुत ही सुन्दर आवरण चित्र का साथे प्रस्तुत भइल बा। दिनों दिन उचाई प्राप्त करत अपना सबब पर बा।सभें आदरणीय सहयोगी लेखक गण आ सिरिजन के संपादकीय समूह के हृदय से बधाई आ शुभकामना संप्रेषित बा। - ब्रिज मोहन उपाध्याय, छपरा, बिहार

✍सृजन के खूबसूरत बेहतरीन दसवां अंक के हार्दिक बधाई आ अनघा शुभकामना बा। पत्रिका के संपादन से लेके प्रकाशन तक समूचा टीम के योगदान सराहनीय बा उम्मीद ना पूरा विश्वास बा कि हमार सिरजन परिवार असही सफलता के परचम लहरावत रही।आ माई भाषा के खातिर नया सफलता के आयाम गढत रही।फेर फेर अनघा शुभकामना बा। -आशा सिंह, बिहार

✍सिरिजन के दसवां अंक एगो संघतिया के मार्फत पढ़े के मिलल। अपना गांव जवार के बोली में कविता कहानी नाटक हर बिधा के रचना पढ़ी के मन बहुते खुश भइल। एह जमाना में जब कुछउ बिना स्वार्थ के नइखे होत। ओह कटाह समय में पूरा सिरिजन टीम बिना कवन स्वार्थ के अपना माई भाखा के प्रचार प्रसार में लागल बा। रवुरा सब के काम के नमन बा। कुल्हिये अंक डाउनलोड क के पढ़नी । दस अंक देखि के अपना मन के बात लिखे से ना रोक पवनी ह। पूरा जरोह के दिल से धन्यवाद बा। आशा बा सिरिजन के सफर आगहुं जारी रही। - बिकाश त्रिपाठी, जैसलमेर, राजस्थान

✍आवरण से ले के रचना कुल्हिये बहुते मनभावन बा। सिरिजन दिन पर दिन निखरत जाता। हर बिधा के रचना से सजल बा दसवां अंक। हर अंक के बेसब्री से इंतज़ार रहेला। बहुत बहुत बधाई पुर सम्पादक मंडल के। अरुन प्रकाश राजभर, बेटाबर, गाज़ीपुर, उत्तरप्रदेश

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

आपन माटी-आपन थाती

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह “सिरिजन” । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं “सिरिजन” के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

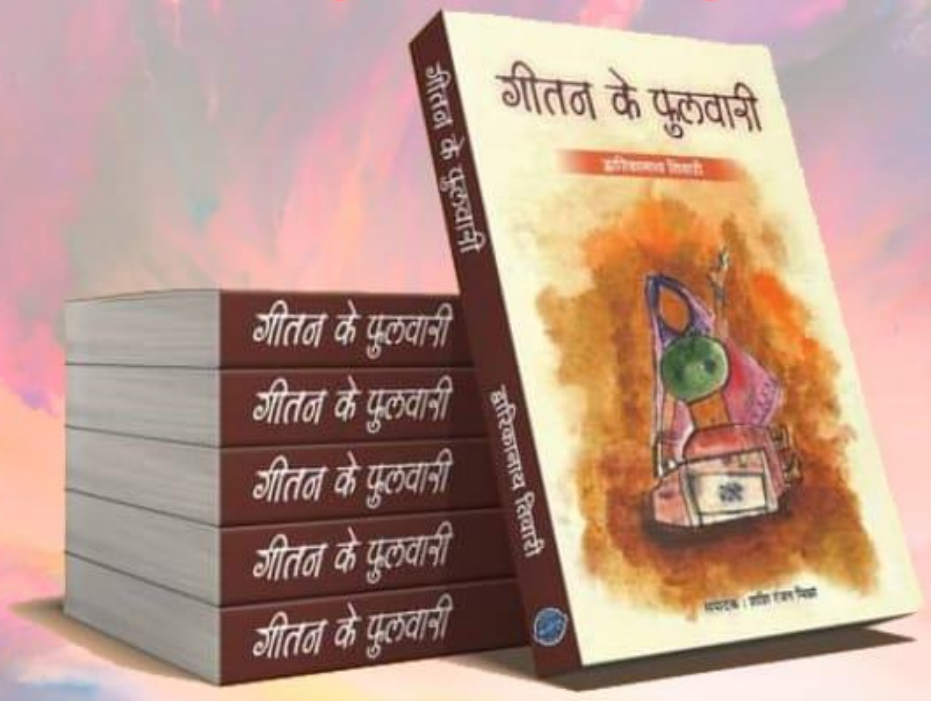

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार,संरक्षण
आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के तारामंडल के महत्वपूर्ण तारा
श्री द्वारिकानाथ तिवारी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के
उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :

सर्व भाषा ट्रस्ट

मोबाइल नं.- +91-8178695606